

Mythologia Æsopica.

In quâ continentur

ÆSOPI FABULÆ

Græco-Latinæ

CC XC VIII.

Secundùm Editionem Gabrielis
Bracii omnium antiquissimam.

Cum variis Lectionibus.

In usum Scholæ Etonensis.

L O N D I N I,

Typis J. H. impensis verò J. Slatter Bib-
liopolæ Etonensis; & prostant venales
apud T. Newborough ad Insigne Pilæ de-
auratæ in Cœmetrio D. Pauli, 1697.

Alphacodops nigrolineatus

University of

JUL 19 1963

01360 I-03872

CC XCANT

[Faint, illegible handwritten or stamped text]

1944

Com. v. 11. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844.

in einem Schilde dargestellt.

10-10-10

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
LIBRARY
540 EAST 57TH STREET
CHICAGO, ILL. 60637
TEL. 733-4331

LECTORI.

AD hanc Editionem concinnandam
duos vetustissimos codices nactus
sum, alterum à Gabriele Bra-
cio editum, anno M. IID. XIV.
Cal. Junias, alterum Frobenianum Basileæ
M. D. XXI. Quorum ope posteriorum
editionum errores, eosque negligentiae non
ignoscendæ plurimos sustulimus. Scio
quidè̃m hasce fabulas utcunque suo nitori
redditas, mediocriter se habere, quales-
cunque tamen sint, doluit adhuc peiores
reddi. Varias Lectiones, quæ verita-
tem præ se ferebant certissimam, textui
inferendas duxi, & insertas suo quam-
quo

LECTORI.

*que loco habes : easdem tamen ad finem
libri adjicere consultius visum est, ne quis
audaciam crimineretur nostram, fidem de-
sideraret. Versionem Latinam prorsus
intactam reliqui, neque enim nostrum erat
novam procurare, & veterem emendatam
dare ne in votis quidem erat.*

ΑΙΣΩΛ

Α Ι Σ Ω Π Ο Υ

Μ Υ Θ Ο Ι.

I. Ἀετὸς καὶ Ἀλώπηξ.

Ἀετὸς καὶ Ἀλώπηξ φιλιωθέντες, πλησίον ἀλλήλων οἰκῆν ἔγνωσαν, βεβαίωσιν φιλίας ποιέμενοι τῷ συνήθειαν· ὁ μὲν ἔν ἐφ' ὑψηλῆς δένδρεσσι τῷ χαλιᾷ ἐκίχθη· ἡ δ' Ἀλώπηξ ἐν τοῖς ἔσχατοις θάμνοις ἐτεκνοποίησατο· ὅπῃ νομῶν ἔν ποτε τ' Ἀλώπηκος περιθέσης, ὁ Ἀετὶς τροφῆς ἀπορῶν, καλαπῆας ὅπῃ τ' ἑλθόντων, καὶ τὰ τέκνα ταύτης ἀναρπάσας, ἅμα τοῖς αὐτῆς νεοτῆσι ἐδοιμήσατο· ἡ δ' Ἀλώπηξ ἐπανελθῆσα, καὶ τὸ πρᾶχθὲν μαθεῖσα, ἐπέβη ὅπῃ τῷ ἑλθόντων τέκνων ἡνιάδην θανάτῳ, ὅσον ὅπῃ τῷ ἀμύνης ἀπέρῳ· χερσαία γὰρ ἔσα πῶν δειώκειν ἐχ' οἷά τε λῶ· διὸ καὶ πύρρῳθεν σῶσα, πᾶσι δ' καὶ πῆς ἀδυνάτοις ὄσιν ἔνδοξον, τῷ ἐχθρῷ καλῆρατο· καὶ πολλῶν δ' ὕστερον αἰγὰ πινῶν ἐπ' ἀγρῶν δυνόντων, καλαπῆας ὁ Ἀετὸς μέγας τι τ' θυμῶν συν ἐμπύροις ἀνθραξίν ἤρπασε, καὶ πὴν νεοτῆσιν ἤγαγν' ἀνέμῳ τ' σφοδρῶ πνεύσαντι τῷ καυτῷ, καὶ φλογὸς ἀναδεδείσης, οἱ ἀελιδεῖς ἀπῆλθον ἐπὶ τυγχάνοντες, ὅπῃ θέντες εἰς γῆν κατέπεσον· ἡ δ' Ἀλώπηξ ὅπῃ δραπεύσα, ἐν ὅπῃ τῷ Ἀετῇ πάντας κατέφαγν'.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος Δημοῖ, ὅπ οἱ φιλίαν ᾤδρασπονδέντες καὶ
τὴν ἐκ τῆς ἡδίκημῶν φύρωσι τιμωρίαν δι' ἀδένειαν, ἀλ-
λὰ τὴν γε θείαν δίκην ἐ διακρέσσονται.

2. Ἀετὶς καὶ Κάνθαρος.

Λαῶν δὲ ὡς Ἀετὶς διακόμῃσθε πρὸς κοίτῃ Κανθάρου
κατέφυγε, διόμῃσθε ὡς αὐτὸς σωθῆναι· ὁ δὲ Κάν-
θαρος ἤξις τῇ Ἀετὶν μὴ ἀνελεῖν τὴν ἐκέλευε, ὁρμίζων αὐτὸν
καὶ τὴν μερίδα Διὸς, ἢ μὴ μὴ καταφρονῆσαι τὴν μικρότησθε
αὐτῆς· ὁ δὲ μετ' ὁρμῆς τῇ πτέρυγι ῥαπίσας τὴν Κανθάρου, τὴν
Λαῶν ἀρπάσας κατέφαγε· ὁ δὲ Κανθάρου τὰ τε Ἀετὶς
ζῶαπέπη, ὡς τὴν καλίαν τέτε καλῶμαθῆναι· καὶ δὴ
περσελθὼν, τὰ ὡς τέτε καλῶμαθῆναι διέφθερε· τῇ δὲ
νὸν ποιησαμένη, εἰ τις τῆς τοῦ τελευτήσας, καὶ μελεωρτέρως
τότε τοῦ δευτέρου νεοποιησαμένη, καὶ καὶ πάλιν ὁ Καν-
θαρος τὰ ἴσα τῆς τῆς διέθηκεν· ὁ δὲ Ἀετὶς ἀμνηχανήσας
τοῖς ὅλοις, ἀναβὰς ὅπ τὴν Δία (τέτε γὰρ ἱερὸς ἐστὶν) λέ-
γει· τοῖς αὐτῆς γόνασι τὴν τρίτῃ γονὴν τῇ ὡς ἐθηκε,
τὰ δὲ ταῦτα ᾤδραδέμῃσθε, καὶ ἱκελεύσας φυλάττειν· ὁ
Κανθάρου δὲ κόπρε σφαῖραν ποιήσας καὶ ἀναβὰς, ὅπ τῆς
κόλπε τῆς Διὸς ταύτῃ καθεῖκεν· ὁ δὲ Ζεὺς ἀναστὰς ἐφ'
ὧ τὴν ὄνδον ἀπετινάξας, καὶ τὰ ὡς δι' ῥήριψεν ἐκλα-
δόμενος, αὐτὸν καὶ Συνέλειβεν πεσόντα· μαθὼν δὲ πρὸς τῆς
Κανθάρου, ὅτι ταῦτ' ἔδρασε τὴν Ἀετὶν ἀμυνόμενῃ· καὶ
γὰρ δὴ τὴν Κανθάρου ἐκένῃσθε μόνον ἡδίκησεν, ἀλλὰ καὶ εἰς
τὴν Δία αὐτὸν ἡσέβησε πρὸς τὴν Ἀετὶν εἶπεν ἐλθόντα,
Κανθάρου εἶναι τὴν λυπεῖν, καὶ δὴ καὶ δικάως λυπεῖν μὴ
βυλόμενῃσθε ἐν τῷ χύος τὸ τῇ Ἀετὶς σπανιδιῶναι, συνε-
βέλετο τῷ Κανθάρῳ διαλλαγὰς πρὸς τὴν Ἀετὶν δέσσειν·
τῇ δὲ μὴ κειδομένη ἐκένῃσθε εἰς καιρὸν ἔπερσεν τὴν Ἀε-
τὶν μετέθηκε τοκετόν, ἡνίκα αὐτὴν μὴ φάνωται Καν-
θάρου.

Ἐπιμύ-

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, μηδενὸς κατὰρξεν εἶναι, λογιζομένους, ὡς ἐδίδας ὅτιν, ὅς περὶ πηλακιδεῖς ἐκ αὐτῶν λυνηθεῖν ἐαυτῶν ἐπαμύναι.

3. Ἀηδῶν καὶ Ἰέραξ.

Ἀηδῶν ὅπῃ δένδρεα καθεζομένη κατὰ τὸ εἶδος ἦδεν. Ἰέραξ δὲ διασάμνῃ, καὶ τερφῆς ἀπορῶν, συνείληφεν ὅππῃς ἢ δὲ ἀναιρεῖσθαι μάλλεσσα, ἐδίδετο τῷ Ἰέρακι μὴ βρωθῆναι, μηδὲ γὰρ ἱκανῶς εἶναι Ἰέρακι γαστέρα πληρῆν, δεῖν δὲ αὐτὸν τερφῆς περὶ δέμῳ ὅπῃ τὰ μείζω τῶν ὀρνέων τραπέσθαι, καὶ ὁ Ἰέραξ ὑπολαβὼν εἶπεν, ἀλλ' ἐγὼ γε ἄφρων αὖ εἴλω, εἰ τὴν ἐν χερσὶν ἐποίησιν τερφῶν ἀφελὲς, τὰ μὴ φαίνόμενα πῶ διακρίναι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ἵππῳ καὶ τῷ ἀνθρώπῳ ὅπως ἀλόγιστοί εἰσιν, οἱ δὲ ἐλπίδα πλείονων ἀδύλων τὰ ἐν χερσὶ περιέμνουν.

4. Ἀλώπηξ καὶ Τράχος.

Ἀλώπηξ καὶ Τράχος διελθόντες εἰς φρέαρ κατέβησαν. μὴ δὲ τὸ πείν, τῷ τράχῳ σκεπτομένη τὴν ἀνοδὸν, ἢ Ἀλώπηξ ἔφη, θάρσει, χρηστέον καὶ εἰς τὴν ἀμφοτέρων σωτηρίαν ὁπινερόνῃ· εἰ γὰρ ὁρῶμεν σαυτεῖς, τὸς ἐμπερδίδες τῶν ποδῶν πρὸ τοῦ χῶτος περὶ τρεῖς καὶ τὰ κέρατα ὁμοίως εἰς τὸ ἐμπερδίδεν κλινεῖς, ἀναδραμεῖσα διὰ τῶν αὐτῶν ὁδῶν καὶ κερῶν, καὶ ἔξω τῶν φρέων ἐκείθεν πηδύσασα,

καὶ σὲ μὲν τῆτο ἀνασπάσω ἐν τεύθει· τῷ δὲ τρέγχε πρὸς
τῆτο ἐπίμως ὑπερηρῆσαμένην. ἐκείνη τῷ φρέατι ἔτι
ἐκπηδήσασα, ἐσκίετο περὶ τὸ σῶμα ἡδονῇ. ὁ δὲ τρέ-
γχε αὐτὴν ἐμύμφετο, ὡς ᾤραβαίνεσαν τὰς συνθήκας,
ἢ δ' ἄλλ' εἰ τοσαύτας, εἶπε, φρένας ἐκέκμητο, ὅπουσας
ἐν τῷ πώγωνι τρέχας, ἔπερτέρον ἂν κατέβης, ὡρὴν ἢ
τὴν ἀνοδὸν σκέψασθαι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔτι καὶ τὸ φρόνιμον ἄνδρα δεῖ
πρότερον τὰ τέλη σκοπεῖν καὶ τῶν παρρησιῶν, ἢ δ' ἔτι
αὐτοῖς ἐλπίσθαι.

5. Ἀλώπηξ καὶ Λέων.

Ἀλώπηξ μήπω δεασαμένη Λέοντα, ἐπειδὴ κατέ-
τινα πύχλῳ αὐτῷ συνήντησε, τὸ μὲν πρῶτον
ἔτι φοβήθη ὡς μικρὴ καὶ ἀποθανεῖν· ἐπειδὴ τοδεύτε-
ρον δεασαμένη, ἐφοβήθη μὲν, ἔτι μὲν ὡς τὸ πρότερον, ἐκ
τρίτη δὲ τῆτον δεασαμένη, ἔτι αὐτὴ κατεδάσθησεν, ὡς
καὶ περὶ τὴν θύραν διαλεχθῆναι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἡ συνήθεια καὶ τὰ φοβερά τῶν
παρρησιῶν ἐν πρῶτῳ ποιεῖ.

6. Αἴλουρος καὶ Ἀλεκτρυών.

Ἀἴλουρος συλλαβὸν Ἀλεκτρυόνα μετ' ἐυλόγῳ τῆτον
αἰτίας ἐβελήθη καταφάγειν· καὶ δὴ κατηγόρει αὐτῷ,
λέγων ὡς ὀχληρὸς εἴη τοῖς ἀνθρώποις, νύκτιος κεκραγὼς,
καὶ

καὶ μὴ συγχωρῶν ὕπνε τυγχάνειν τῆ δ' ἀπολογυμένης, ὅτι
τῇ ἐκείνων ὠφελείᾳ τὸ ποιεῖν, ὡς ὅτι τὰ συνήδη τ' ἐρ-
γων ἐγείρεται, πάλιν ὁ Αἰλαργὸς αἰτίαν ἐπέφερεν, ὡς ἀ-
σεβῆς εἶη περὶ τὴν φύσιν, μηδεὶ καὶ ἀδελφαῖς συμμιγ-
νύμεται· τὴν δ' καὶ τὸ πρὸς ὠφέλειαν ἥν' ἀισποῖται
πρόσῃεν φήσαντι, πολλῶν αὐτοῖς ἐντεῦθεν ὧν πικτο-
μένων, ὁ Αἰλαργὸς εἰπὼν, ἀλλ' εἰ σὺ γε πολλῶν εὐπορεῖς
εὐπορώπων ἀπολογίων, ἔγωγε μὴ τοι ἄτρεφ' ἐμὲν ὦ,
τὸν καὶ εἰδομένησα.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἡ πονηρὰ φύσις πλεημελεῖν αἰ-
ρεμένη, εἰ μὴ μετ' εὐλόγῃ συνηθεῖν προσημαίῃ, ἀφ' ἧς
καλύπτως γε μὴν πονηρεύεται.

7. Ἀλώπεκες.

Ἀλώπεξ ἐν παρίδι ληφθεῖσα, καὶ ἀποκοπέσῃς τ' ἐρᾷς
διαδραῖμα, ἀβίωτον ὡς αἰσχύνῃς ἤγειτο τ' βίον·
ἔγνω ὅτι καὶ τὰς ἄλλας Ἀλώπεκας τὸ αὐτὸ νεμετῆσαι,
ὡς ἂν τὸ κοινὸν πᾶσι τὸ ἴδιον συγκαλύψειεν αἶσχος, καὶ
δὴ πᾶσας ἀβροῖσασα, παρέθηκε τὰς ἐρᾷς ἀποκόπῃς, ὡς
ἐκ ἀπρεπείας μόνον τὸ τοῦ μέλους ὄν, ἀλλὰ καὶ προσημαίῃ
ἐμὲν ὡς προσημαίῃ· ὑπολαβέσα δέ τις αὐτῶν εἶπεν,
ὦ αὖτις, ἀλλ' εἰ ἐ σὸν τὸ πρὸς ἐμὲν, ἐκ ἂν ἡμῖν αὐ-
τὸ συνεβέλει.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ πονηροὶ τ' ἀνθρώπων ἐ δὲ
ἐννοίαν τὰς πρὸς τὰς πέλας ποιεῖν συμβουλίας, διὰ τὴν
τὸ αὐτοῖς συμφέρον.

8. Ἀλώπηξ καὶ Βάτω.

Ἀλώπηξ φραγμὸν ἀναβαίνουσα, ἐπεὶ δὴ ὀλιθίσασα
καλαπίπην ἔμελλεν, ἐπιδάξῃ πρὸς βούθραν
Βάτω καὶ τὴν πόδα ἐπὶ τοῖς ἐκείνης κίντροις αἰμά-
ξασα καὶ ἀλγίσασα, πρὸς αὐτὴν εἶπεν, οἶμοι, καλα-
φυγῶσάν με γὰρ ἐπὶ σε, ὡς ἐπὶ βοηθόν, σὺ χεῖρον διέθη-
κας· ἀλλ' ἐσφάλης, ὃ αὖτε, φησὶν ἡ Βάτω, ἐμὲ βε-
ληθεῖσα ὀπλάβεδαί, ἥτις πάντων ὀπλάμβάνεδαί
εἶωδα.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔγω καὶ τῷ ἀνδρώπων μάταιοι,
ἔσοι βοηθεῖς περὶ ἑχουσιν, οἷς τὸ ἀδικεῖν μᾶλλον ἔμ-
φυλον.

9. Ἀλώπηξ καὶ Κερκόδειλος.

Ἀλώπηξ καὶ Κερκόδειλος ἡμφισβήτουσιν περὶ εὐ-
χρησίας. Πολλὰ δ' τῷ Κερκόδειλῳ ὑπερήφανα πε-
ρὶ τῷ Κερκόδειλῳ λαμπρότητι, ὡς γυμνα-
σιαρχικότων, ἡ Ἀλώπηξ υπολαβῶσα, ὃ τὰν, εἶπεν·
ἀλλὰ καὶ ἐν λέγει, ἀλλ' ἀπὸ τῷ δέσματός γε φαίνεται
ὡς ἐκ παλαιῶν ἐστὶ εἰ γυμνασμένῳ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τῷ ψευδομύθῳ ἀνδρῶν ἑλεγχος
τὰ πρᾶγματα γίνεσθαι.

10. Ἀλεκτρούνες καὶ Πέρδιξ.

Ἀλεκτρούνας τις ἔχων ὅπῃ τ' οἰκίας, πελάμνῳ καὶ Πέρδικα σὺν ἐκείνοις ἀφῆκε νέμεσθαι· ἥν δ' πυπνόντων αὐτὸν καὶ ἀπελαυνόντων, ἐκείνῳ ἠδύμει σφόδρα, νομίζων ὡς ἀλλόφυλῳ ταῦτα πάχειν ὑπὸ τ' Ἀλεκτρούνων· ὡς δ' μῦθ' ἰκέρων καὶ κείνης ἐώρακε μαχηόμεναι καὶ ἀλλήλους κόπτοντας, τ' λύπῃς ἀπολυθεὶς, εἶπεν, ἀλλ' ἔγωγε ἀπὸ τῆς νῦν ἐλυπήσομαι, ὁρῶν καὶ αὐτὰς μαχηόμεναι ἀλλήλους.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος ἐηλοῖ, ὅτι οἱ φρόνιμοι ῥαδίως φέρουσι τὰς ὀφθαλμοῖς ἀλλοθιῶν ὕβρεις, ὅταν αὐτὰς ἴδωσι μηδὲ τῶν οἰκείων ἀπεχρυσόμεναι.

11. Ἀλώπηξ.

Ἀλώπηξ εἰς οἰκίαν ἐλθὼσα ὑποκειτῇ, καὶ ἕκαστα τ' αὐτῆς σκευῶν διερευνησάνη, εὗρε καὶ κεφαλὴν μορμουλίου ἐυφυῶς κατεσκευασμένῳ. ἦν καὶ ἀναλαβὼσα τ' χερσὶν ἔφη. ὦ οἶα κεφαλὴ, καὶ ἐγκέφαλον ἐκ ἔχει.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἄνδρας μεγαλοπρεπεῖς μὲν τὰ σώματι, κατὰ δ' ὑψυχρῶ ἀλογίστους.

12. Ἀιδρα-

12. Ἀνδρακεὺς καὶ Γραφεύς.

Ἀνδρακεὺς ὅπῃ πινθ οἰκῶν οἰκίας ἤξιε καὶ Γραφεά
 ὡς ἀφ' αὐτοῦ ἀντιπροσέειπεν ὁ δὲ Γραφεύς ὑπο-
 λαβὼν ἔφη, ἀλλ' ἐκ ἂν τῆς συναιμίας ἐργασίας
 δεδία γὰρ, μήπως, ἄπερ ἐγὼ λευκαίνω, αὐτὸς ἀσβόλης
 πληροῖς.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πᾶν τὸ ἀνόμοιον ἀκοινώνητον.

13. Ἀλιεῖς.

Ἀλιεῖς εἰλκον σαγήνῃ, βαρέας δ' αὐτῆς ὕψους, ἔχαι-
 ρον καὶ ἐσκήριον, πολλῶν ἐπὶ τῷ ἄγρῳ νομί-
 ζοντες· ὡς δ' ὅτι τὴν ἡϊόντα ταύτην ἐλκυσάντες, τῇ μὲν
 ἰχθύων εὐρεῖν ὀλίγους, λίδυν δ' ἐν αὐτῇ παμμεγέθη,
 ἀδυμείνῃ ἤρξαντο καὶ ἀλύειν, ἔπειτα δὲ τὴν ἰχ-
 θύων ὀλιγοπλίην, ὅσον ὅτι καὶ πάντ' ἀνὰ πρὸς πειρήσαντες
 εἰς δὲ πρὸς αὐτοὺς πρὸς ὑπερῷον εἶπε, μὴ ἀχθόμεθα,
 ὡς ἐπαίρει. τῇ γὰρ ἡδονῇ, ὡς ἔοικεν, ἀδελφὴ ὅτιν ἡ λύ-
 πη, καὶ ἡμᾶς ἔνδεον τοσαῦτα πρὸς ἡδονὴν ἔχουσιν, πάντως
 πρὸς καὶ λυπηθῶμαι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἡ δεινὴ λυπηθῶν ὅτι ταῖς ὑπο-
 τυχαῖς.

14. Κομπασις.

² Ἀνὴρ τις ἀποδημίσας, εἶτα ὅτε πάλιν πρὸς ἑαυτὸν
γλῶττι ἐπανελθὼν, ἀλλά τε πολλὰ ἐν διαφόροις ἦν-
δραγαδικέναι χώραις ἐκόμπαζε, καὶ διηκᾶν τῇ Ῥόδῳ
πεπηδηκέναι πένθημα, οἷον ἑδῆς ἤντι ἐπ' αὐτῆς δυνατὸς
ἂν εἴη πηδῆσαι· πρὸς τῷτο ὅτι καὶ μαρτυρᾶς τὸς ἐκεῖ πα-
ρόντας ἔλαβεν ἔχειν, ἥντι ὅτι παρόντων τις ὑπολαβὼν, ἔφη,
ὅτι ἔπος ἐὶ ἀληθὲς τὸτ' ἐστίν, ἐδὲν δὲ σοι μαρτύρων· ἰδὲ
Ῥόδῳ, ἰδὲ καὶ τὸ πένθημα.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐὰν μὴ πρὸς χεῖρας ἢ τὸ πρᾶγ-
μαλῶς ἀπόδειξις ἦ, πᾶς λόγος φειπτός ἐστιν.

15. Ἀδύνατα ἐπαγγελόμενος.

² Ἀνὴρ πένης νοσῶν καὶ χακῶς διακείμενος, ἐπειδὴ πρὸς
τῷ ἰατρῶν ἀπεγνάσκει, τῷ θεῶν ἐδέετο, ὡς ἐὰν τινὶ ὑγι-
ειαν αὐτῷ πάλιν ἐπανελθεῖν ποιήσῃαν ἐκατὸν εὐχὰς αὐ-
τοῖς προσοίσειν ὑποσχόμενος ὡς θυσίαν· ὅτι ὁ γυναι-
κὸς αὐτῷ πυθομένης, καὶ πᾶς σοι ταῦτα ἡ ὑγιάνης;
ἐκείνη ἔφη, οἶδ' γὰρ ἀνασλῶμί με ἐντεῦθεν ἵν' οἱ θεοὶ
ταῦτά με ἀπαιτήσωσιν;

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλοὶ ῥαδίως κατεπαγγέλλον-
ται, ἀπὲρ τελέσαι ἔργω καὶ προσδοκῶσιν.

16. Κακοπράγμων.

ἌΝηρ κακοπράγμων εἰς τὸ ἐν Δελφοῖς ἦκεν Ἀπίλλωνά, πηρᾷται τῆπν βελόμυθον· καὶ δὴ λαβὼν σρεσίον ἐν τῇ χερεὶ, καὶ τῆτο τῇ ἐδίπ σκεπάσας, ἔστη τε τῆ τεύπεδον ἔγχεα, καὶ ἤρξιο τὸ δεδὸν λέγων, Ἄπολλον, ὃ μὲν χεῖρας φέρω, πότερον ἔμπνευεν ὄξιν, ἢ ἄπνευεν; βελόμυθον ὥς σὶ μὲν ἄπνευεν εἶποι, ζῶν ἀναδείξαι τὸ σρεσίον· εἰ δ' ἔμπνευεν, εὐδὺς ἀποπνίξας νεκρὸν ἐκείνο πρενεγκεῖν· ὃ δέ γε δεὸς τλὴν κακότεχνον αὐτῷ γνῆς ὀπίνοισαν εἶπεν, ὁπότερον, ὃ ἔτῃ βέλει ποιῆσαι, ποιήσων· πῶρ' σὸι κεῖται γὰρ τῆτο πρᾶξαι, ἢ τοι ζῶν ὃ κατέχεις, ἢ νεκρὸν ἀποδείξαι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τὸ δεῖον ἀφ' ἐλατόμεν καὶ ἀλάσνητον.

17. Ἀλιεῖς.

Ἀλιεῖς ὀξελθόντες εἰς ἄγρην ἐπὶ δὴ πολὺν χρόνον τάλαιπωρίσαντες ἐδὲν εἶλον, σφόδρα τε ἡδύμεν, καὶ ἀναχωρῆται παρεσκευάζοντο· εὐδὺς δ' οὐννος ὑπὸ τῷ μεγίστῳ διωχόμενος ἰχθύων εἰς τὸ πλοῖον αὐτῷ ἐσήλατο, οἱ δ' ὅτε τον λαβόντες, μετ' ἡδονῆς ἀνεχώρησαν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλάκις ἂν μὴ τέχνη παρέχε, τιῦτα πύχην ἐδωρήσατο.

18. Φέναξ.

18. Φίναξ.

ΑΝῆρ πένης νοσῶν ἠϋξάλο τοῖς θεοῖς εἰ διασωθεῖν
 ἔς ἐκάλον εἰς θυσίαν προσίσειν· οἱ δ' ἔτι θεοὶ πει-
 ρῶνται τῆτον βελόμβροι, τῷ πάθες ἀπῆλλαξαν· ὁ δ'
 ἀνασῆς, εἰδὼν βοῶν ἠπόρει, σταπίνες βοῶς ἐκάλον πλά-
 σας ὅτι τῷ βωμῷ θεὸς ὠλοκαύτωσεν· οἱ δ' ἔτι θεοὶ βελό-
 μβροι αὐτὸν ἀμύνασθαι, ὅναρ ὅπως ἄν τις αὐτῷ, εἶπον, ἀπ-
 ελθε εἰς τὸ αἰγιάλον εἰς πένδε τὸ τόπον. ἐκεῖ δ' Ἀπικὰς
 χλίας εὐρήσεις. ἐκεῖν δὲ διϋπνιδεῖς σὺν ἠδονῇ καὶ
 σπεδῇ πρὸς τὸ ὑποδείχθαι τὸν τόπον ἀφίκετο τὸ χρυ-
 σίον διερευνῶν. ἐκεῖ δὲ δὴ περὶ αἰῶν, περὶ αἰῶν, ὑπ'
 αὐτῷ συνελήφθη· ἀλλὰ δὲ ἦδη ἀφελύχθη τὸ περὶ αἰῶν
 ἐδέχτο, χλίας χρυσὸν τάλαντα δώσειν αὐτοῖς ὑποσχέ-
 μιν, ὥς δ' οὐκ ὅπως εὐετό, ἀπαχθεῖς ὑπ' αὐτῷ, ἀ-
 πεμπώληθη χλίων δειχμῶν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τοῖς φευδέσι τὸ ἀνθρώπων ἐχ-
 θερίν τὸ θεῖον.

19. Βάτραχοι.

ΒΑΤΡΑΧΟΙ δύο ἐν λίμνῃ ἐνέμοντο. θέρους δὲ ξηραν-
 θεῖσης τὴν λίμνης, ἐκεῖν τε καὶ ἀλιπύγες ἐπεζήτου
 ἔτιραν. καὶ δὴ βαθεῖ περὶ τυχόν φρέατι. ὅπερ ἰδὼν ἄτε-
 ρος διατέρω φησὶ, συγκατέλθωμεν ὃ ἔστις, εἰς τόδε τὸ
 φρέαρ. ὁ δὲ ὑπολαβὼν εἶπεν, ἂν ἐν καὶ τὸ ἐνθάδε ὕδωρ
 ξηρανθῇ, πῶς ἀναβησόμεθα;

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ θεῶν ἀπεισκήπη· ἀπεισμέναι
 τοῖς ἀνθρώποις.

20. Γέγων

20. Γέρων καὶ Θάνατος.

Γέρων ποτὲ ξύλα τεμὼν ὅξ ὄρεα, καὶ πῖ σῳ' ὤμων
 ἀργύρεος, ἐπεὶ δὴ πολλῶ ὁδὸν ἐπιχθισμένος ἐβά-
 δισεν, ἀπέρηκώς ἀπέθετό τε τὰ ξύλα, καὶ τὸ θάνατον
 ἐλθεῖν ἐπεκαλεῖτο, τῷ δὲ θανάτῳ εὐθὺς ὀπισθάνους, καὶ
 τὴν αἰτίαν πυνθανομένη δι' ἣν αὐτὸν καλοῖν, ὁ γέρων
 ἔφη, ἵνα τὸ φέρον τέτον ἄρας ὀπισθῆς μοι.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πᾶς ἄνθρωπος φιλόζωος ὢν,
 καὶ μυνίοις κινδυνοῖς πεπεισὼν δοκῇ θανάτῳ ὀπιθυμεῖν,
 ὅμως τὸ ζῆν πολὺ πρὸ τῷ θανάτῳ αἰρεῖται.

21. Γραῦς καὶ Ἰατρός.

Γυνὴ γραῦς ἀλγῦσα τὰς ὀφθαλμύς, εἰσκαλεῖται
 πνὰ τὸ ἰατρὸν ὅτι μισθῷ, συμφωνήσασα, ὡς εἰ μὴ
 θεραπεύσειεν αὐτὴν τὸ ὁμολογηθέντα μισθὸν αὐτῇ δώ-
 σιν· εἰ δὲ μὴ μισθὸν δώσιν· ἐνεχέισησιν μὲν ἔν ὃ Ἰα-
 τρὸς τῇ θεραπείᾳ, καθ' ἡμέραν δὲ φοιτῇ ὡς τὴν πρεσ-
 βύπην, καὶ τὰς ὀφθαλμύς αὐτῇ χεῖρων, ἐκείνης μισθα-
 μῶς ἀναβλέπῃ ἐχέσης τὴν ὥραν ἐκείνῳ ὑπὸ τῇ
 χεῖρματι, αὐτὸς ἐν τῇ οἰκίᾳ σκευὴν ὑφαιρέμενος
 ὁσημέραι ἀπὴς· ἢ μὲν ἔν Γραῦς τὴν ἑαυτῆς περὶ σῶσιν
 εἶσα καθ' ἐχέσειν ἐλαττεμένην ὅτι τοσούτον, ὡς καὶ τε-
 λος παντάπασιν αὐτῇ θεραπευθείσῃ μισθὸν ὑπολάβῃ
 τῷ δ' Ἰατρῷ τὰς συμφωνηθέντας μισθὸς αὐτὴν ἀπαι-
 τεῖντος, ὡς καθαρώς βλέπεσαν ἦδη, καὶ τὰς μάρτυρας
 ὁδογράφους, μᾶλλον μὲν ἔν, εἶπεν ἐκείνη, τανῦν ὑπο-
 τιεῖν βλέπω· ἥνικα μὲν γὰρ τὰς ὀφθαλμύς ἐδόσαν, πολ-
 λὰ σῳ' ἐμῶν κατὰ τὴν ἐμαυτῆς ἐβλεπον οἰκίαν, νῦν δ'
 ὅτε με σὺ βλέπειν φῆς, ὑποτιεῖν ἐκείνων ὁρῶ.

Ἐπι-

Ἐπιμύθιον.

Ὁ ΜΥΘΟΣ δηλοῖ, ὅτι οἱ πονηροὶ ἄνθρωποι οὐκ ἔστιν ἀνθρώποι, ἀλλὰ ζῷα, καθ' ἑαυτοὺς δὲ ἐλέγχον ὅτι σπυρμινοί.

22. Γεωργός καὶ Παῖδες αὐτοῦ.

Γεωργός τις μίλλων καλλύειν τὸν βίον, καὶ βελόμυθος τὸν αὐτοῦ Παῖδας πείρειν λαβοῖν τὴν γεωργίαν, προσκαλεσάμενος αὐτὸν ἔφη, παῖδες ἐμοὶ, ἐγὼ μὲν ἤδη τὸν βίον ὑπέξισμι, ὑμεῖς δ' ἄγε ἐν τῇ ἀμπελῷ μοι κέκρυπται ζητήσαντες, εὐρήσετε πάντας. οἱ μὲν ἐν οἰκηδέντεσι θεσπαστὸν ἐκεῖ περ καλορεύχθαι, πᾶσαν δὲ τὴν ἀμπελὸν γλῶττι τὸ ἀποβίωσιν τὴν παλῶς κατέσκαψαν, καὶ θεσπαστὸν μὲν ἐπὶ πείρῃ, ἢ δὲ ἀμπελὸς καλῶς (καρπύουσα, πολλαπλασίονα τὸν καρπὸν ἀνέδωκεν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ ΜΥΘΟΣ δηλοῖ, ὅτι ὁ χάμαλος θεσπαστὸς ὅτι τοῖς ἀνθρώποις.

23. Δισπότης καὶ Κύνες.

Ἀνὴρ τις ὑπὸ χειμῶνος ἐν τῇ αὐτοῦ περιουσίᾳ ἀπληροῦς πλοῦτος μὲν τὰ πρὸ βάλια κατέφαγεν, εἶτα τὰς αἰγας. τῷ δὲ χειμῶνι ὅτι κεραιέντος, καὶ τὸν ἐργάτας βίον (φάξας ἐδοιμήσατο. οἱ δὲ Κύνες ταῦτα ἰδόντες, διελέχθησαν πρὸς ἀλλήλους, φεύγωμεν ἀλλ' ἡμεῖς γε ἐντεῦθεν. οἱ γὰρ ἄνθρωποι ἐργαστὴν βοῶν ὁ δισπότης ἡμῶν ἔχῃ φησὶν, πῶς ἡμεῖς φησὶται;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τέτρες μάλιστα φεύγουν καὶ φυλάττεσθαι χρὴ, οἵτινες ἐδὲ τῆς οἰκείων ἀπέχονται.

24. Τυνὴ καὶ Ὀρνις.

Τυνὴ χιρὰ τις ὄρνιν εἶχεν, καθ' ἑκάστην ἡμέραν ὡς αὐτὴ πλῆσταν νομίσασα ὥς εἰ πλείους τῇ ὄρνιθι κειδᾶς ὠραβάλλαι, δὲς τέξεται τ' ἡμέρας, τὸτο πεποίηκεν ἢ δ' ὄρνις παμελὴς χυρομένη ἐδ' ἅπαξ τ' ἡμέρας τεκεῖν ἠδύνατο.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ διὰ πλεονεξίαν τῆς πλοῦτων ὀπισθυμῆντες, καὶ τὰ παρόντα ἀποβάλλουσι.

25. Κυνόδηκος.

Δηχθεῖς τις ὑπὸ κυνός, τ' ἰασόμενον περὶ ζῴων ἐπιτυχὼν δέ τις αὐτῶ, καὶ γνὼς ὁ ζῴῃς, αἷ οὗτος εἶπεν, εἰ σωζέσθαι ἐβόλη, λαβὼν ἄρτον, καὶ τέτω τὸ αἶμα τ' πληγῆς ἐκμάξας, τὴν δακόντι κυνὶ φαγεῖν ὀπίδος· καὶ κεῖνος μελάσας ἔσθῃ, ἀλλ' εἰ τὸτο ποιήσω, δεῖ με ὑπὸ πάντων τῶν ἐν τῇ πόλει κυνῶν δηχθῆναι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ τῆς ἀνδραγαθίας οἱ πονηροὶ ευεργετῆται, μᾶλλον ἀδικεῖν παροτρύνονται.

26. Νεα

26. Νεανίσκοι καὶ Μάγισσες.

ΔΥΟ Νεανίσκοι Μαγείῳ παρεκάθιστο· καὶ διὰ τῶ Μαγείῳ πέρι πᾶν οικείων ἔργων ἀρολευόμεναι, ἄλλοις τέκτονι μέγιστον πᾶσι κρεῶν ὑφελόμενοι οἷς τὸ δαίτερον καὶ ἡλικία κόλπον· ὅπως εὐφραντο ὅτι τῶ Μαγείῳ, καὶ τὸ κρέας ὁπότενεντο, ὁ μὲν εὐφρανόμενος μὴ ἔχειν· ὁ δὲ ἔχων, μὴ εὐφρανόμενος· ὁ δὲ Μάγιστος αἰδομένη τὴν κακουργίαν αὐτῶν, εἶπεν, ἀλλὰ καὶ ἐμὲ λάβετε, τὴν γὰρ ὁπορεύμενον Θεὸν ἔκυν λήσσειτε.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ ἀνδρώπεις ὁπορεύοντες λάβωμεν, ἀλλὰ τὴν γὰρ Θεὸν ἔκυν λήσσει.

27. Ἐχθροί.

ΔΥΟ πινέες ἀλλήλοις ἐχθρεύοντες ὅτι τὴν αὐτῆς νεῶς ἔπλεον· ὡς ἄλλοι μὲν ὅτι τὴν πρύμνης, ἄλλοι δὲ ὅτι τὴν πρύμνης ἐκείνου· χερσὶν δὲ ὁπλίζοντο, καὶ τὴν νεῶς μελλούσης ἡδὴ καταποντίζεσθαι, ὁ δὲ τὴν πρύμνης τὴν κυβερνήτην ἤρπασεν, πότερον τῶν μερῶν τῶν πλοῦς πρὸς τὴν μέλλει καταβαπτίζεσθαι· τῶ δὲ τῶν πλοῦς εἰπόντος, ἀλλ' ἐμοίγε ἔτι λυπηρόν, εἶπεν, ὁ δὲ ἀνείλετο, εἶπε δὲ ἄν μὲν πρὸ ἐμῶν τὴν ἐχθρὸν ἀποδινήσκοντα.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐδὲν τὴν ἐκείνου βλάβης φροντίζουσιν, εἰ τὸς ἐχθρὸς μόνον ἴδωσι πρὸς αὐτῶν κακουργίας.

28. Αἶλκρος καὶ Μῦες.

ἘΝ οἰκίᾳ πνὶ πολλῶν Μυῶν ὄντων, Αἶλκρος τῷ τῷ
 γνῆς ἦκεν ἐνταῦθα, καὶ κατέλασεν αὐτῷ Κυλλαμ-
 βάων κατήδιαν· οἱ δὲ καθ' ἑκάστω ἐαυτοὺς ἀναλίσκοντες
 ὁρῶντες, ἔφασαν πρὸς ἀλλήλους, μηκέτι κῶτω κατέλωμεν,
 ἵνα μὴ παντάπασιν ἀπολώμεθα· τῷ γὰρ Αἶλκρος μὴ δυνα-
 μῶς διῦρον ὀξικνεῖται, ἡμεῖς ζωθισόμεθα· ὃ δὲ Αἶλκρος
 μηκέτι τῷ Μυῶν καλίσοντων, ἔγνω δι' ὀπινοίας αὐτοὺς σο-
 ρίζοντο ἐγκαλέσθαι. καὶ διὰ ἀποπῆναι τινὲς ἐ-
 αὐτὸν ἀναβάς ἀπώρησε, καὶ προσεποιεῖτο νεκρὸν εἶναι. τῷ
 δὲ Μυῶν τις ὡρακύνων, καὶ ἰδὼν αὐτὸν, ἔφη, ὦ ἄνθρωπε, καὶ
 δύλαξ γῆρας, ἐπιδεικνύσμεθα σοι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τῷ ἀνθρώπων οἱ φρόνιμοι, ὅταν
 ἐπὶ τῶν μοχθηρῶν πνευμένων, ἐκείνους αὐτῶν ὁρῶντες
 καὶ ὑποκρίσονται.

29. Ἀλώπηξ καὶ Πίθηκος.

ἘΝ Συνόδῳ ποτὲ τῷ ἀλόγων ζώων ὡρχήσατο Πίθη-
 κος, καὶ ἐυδακμύσας, Βασιλεὺς ὑπ' αὐτῷ ἐχειρο-
 τήθη. Ἀλώπηξ δ' αὐτῷ φρονήσασα, ὡς ἐν τινὶ παρίδι
 κρέας ἐδεάσατο, τῷ Πίθηκον λαβῆσα ἐνταῦθα ἤγαγεν, ὡς
 εὖροι μὲν αὐτῇ, λέγεται, θησαυρὸν τῷ πν, μὴ μὲν καὶ
 χρῆσθαι αὐτῷ τῷ βασιλεῖ γὰρ τῷ πν, ὃ νόμος δίδωσι. καὶ
 προσέτερετο αὐτὸν, ἅτε διὰ βασιλείαν, τῷ θησαυρὸν ἀνελέ-
 σθαι· ὃ δ' ἀπεισκήπητος προσελθὼν καὶ Κυλληφθεὶς ὑπὸ
 τῷ παρίδῳ, ὡς ὁρῶντες αὐτὸν ἐμίμρετο τῷ Ἀλώπηκα, ἢ
 τῷ πρὸς αὐτὸν, ὃ Πίθηκε, τοιαύτῳ σὺ μωρίαν ἔχων, τῷ
 ἀλόγων βασιλεύσεις;

Ἐπι-

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι αἱ ἀρεταὶ ἐξασκίῃσι
ἐπιχειρήσεις δυσυχύμασι ἀειπύῃσι.

30. Οὐννος καὶ Δελφίν.

Οὐννος διωκόμενος ὑπὸ Δελφίνος, καὶ πολλῶν τῶν ῥοί-
ζων φερόμενος, ἐπειδὴ καὶ ἀλαμβάνεσθαι ἐμελλεν,
ἔλατ' ἐν ὑποσφοδρῇ ῥύμῃ ἐκπεσὼν εἰς τινα νῆσον, ὑπὸ
δὲ τῇ ὁμοίᾳ ῥύμῃ καὶ ὁ Δελφίν αὐτὸν συνέξωπλεν· ὁ
δὲ Οὐννος ὁπισθεφείς, καὶ ληποψυχῆντα τὸ Δελφίνα ἐω-
ρακώς, εἶπεν, ἔκέτι μοι ὁ θάνατος λυπηρὸς, ὁρῶντι δ' αἴ-
τιον γιγνόμενα μοι τέταρτον ἐμοὶ ἀποδνήσκοντα.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ῥαδίως τὰς συμφορὰς οἱ ἄνθρω-
ποι φέρουσιν, τὰς δὲ τῶν αἰτίων δυσυχύντας ὁρῶντες.

31. Ἰατρὸς καὶ Νοσῶν.

Ἰατρὸς νοσῶντα ἐπερώπνευ· τῷ δὲ νοσῶντι ἀποθα-
νόντι, ἐκείνος πρὸς τὸς ἐκκομίζοντας ἔλεχεν, ἕτος
ὁ ἄνθρωπος, εἰ οἶνε ἀπείχετο, καὶ κλυτῶσιν ἐχρήτο, ἔκ-
αν ἐτεθνήκει. τῷ δὲ παρόντων ὑπολαβὼν τις, ἔφη, βέλ-
τιστε, ἔκ εἶσε ταῦτα νῦν λέγειν, ὅτε μηδὲν ὀφελὸς
ᾔσιν, ἀλλὰ τότε φέρειν, ὅτε τέτοις χρῆσθαι ἡδύνατο.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι δεῖ τὸς φίλους ἐν καιρῷ ἀνάγκης
τὰς βοηθείας παρέχειν· καὶ μὴ μετὰ τὴν πρᾶγμα-
τον ἀπογνώσιν καλῶς φρονεῖν.

32. Ἰξευτὴς καὶ Ἑχρς.

Ἰξευτὴς ἰξὸν ἀναλαβὼν καὶ καλὰ μὲς πρὸς ἄγρην ἔξῃ λα-
 βεν. ἰδὼν δὲ κίχλαν ἐφ' ὃν ἦν δένδρεα καθεζομένη,
 καὶ τὸς καλὰ μὲς ἀλλήλοις ὅτι μῆκος συνάψας, ἄνω πρὸς
 αὐτὴν, συλλαβεῖν βυλόμενος, ἀφωώρα καὶ δὴ λαθὼν,
 ἔχον κοιμωμένῳ ὑπὸ πίδακος ἐπάτησε. τὸ δ' ὄφρυς αὐτοῦ καὶ
 δακτύλῳ αὐτοῦ, ἐκείνῳ ἥδη λειποφυγῶν ἔλεγε. δὺς ἡμῶς
 ἐγὼ, ἔτερον γὰρ θηρεῦσαι βυλόμενος, αὐτὸς ὑφ' ἑτέρου ἡ-
 γραυδίου εἰς θάνατον.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς πύλας ἐπιβυλεύοντες,
 λαγθάουσι πολλάκις ὑφ' ἑτέρων τῶν αὐτὸ πάσχοντες.

33. Κάσως.

Κάσως ζῶν ἐπὶ τετράπεν, ἐν λίμνῃς τὰ πολλὰ
 διατῶμενον, καὶ τὰ αἰδοῖα φασὶν ἰατροῖς χρῆσιμα
 ἔσθαι. ὅν ἐπειδὴν ὑπὸ ἀνθρώπων διωκόμενος κατὰ λαμ-
 βάνῃς, γινώσκων ἔχειν δυνάμει, ἀποπτεμὼν τὰ ἐαυ-
 τὸ αἰδοῖα ῥίπῃ πρὸς τὸς δυνάκοντας, καὶ ἔτι ζωηρίας
 τυγχάνει.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔτι καὶ τῶν ἀνθρώπων οἱ φρόνι-
 μοι ὑπὸ τῆς ἐαυτῶν ζωηρίας ὁδὸν λόγον σὺν χρημά-
 τινι περὶ τῆς ζωῆς.

34. Κύναι.

34. Κύων καὶ Μαγείη.

Κύων εἰσπηδήσας εἰς Μαγείην, καὶ τῆ Μαγείῃ ἀρε-
λευμένῃ, καρδίαν ἀρπάσας ἔφυγεν. ὁ δὲ Μαγείη
ὅπως εἰσέρχεται, ὡς εἶδεν αὐτὸν φεύγοντα, εἶπεν, ὦ ἄνθρωπε, ἴδι
ὡς ὅπως περὶ αὐτὴν ἦς, φυλάξομαί σε. ὅτε δὲ ἀπ' ἐμῆ καρδίας
εἰληφας, ἀλλ' ἐμοὶ καρδίαν ἔδωκας.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλαῖς τὰ παθήματα πῖς
ἀνθρώποις μαθήματα γίνονται.

35. Κύων καὶ Λύκος.

Κύων πρὸ ἐπαύλεως πνέει ἐκάθευδε. Λύκος δ' ὅτε
δρακονί, καὶ βρώμα μέλλοντι δῆσιν αὐτὸν,
εἶδεν, οὐκ αὐτὸν καὶ αὐτοῦ. νῦν μὲν γὰρ, φησι, λεπτὴς
εἰμι καὶ ἰσχνός. ἀντὶς μικρὸν ἀναμείνῃς, μέλλουσιν αἱ ἐμοὶ
δυσπόται ποιήσιν γάλακτος, καὶ γὰρ τῶν κτηνῶν πλάτα φα-
γῶν, πικρὰ ἔσονται, καὶ σοὶ ἡδύτερον βρώμα γνή-
σομαι. ὁ μὲν οὖν Λύκος πρὸς αὐτὸν ἀπῆλθε. μετ' ἡμέρας δ'
ἐπανελθὼν, εὗρεν αὐτὸν ὅτι τῆ δώματι τὸ κύνος καθεύδον-
τα, καὶ τὰς κτήνας πρὸς αὐτὸν ἐκάλει, ὑπομνήσκων
αὐτὸν τῇ συνθηκῇ. καὶ ὁ Κύων, ἀλλ' ὦ Λύκε, εἰ τὸ ἀπο-
τῆδε πρὸς τῆς ἐπαύλεως με ἴσθις καθεύδοντα, μή κεν γά-
λακτος ἀναμείνῃς;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ φρόνιμοι τῷ ἀνθρώπῳ, ὅταν
πρὸς τι κινδυνεύοντες σωθῶσι, διὰ βίης τῆς φυλάττονται.

36. Κύων

36. Κύων καὶ Ἀλεξερυών.

Κύων καὶ Ἀλεξερυών ἑταίρειαν ποιησάμενοι, ἄδενον
 ἑσπερας δὲ χαλαραβύσσης, ὁ μὲν Ἀλεξερυών ὅτι δέν-
 δρε ἐκείνου ἀναβάς, ὁ δὲ Κύων πρὸς τῇ ρίζῃ τῆς δέν-
 δρε κοίλωμα ἔχοντο. τὸ δὲ Ἀλεξερυών καὶ τὸ εἶωθον
 νύκτωρ φωνήσαντος, Ἀλώπηξ ἀκύστατα πρὸς αὐτὸν ἔδρα-
 με, καὶ αὐτὸν χάπτειν, πρὸς αὐτὸν καλεῖσθαι ἡξίει, ὅτι
 θυμὸν γὰρ ἀγαθὸν ἔπε φωνῶν ζῶον ἔχον ἀσπίσασθαι
 τῇ δὲ εἰπόντι τὴν θυραρὸν πρότερον διὑπνίσαι ὑπὸ τῷ
 ῥίον καθεύδοντα, ὡς ἐκείνη ἀνοίξαντο καλεῖσθαι. καὶ
 κείνης ζητήσης αὐτὸν φωνῆσαι, ὁ Κύων αἰφνης πηδύσαι
 αὐτὸν διεσπάραξεν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ φρόνιμοι τῶν ἀνθρώπων τὴν
 ἐχθρὸς ἐπελθόντας, πρὸς ἰσχυρότερος πύμωσις ὡρα-
 γίζονται.

37. Λέων καὶ Βάτραχος.

Λέων ἀκύστατος ποτὲ Βάτρουχος μέγα βοῶντο, ἐπὶ
 σφάτῃ πρὸς τῷ φωνῶν, οἱ οὖν μέγα τι ζῶον
 εἶναι. προσμείνας δὲ μικρὸν, ὡς εἶδεν αὐτὸν περελθόν-
 τα τὴν λίμνης, προσελθὼν αὐτὸν καλεῖσθαι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, μὴ δεῖν πρὸς τὸ ὁφείως δι' ἀκοῆς μὴ-
 νης παρρησιάζεσθαι.

38. Λέων

38. Λέων κ' Ὀνθ' κ' Ἀλώπηξ.

Λέων κ' Ὀνθ' κ' Ἀλώπηξ κοινωνίαν ποιησάμενοι, ἔξῃλθον πρὸς ἄγρην. πολλῆς οὖν θήρας συλληφ-
θείσης, προσέταξεν ὁ Λέων τῷ Ὀνῳ διελθὲν αὐτοῖς· ὁ
ἦ τρεῖς μείδας ποιησάμενθ' ἐκ ἧ' ἴσων, ἐκλέξασθαι
τάς τε προστρέψω· κ' ὁ Λέων θυμωθεὶς τ' Ὀνον κατέ-
φαρξεν. εἶτα τῇ Ἀλώπεκι μείζον ἐκέλευσεν, ἢ δ' εἰς μίαν
μείδα πάντα σαρρεύσασα, εἰς ἣν βραχὺ τι κατέλιπεν. κ'
ὁ Λέων πρὸς αὐτὴν, τίς σε, ὦ βελίση, διαρῆν ἔπως ἐ-
δήλξεν; ἢ δ' εἶπεν, ἢ τῷ Ὀνι συμφορὰ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι σαρρηνισμοὶ γίνονται τοῖς ἀν-
θρώποις, τὰ ἧ' πάλαι δυστυχία.

39. Λέων κ' Ἀρκίθ'.

Λέων κ' Ἀρκίθ' ὁμῶς βενέβερων περὶ ζυγόνες, πρὶν τέ-
τε ἐμάχητο. δεινῶς ἐν ᾧ ἀλλήλων διαπεδέν-
τες, ὡς ἐκ τῆς πολλῆς μάχης κ' κολοδινιάσαι, ἀπαυ-
δήσαντες ἔκειντο. Ἀλώπηξ ἦ κύκλῳ περιῖστα, πεπρω-
κότας αὐτὰς ἰδύσα, κ' τὸ βενέβερν ἐν τῷ μέσῳ κείμενον,
τῷτο διὰ μέσον ἀμφοῖν διαδραμύσα κ' ἀρπάσασα, φεύ-
γασα ὤχετο· οἱ ἦ βλέποντες μὴ αὐτὴν, μὴ δύναμενοι
ἦ ἀναβῶναι, δέχονται ἡμεῖς, εἶπον, ὅτι δι' Ἀλώπηκα ἐ-
μοχθῆμεν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἄλλων κοπιόντων ἄλλοι κερ-
δαίνουσιν.

40. Μάν-

40. Μάντις.

ΜΑντις ἐπ' ἀγορᾶς καθήμενος, διελέγετο· ὅπως αὐ-
τος δέ τινος αἵφνης, καὶ ἀπαγγελίᾳ, ὥς αἱ τῆς
οἰκίας αὐτοῦ θυρίδες ἀναπεπληράσθαι τε πᾶσαι εἶεν, καὶ
πάντα τὰ ἔνδον ἀρηρημένα, ἀνεπήδησέ τε σενάξας, καὶ
δρομαῖος ἦεν· τρέχοντα δέ τις αὐτὸν δεασάμενος, ὃς
τος εἶπεν, ὁ πᾶλλότερα πρᾶγματα πρὸς δέναι ἐπαγγελ-
λόμενος, τὰ αὐτῷ ἔπρεμαντεῖς;

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς τὸς τῶν αὐτῶν βίον φαύλως διαι-
κῆσας, τῷ δ' ἡμῶν αὐτοῖς πρὸς κόντων πρὸς οἰδοῖται
πρὸς κόντων.

41. Μύρμηξ καὶ Πεισιτέρας.

ΜΥρμηξ διψήσας κατελθὼν εἰς πηλὴν πρὸς αὐτοῖς
ὑπὸ τῷ ῥεύματι ἀπεπνίγετο. Πεισιτέρας δ' ὅτε τῷ
δεασαμένην κλῶνα δένδρεος περὶ αὐτὴν εἰς τὴν πηλὴν ἔρ-
ριψεν, ἐφ' ἧς καὶ καθίσας ὁ Μύρμηξ διεσώθη. Ἰξευτὴς δέ
τις μὲν τὸ τοιοῦτον καλὰ μὲν συνθεῖς ὅτι τὸ πηλὸν Πεισιτέρας
συλλαβεῖν ἦεν, τὸ δ' ὁ Μύρμηξ ἐωρεάμενος, τῷ τῷ Ἰξευτῇ
πρὸς ἑαυτὸν ὅτι ἀλγίστας, τὸς τε καλὰ μὲν ἔρριψε, καὶ
τὴν Πεισιτέρας αὐτῇ καὶ φυγεῖν ἐποίησεν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος ἀλλοῖς, ὅτι δὲ πῶς εὐεργεταῖς χάριν ἀπο-
δοῦναι.

42. Νυκτεῖς.

42. Νυκτεῖς καὶ Βάτος καὶ Αἶθια.

Νυκτεῖς καὶ Βάτθ καὶ Αἶθια ἐταιρείαν ποιησάμεναι, ἐμπεικὸν διέγνωσαν βίον ζῆν. ἡ μὲν οὖν Νυκτεῖς ἀργύριον δανεισαμένη, καθήκεν εἰς τὸ μέσον, ἡ δὲ Βάτος ἐδήτα μεθ' ἑαυτῆς ἔλαβεν, ἡ δὲ Αἶθια τείτη χαλκόν, καὶ ἀπέπλευσαν. Χειμῶνθ δὲ Ἰσφοδρεὺς γηρομήκε, καὶ τὸ γε-
 ῶς ὡκυτραπείσης, πάντα ἀπολεισάντες αὐτοὶ ὅτι τινὲς γινώ-
 διεσώθησαν. ὁ δὲ ἐκείνους ποίνυν ἡ μὲν Αἶθια τοῖς αἰμαλοῖς
 αἰεὶ παρεδρεύει. μή περ ἢ χαλκὸν ἐκβάλλῃ ἢ θαλάσσῃ.
 ἡ δὲ Νυκτεῖς τὰς δανείσας φοβεμένη, τὸ μὲν ἡμέρας ἐ-
 φαίνεται, νύκτωρ δὲ ὅπιννομιν ἐξέρσιν, ἡ δὲ Βάτος τὸ ἥν-
 παιρόντων ἐδήτος ὅπλαμβάνει, εἰ περ τὴν οἰκίαν
 ὅπιννοιν ζητῶσα.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι περὶ αὐτοῦ ἀσπεδάζομεν, τέτοις ἐς
 ὕστερον φειπτόμεν.

43. Νοσῶν καὶ Ἰαίρος.

Νοσῶν τις καὶ ὑπὸ τοῦ Ἰαίρου ἐρωτώμενος ὅπως διέβη,
 πλέον εἶπε τοῦ δέοντος· ἰδρῶκέναι. ὁ δὲ ἀγαθὸν ἐ-
 φη τοῦτ' εἶναι· ἐκ δευτέρου δὲ παρ' αὐτῷ πάλιν ἐρωτηθεὶς ὅ-
 πως ἔχει, φείκε συγχεθεὶς, εἶπε, Ἰσφοδρεῶς, διαλείψαντάς ται.
 ὁ δὲ καὶ τοῦτ' ἀγαθὸν ἐφησεν εἶναι. ἐκ δὲ τρίτων αὐτοῦ ἐρω-
 τηθεὶς ὅπως διηγένηται, εἶπεν, ὃ δὲ ἐρῶ φειπτοπῶκέναι· ὁ
 δὲ καὶ τοῦτο πάλιν ἀγαθὸν εἶπεν εἶναι. εἶτα ἥν οἰκίαν π-
 νος αὐτὸν ἐρατήσαντο, ὅπως ἔχεις, ἐγὼ, εἶπεν, ὃ δὲ
 τος, ὑπὸ τῇ ἀγαθῇ ἀπόλλυμαι.

Ἐπι-

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι μάλιστα ἦν ἀνθρώπων δυσχεραίνοντων πρὸς χεῖν αἰεὶ βελομήτους λέγειν.

44. Ξυλευόμενος καὶ Ἑρμῆς.

Ξυλευόμενος πρὸς ᾧ τῷ ποταμῷ τὸ οἰκεῖον ἀπέβαλε πέλεκυν, ἀμνηστῶν τοίνυν ᾧ τῷ ὄχθῳ καδίσας ὠδύρετο. Ἑρμῆς δὲ μαθὼν τὴν αἰτίαν, καὶ οἰκτείρας τὸν ἀνθρώπον, καλαδὺς εἰς τὸν ποταμὸν, χρυσὸν ἀνήνεσκε πέλεκυν, καὶ εἰς τὸν ὅσον ὃν ἀπώλεσεν ἤρετο. τὸ δὲ μὴ τῦτον εἶναι φαμὲν, αὐτοῦ καλαβὰς ἀργυρῶν ἀνέκομισε. τῷ δὲ μὴ δὲ τῦτον εἶναι τὸ οἰκεῖον εἰπόντος, ἐκείνῳ καλαβὰς, ἐκείνον τὸ οἰκεῖον ἀνήνεσκε. τῷ δὲ τῦτον ἀληθῶς εἶναι τὸ ἀπολωλότα φαμέν, Ἑρμῆς ἀποδείξας αὐτῷ τὴν δικαιοσύνην, πάντα αὐτῷ ἐδώκεν. ὁ δὲ ᾧ τῷ ποταμῷ πάντα τοῖς ἐταίροις τὰ συμβαίνοντα διεξελήλυθεν. ὃν εἰς τις τὰ ἴσα διαπραξάσθαι ἐβλεύσας, καὶ ᾧ τῷ ποταμῷ ἐλθὼν, καὶ τὴν οἰκίαν ἀξίνῳ ἐξεπίπῃδεις ἀφείδεις εἰς τὸ ῥεῦμα, κλαίων ἐχέθῃς ὅτι φανείς οὖν ὁ Ἑρμῆς κακείνῳ, καὶ τὴν αἰτίαν μαθὼν τῷ θρήνῳ καλαβὰς ὁμοίως χρυσὴν ἀξίνην ἐξήνεσκεν, καὶ ἤρετο, εἰ ταύτῳ ἀπέβαλε. τῷ δὲ ζῦν ἠδονῇ, καὶ ἀληθῶς ἢ δ' ὅτι, φήσαντι, μισήσας ὁ θεὸς τὴν τοσαύτῃ ἀναίδειαν, ἐμὸν ἐκείνῳ κατέχευεν, ἀλλ' ἐδὲ τὴν οἰκίαν ἀπέδωκεν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ὅσον τοῖς δικαίοις τὸ θεῖον συνδίδεται, τοσούτον τοῖς ἀδίκοις ἐναντίζεται.

45. *Ον Θ κηπωρός.

*ΟΝΘ ὠρητέμελυνΘ κηπωρῶ, ἐπειδὴ ὀλίγα μὲρ
ἦντι, πλείω δ' ἐμόχθη, νύξατο τὰ Διὶ ὥς τε τῷ
κηπωρῶ ἀπαλλαγείς ἐτέρῳ ἀπεμπωληθῆναι δισπότη·
τῷ δ' Διὸς ἐπακυσανθῆΘ κη καλεύσανθῆΘ αὐτὸν κεραμεῖ
παραδιδῶναι, πάλιν ἐδυσφόρη, πλέον ἢ πρότερον ἀχθοφο-
ρῶν, κη τὸν τε πηλὸν, κη τὰς κεράμους κομίζων. πάλιν ἐν
ἀμείψαι δ' δισπότῳ ἰκέτευε, κη εὐρυσδέει ἀπεμπω-
λῆται, εἰς χείρῳα τοίνυν ἦν παρείρων δισπότῳ ἐμπε-
σὼν, κη ὄρων τὰ παρ' αὐτῷ παραδιδῶν, μὲν σεναγμῶν
ἔφη, οἶμοι τὰ παλαιώρῳ, βέλπον ὡς μοι ὦρα τοῖς προ-
τέροις δισπόταις μάνην. ἔπος γὰρ, ὡς ὄρων, κη τὸ δέσμα με
κατεργάσεται.

*Επιμύδιον.

*Ο μῦθῳ δηλοῖ, ὅτι τότε μάλιστα τὸς παρείρωνες δι-
σπότης οἰκίται ποδοῦσιν, ὅταν ἦν διυτέρων λάβωσιν
πείραν

46. *Ορνιθοθήρας κη Κορυδαλός.

*ΟΡΝΙΘΟΘΗΡΑΣ ὄρνισιν ἴση παρίδας, Κορυδαλὸς δ' ποι-
ῆτον πέρρῳθεν ἰδῶν, ἐπυνδάνειο τί ποτ' ἐργάζοι-
το, τῷ δ' πόλιν κητὴν φασμῶν, ἔτα δ' πέρρῳθέρῳ ἀπο-
χωρήσανθῆΘ κη κρυβένθῆΘ, ὁ Κορυδαλὸς τοῖς τῷ ἀνδρὶ
λόγῳι πεινῶσας προσελθὼν εἰς δ' βρόχον ἔαλω· τῷ δ'
*Ορνιθοθήρα ὁπιδραμόνθῆΘ, ὁκύνθῆΘ ἔπει, ὡς ἔπος, εἰ
ποιεῦτῳ πόλιν κηίσης, ἢ πολλὰς εὐρήσεις ἐνοικῆνθῆας.

D

Επε

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος Δημοῖ, ὅτι τότε μέλιστα οἶκοι καὶ πόλεις ἐρημύνθαι ὅταν οἱ πρῶτοι χαλεπαίνωσιν.

47. Ὀδυσπότης.

Ὀδυσπότης πολλὰ ἀνύσας ὁδόν, ἠόξατο, εἰ ἄρα εὐρήσει πη, τὸ ἥμισυ τέσσε πῶ Ἑρμῆ ἀναθήσειν· πεμπυχὼν δὲ πῆρα μετ' ἑφοινίκων καὶ ἀμυγδαλῶν, καὶ ταύτῃ ἀνελόμηντο, ἐκείνους μὲν φάρε, τὰ δὲ τῆς φοινίκων δῶα, καὶ τὰ τῆς ἀμυγδαλῶν καλύφη ὅππῃν ἀνέθηκε βωμῷ, φήσας, ἀπέχεις, ὦ Ἑρμῆ, τὸ εὐχλὺν, τὸ γὰρ εὐρεθήσῃ τὰ ἐκτίς καὶ ἐνὶ δὲ πρὸς σε διανένεμμαι.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἄνδρα φιλάργυρον, καὶ τὸς θεὸς διὰ πλεονεξίαν καλῶσοφιστόμῳ.

43. Παῖς καὶ Μήτηρ.

Παῖς ἐκ διδασκαλείου τινὸς τῷ συμμαθητῇ δέλτοι κλέψας, ἤνευκα τῇ μητρὶ τὸ μὴ ἀπαπληξάσης, μᾶλλον μὲν ἐν ἀποδείξασθαι, πρὸς τῶν χρόνοις ἡξάτο καὶ τὰ μείζων κλέπειν ἐπιπορώσῃ δὲ ποτε ληφθεὶς, ἀπήγατο τινὸς πρὸς δάνατον· τὸ δὲ μητρὸς ἐπομῆς καὶ ὁλοφροσύνης, ἐκείνη δὲ θυμῶν ἐδῆτο βραχέα πρὸς τῇ μητρὶ διαλεχθῆναι πρὸς αὐτήν· τὸ δὲ ταχέως τῷ σώματι τῷ παιδὶ πρὸς αὐτῇ, ἐκείνη δὲ πᾶς τοῖς ἐδῆτο δακρῶν ἀφείλετο. τὸ δὲ μητρὸς καὶ τῶν ἄλλων καλῶσοφῶν, ὡς ὁ μόνον κέκλοφεν, ἀλλ' ἡδὴ καὶ εἰς τινὸς μητρίαν ἡσέθησαν.

ἐκείνητος

ἐκείνος εἶπεν, αὐτὴ γάρ μοι τ' ἀπωλείας γέρονεν αἶψος· ἐγὼ δὲ ὅτε τινὶ δέλλον ἐκεκλόφην ἐπέπληξέ μοι, ἐκ αὖν μέ-
χρη τέτων χωρήσας νῦν ἡρόμην ὅτι τ' εἰδέναι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τῷ μὴ κατ' ἀρχὰς κολαζομένων
ὅτι μείζον αὐξάνει τὰ κακά.

49. Ποιμὴν καὶ Θάλασσαν.

Ποιμὴν ἐκ τῆς θαλάσσης τὸν ποιμνιον νέμων, ἐσ-
ρακῶς γαλιωῶσαν τὴν θάλασσαν, ἐπεθύμησε
πλεῦσαι πρὸς ἐμπορίαν. ἀπὸ πωλήσας ἐν τὰ πρόβατα,
καὶ φοινίκων βαλάνες πειάμην, ἀνήχθη· χαμῶν· ὃ
ῥοδρὺν ἡγομένην, καὶ τ' νεὸς κινδυνεύουσι βαπτίζεσθαι,
πάντα τ' φόβον ἐκβαλὼν εἰς τὴν θάλασσαν, μάστιγιν
τῇ νηὶ διεσάδην. μὲν δ' ἡμέρας ἐκ ὀλίγας παειόντες τινὰς
καὶ τ' θαλάσσης (ἐπὶ χε γὰρ αὐτὴ γαλιωῶσα) τὴν ἡρημίαν
δαυμάζον, ὑπολαβὼν ἕτος εἶπε, φοινίκων αὐτίς, ὡς
εἴκεν, ὅππῃ μεῖ, καὶ διὰ τοῦτο φαίνεται ἡ συχάζουσα.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τὰ παθήματα τοῖς ἀνθρώποις
μαθήματα γίνονται.

50. Ροιὰ καὶ Μηλιά.

Ροιὰ καὶ Μηλιά περὶ κάλλους ἦειζον· πολλῶν δ' ἀμ-
φισβηλήσεων μετὰ ξὺν ἡγομένων, βῆτος ἐκ τῆς πλη-
σίον ἀπέσασα φεγγῆ, παυσάμεθα, εἶπεν, ὃ φίλαι, πο-
τὲ μαχέσθαι.

Ἐπιμύθιον.

Ἐπμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐν τῇ τῇ ἀμεινόνων γάστρῃ, καὶ οἱ μηδενὲς ἀξιόι πηρεῶνται εἶναι τι.

51. Ἀσπάλαξ.

Ὁ Ἀσπάλαξ τυφλὸν ζῶον ὄρεῖ· φησὶν ἔν ποτε τῇ μητρὶ, συκαμνέαν μητρεῶν ὄρεω. εἴτα αὐτὴς φησι, λιθάνε ὅς μῃς πεπλήρωμαι· καὶ πάλιν, χαλκῆς, φησι, ψηφίδος κλύπον ἀκέω· ἢ ὅ μήτηρ ὑπολαβύσα εἶπεν, ὦ τέκνον, ὥς ἤδη χαλαμαυδάνω, ὃ μόνον ὄψεως ἐσέρεσαι, ἀλλὰ καὶ ἀκοῆς, καὶ ὁσφρήσεως.

Ἐπμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐνιοὶ τῇ ἀλαζόνων τὰ ἀδύνατα καταπαύεσθαι, καὶ ἐν τοῖς ἐλαχίστοις ἐλέγχονται.

52. Σφήκας καὶ Πέριδικας.

Σφήκας καὶ Πέριδικας διΐη συνεχόμενοι πρὸς γεωργὸν ἦλθον, παρ' αὐτῷ αἰτῶντες πεῖν, ἐπαγγελόμενοι ἀντὶ τῷ ὄδατος ταύτῃ τὴν χάριν ἀποδώσιν· οἱ μὲν Πέριδικας σκάπην τὰς ἀμπέλους. οἱ δὲ Σφήκας κύκλῳ περὶ τὸν τοῖς κέντροις ἀποσβεῖν τὰς κλέπτας. ὁ δὲ γεωργὸς ἔφη, ἀλλ' ἔμοιγέ εἰσι δύο βόες, οἳ μηδὲν ἐπαγγελόμενοι πάντα ποιοῦσιν, ἄμεινον ἔν ὄρεϊν ὀκείνοις δύναι ἢ περὶ ὑμῖν.

Ἐπμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἀνδρας ὁξάλως, ὠφελεῖν μὲν ἐπαγγελλόμενοι, βλάβησιν δὲ μεγάλα.

53. Ταῦς

53. Ταῦς καὶ Κολοῖος.

Τὸν ὀρεγίδων βελομήδων ποιῆσαι βασιλεία, Ταῦς ἐαυ-
τὸν ἡξίει διὰ τὸ χάλλῳ χειροποιεῖν· αἰρεμένων δ'
ἄντων πάντων, Κολοῖος ὑπολαβὼν ἔφη, ἀλλ' εἰ σὺ βασί-
λεύοντι· αἰεὶ δὲ ἡμᾶς χαλκιδιώνην ὅτι χειρήσει, πῶς ἡ-
μῖν ἐπαρχέσεις;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τὸς ἀρχοντίας ἐ διὰ χάλλῳ
μόνον, ἀλλὰ καὶ ῥώμῳ καὶ φρόνησιν ἐκλέγεσθαι δεῖ.

54. Μονίδος καὶ Ἀλώπηξ.

Μονίδος ἀγχείθ' ὅτι πνος ἐστὼς δύνδρε, τὸς ὀδύντας
ἐξηλθ' ἀλώπηξ δ' ἐρομένης τιμὴν αἰήαν ὅτι
μηδεμιᾶς προσκεκυμένης ἀνάγκης, πὶ τὸς ὀδύντας διήγει;
ἔφη, ἐκ ἀλόγως ὅτε ποιω, εἰ γάρ με κίνδυνος ὥσπερ αἰή
ἔκκεν με τίμω καὶ τα πρὸς τὸ τὸς ὀδύντας ἀκονᾶν ἀχολῆ-
σθαι δεήσει, ἀλλὰ μᾶλλον ἐπίμοις ἔσι χρῆσθαι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι δεῖ πρὸς τὴν κίνδυνον ὥσπερ αἰή
ἔκκεν με τίμω καὶ τα πρὸς τὸ τὸς ὀδύντας ἀκονᾶν ἀχολῆ-
σθαι δεήσει, ἀλλὰ μᾶλλον ἐπίμοις ἔσι χρῆσθαι.

55. Κορυδαλός.

Κορυδαλός εἰς πάλῳ αἰὲς, θρῆνων ἔλεγχυ, οἷμοι πα-
 παλαιπύρῳ καὶ δυνάμει πῶ. καὶ χρυσὸν ἐνοσφισά-
 μῳ τινός, ἐκ ἀργύρου, ἐκ ἀλλό τι σὺ τιμίων. καὶ κ. θ.
 ὅ σίτε μικρὸς τ' δανάτον μοι περὶ ξένησαν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς τὸς δια κέρδ' εὐτελές, μέγαν ὑφει-
 παρόντας κίνδυνον.

56. Νεβρός.

Νεβρός ποτε πρὸς τ' ἑλαφρον εἶπε, πάτερ, σὺ καὶ μεί-
 ζαν καὶ ταχύτερ' κυνῶν πέφυκας καὶ κίραρα
 πρὸς τούτοις ὑπερφυὰ φέρες πρὸς ἄμυναν, τί δὲ πρὶ ἐν
 ἐπὶ τέττις φοβῇ; καὶ κείν' ἄλῳ εἶπεν, ἀληθῆ μὲν
 ταῦτα φῆς τέκνον· ἐν δ' οἶδα ὡς ἐπιδεῖν κυνὸς ὑλα-
 κῶν ἀκούω, αὐτῆς πρὸς φυγὴν ἐκ οἶδ' ὅπως ἐκφέρε-
 μαι.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τὸς φύσει δειλὸς ἐδεμίᾳ πα-
 ραίνεσις βιώνουσιν.

57. Λαγωοὶ καὶ Βάτραχοι.

ΟΙ Λαγωοὶ ποτε συνελθόντες τ' ἑαυτῶν πρὸς ἀλλήλους
 ἀπεκλαίοντο βίον, ὡς ἐπισηπλῆς εἶη, καὶ διωλείας
 πλείας καὶ καὶ ἄνδρα πῶν καὶ κυνῶν καὶ αἰετῶν καὶ ἄλλων
 πολλῶν

πολλῶν ἀναλίσκονται. βέλτιον ἔν τῃ θανάτῳ ἢ παρὰ τὴν
 διὰ βίης τρέμειν· τῆτο τοίνυν κυρώσαντες, ὥρμησαν χε-
 τυλὸν εἰς τὴν λίμνην, ὡς εἰς αὐτὴν ἐμπιστέμενοι καὶ ἀ-
 ποπνιγησόμενοι. ἤν τῇ χειρὶ κλύειν τὴν λίμνης βα-
 τράχων, ὡς τῇ δ' ἑρμῇ κλύειν τὴν ἡδονήν, εὐδύς εἰς ταύ-
 τῃν εἰσπηδῶσάντων, ἤν λαγῶν τις ἀρχιγένης τῇ δό-
 κῃ ἢ ἄλλων ἔφη, σῆτε, ἑταῖροι, μηδὲν δεινὸν ὑμᾶς
 αὐτὰς διαπράττειν. ἦδη γὰρ ὡς ὁρᾶτε, καὶ ἡμῶν ἔτι
 ὅτι ζῶα δειλότερα.

Ἐπὶ μύθῳ.

Ὁ μύθος δὲ τοῖς, ὅτι οἱ δυστυχῆς ἐξ ἑτέρων χεί-
 ρων παρόντων ἐπαμυνθῆναι.

58. Ὁρῶ καὶ Ἰππῶ.

Ὁρῶ Ἰππῶν ἐμακάρισιν, ὡς ἀφ' ὧν τρεφόμενοι
 καὶ ὅπως αὐτοὶ μὴ ἀχρῶν ἄλλοι ἔχων, καὶ
 ταῦτα, πλεῖστα τάλαιπῶν· ἐπὶ τῇ χειρὶ ἐπὶ τὴν πο-
 λέμην, καὶ ὁ στρατιώτης ἐνοπλὸς ἀνέβη τῇ Ἰππῶν, παντα-
 χόσῃ τὸν ἐλαύνον, καὶ δὴ καὶ μίσην τῇ πολεμίων εἰσάλα-
 σεν, καὶ ὁ Ἰππῶ πληγὴς ἔκτετο. ταῦτα ἑωρακὼς ὁ ὅ-
 ρος τῇ Ἰππῶν μελαβαλλόμενος ἐταλάνιζεν.

Ἐπὶ μύθῳ.

Ὁ μύθος δὲ τοῖς, ὅτι ἐδιδότῃς ἀρχόντας καὶ πλεονέ-
 χην, ἀλλὰ τῇ χαλῇ ἐκείνων φθόρον, καὶ τὴν κίνδυνον ἀνα-
 λογομενους τὴν πεινᾶν ἀναπαύειν.

59. Φιλάρχου Θ.

Φιλάρχους τις ἄπασαν αὐτὴν τινὲς ἑσάν ὁξυργεῖσαι
 μιν Θ, καὶ χρυσὸν βῶλον ποιήσας, ἐν τινὶ τῷ πα-
 τέρει. Συμβατορῆσας ἐκεῖ καὶ ψυχλὴν ἑαυτῇ, καὶ τὴν
 καὶ καθ' ἡμέραν ἐρχόμενος, αὐτὸν ἔβλεπε. τὸ δ' ἐργα-
 τὸν αὐτὸν ὠδυνήσας, καὶ τὸ γεγονός συννοήσας, ἀνορύ-
 ξας τὸ βῶλον ἀνείλετο. μετὰ δ' ταῦτα κακείνος ἐλθὼν καὶ
 κενὸν τὸ τόπον ἰδὼν, θρήνην ἤρξατο, καὶ πάλιν τὰς τεί-
 χας. τῷ ὃν δὲ τις ὁλοφύρομενον ἔτις ἰδὼν, καὶ τὴν αἰτίαν
 πυδόμενος, μὴ ἔτις εἶπεν, ὅτι ἔτος αὐτῇ. ἐδὲ γὰρ ἔ-
 χων τὸ χρυσὸν εἶχες. λίθον ἔν ἀντὶ χρυσῷ λαβὼν θῆ-
 καὶ νόμιζέ σοι τὸ χρυσὸν εἶναι. τὴν αὐτὴν γὰρ σοι πληρο-
 σθαι χρυσῶν. ὡς ὅτε γὰρ, ἐδ' ὅτε ὁ χρυσὸς ἦν ἐν χρυσῷ
 ἥδη τὰ κτήματα.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐδὲν ἡ κτήσις, ἐάν μὴ ἡ χρῆσις
 ὁρῶσθαι.

60. Χῆνες καὶ Γέγρανοι.

Χῆνες καὶ Γέγρανοι ὅτι ταῦτα λιμᾶνος ἐνέμοντο. τὸ δ'
 θηρευτῶν ὀπιφανέων, οἱ μὲν Γέγρανοι, κύβοι ὅν πε-
 ταχέως ἀπέπησαν. οἱ δὲ Χῆνες δια τὸ βάρος τὸ σωμα-
 τὸν μέναντες συνεληφθήσαν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ ἐν ἀλώσει πίλεως, οἱ μὲν
 ἀκλήμονες εὐχερῶς φεύγουσιν, οἱ δὲ πλείστοι δυνεύουσιν
 ἀλίσκόμενοι.

61. Χῆ-

61. Χελώνη καὶ Ἀετός.

Χελώνη Ἀετῷ ἐδείτο ἱππασαί ταύτῃ διδάξαι. τῷ δὲ φθαινέσθαι πόρρω τῷ τοῦ φύσεως αὐτῆς εἶδός, ἐκείνη μάλλον τῇ δέήσει φροσέκετο. λαβὼν ἐν ταύτῃ τοῖς ὄνυξι, καὶ οἷς ὕψθ' ἀνερεγκῶν, εἶτ' ἀφῆκεν. ἡ δὲ χελωνῶν πεσεύσα ζυωείβη.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλοὶ ἐν φιλονεικίαις καὶ φρονημασίαις φθαρκεύονται, αὐτοὺς ἐβλάψαν.

62. Ψύλλα.

Ψύλλα ποτὲ πηδύσασα, ὅτι πύλα ἀνδρὸς ἐμάστιον· ὃ δὲ Ἡρακλεῖ ὅτι ζυμμαχίαν ἐκάλει. τῷ δὲ ἐκείνου αὐτῆς ἀφελουμένης γενέσθαι, εἶπεν, ὦ Ἡρακλεῖ, οἱ ὅτι ψύλλα ἐ ζυωεμάχουσι, πῶς ὅτι μείζονιν ἀνταγωνισαῖς ζυνεργήσῃς;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, μὴ δεῖν ὅτι καὶ ἐλαχίστων τῷ θεῷ δεῖν δύναιτο, ἀλλ' ὅτι καὶ ἀναγκαίων.

63. Ἐλαφος.

Ελαφος τὸ ἔτερον πεπηρωμένη τῷ ὀφθαλμῶν, ἐπὶ νιόνος ἐνέμειο, τὸ μὲν ὕμῃ τῷ ὀφθαλμῶν πρὸς τῇ ξηρᾷ διὰ τὸς κυνηγετικῆς ἔχουσα, τῷ λοιπὸν πρὸς θάλατταν, ὅτεν

ὅθεν ἐδὲν ὑπώπνευε. ὧσα πλέοντες δὲ πινες, καὶ τέτυχα
χασάωμοι. αὐτῆς κατετίξευσαν. ἡ δ' ἐαυτῇ ὠλοφύρετο,
ὡς ὑφ' ἧς μὴ ἐδεδοίκε, μηδὲν παθεῖσα, ὡς δ' ἐκ ὧν
κακὸν ἐπαΐεν, ὑπὸ ταύτης περιδεδομένη.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος διλοῖ, ὅτι πλάκας ἡμῶν τὰ βλαβερά
κύνια, ὠφέλιμα γίνονται· τὰ δ' ὠφέλιμα, βλαβερά.

64. Ἐλαφός καὶ Λέων.

Ἐλαφός κυνηγὸς φεύγεσα, οἷς ἄντρον εἰσίδει. Λέων
δ' ἐκείνῃ πετυχεῖσα, ὑπὸ αὐτῆς συνελήφθη.
θνήσκεσα δ' ἔλεγχον, οἷον ὅτι ἀνθρώπους φεύγεσα, καὶ
τοῦ θηρίου ἀγριωτάτῳ πελέπουν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος διλοῖ, ὅτι πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων μικρὰς καὶ
δύνας φεύγοντες μεγάλας ἐπιρράδουσιν.

65. Ἐλαφός καὶ Ἀμπελός.

Ἐλαφός κυνηγὸς φεύγεσα, ὑπὸ Ἀμπίλῳ ἐκρύβη.
παρελθόντων δ' ὀλίγον ἐκείνων, ἡ Ἐλαφός τελευ-
ται ἢ λαθεῖν δόξασα, ἢ τῷ Ἀμπίλῳ φύλλον ἐδίδου
ἢ ῥέετο. τέτων δ' ἰσομερών, οἱ κυνηγοὶ ὅπως εἰσέρχονται, καὶ
ὅπερ ἦν ἀληθές, νομίσαντες τῷ ζῶνι ὑπὸ τοῖς φύλλοις
τὴν κρύψαντα, ῥέεσαν ἀνέκον τῇ Ἐλαφόν· ἡ δ' θνή-
σκεσα. πιαυτ' ἔλεγε. δίκαια πίπνυνται, ὅτι ἔδει τῇ
σώσασάν με λυμάνεσθαι.

Ἐπι-

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ ἀεικύνες τὺς εὐεργέτας ὑπὸ
Θεῶν κολάζονται.

66. Ὀνθὺ καὶ Λέων.

ὈΝΘῦ ποτὲ Ἀλεκίρυὼν συνεβόσκειο. Λέοντος δ' ἐπι-
δόντος παρ' Ὀνθῦ, ὁ ἀλεκίρυὼν ἐφώνησε. καὶ ὁ μὲν
Λέων (φασὶ γὰρ τὸν τὴν ἀλεκίρυόνθῦ φωνὴν φοβεῖσθαι)
ἐφυγῆν. ὁ δ' Ὀνθὺ νομίσας δι' αὐτὸν πεφυγῆναι, ἐπέ-
δραμεν εὐδὺς παρὰ Λέοντι. ὡς δ' ἐκέρρω τὸν ἐδίωξεν,
ἔνθα μηκέτι ἢ τὰ ἀλεκίρυόνθῦ ἐφίκνετο φωνή, σεραφεῖς
ὁ Λέων κατεδοιμήσατο. ὁ δ' ἐκνήσκων ἐβόα, ἄθλιθ' ἐ-
γὼ καὶ ἀνέστης· πολεμῶν γὰρ μὴ ὦν γινέων, τίος χάριν
εἰς πύλεμον ὕψωρμήθην;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλοὶ ἥδη ἀνθρώπων παπεινυ-
μένοις ὁπίπδεις τοῖς ἐχθροῖς ὁππίδενται, καὶ ἔτις ὑπ'
ἐκάνων ἀπίλλυνται.

67. Κηπωρὸς καὶ Κύων.

ΚΗΠΩΡὸς Κύων εἰς φρέαρ κατέπεσεν. ὁ δ' Κηπωρὸς βα-
λόμενος αὐτὸν ἐκείθεν ἀνεγέχεϊν, κατῆλθε καὶ αὐ-
τὸς εἰς τὸ φρέαρ. οἰηθεὶς δ' ὁ Κύων ὡς κατωτέρω μάλ-
λον αὐτὸν ὠρμαζόντε καλεῖσθαι, καὶ Κηπωρὸν σεραφεῖς
ἔδρακεν. ὁ δὲ μετ' ὀδύνης ἐπανιών, δίκαιά, φησι, πέπονθα,
πᾶσι παρὶ γὰρ αὐτὸν χρεα σῶσαι ἐσθ' ἔδρασα;

Ἐπι-

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἀδίκους, καὶ ἀχαίρους.

68. Σῦς καὶ Κύων.

Σῦς καὶ Κύων ἀλλήλοις διελοιδροῦντο. καὶ ἡ μὲν Σὺς ὤμνυε καὶ τὸ Ἀφροδίτης, ἢ μὴν τοῖς ὁδοῦσιν ἀναρρήξιν τὴν κύνα. ἡ δὲ Κύων πρὸς ταῦτα εἰρωνικῶς εἶπε καλῶς καὶ τὸ Ἀφροδίτης ἡμῖν ὁμνύεις, δηλοῖς γὰρ ὅτι αὐτῆς ὁπμάλιστα φιλεῖται, ἢ τὸ ὅτι σὺν ἀκαθάρτων σαρκῶν γυνόμηνον, ἐδ' ὅλως εἰς ἱερὸν προσέειπαι. καὶ ἡ Σὺς, διὰ τὸ μὲν ἐν μᾶλλον δόλῃ ὅτιν ἡ Θεὸς σέργυσά με. τὸ κλείναντα ἢ ἄλλως λυμαινόμενον. παντάπασιν ἀποστρέφεται. σὺ μὲν τοι κακῶς ὄζεις, καὶ ζῶσα καὶ τεθνηκυῖα.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ φρόνιμοι τὸ ρηθῆναι τὰ ὑπὸ ἐχθρῶν ὀνειδῇ εὐμεθέδως εἰς ἐπαινον μετασχηματίζουσιν.

69. Ὑῖς καὶ Κύων.

Ὑῖς καὶ Κύων περὶ εὐτοκίας ἤειπον. ἔφη δ' ἡ Κύων ὅτι τοκος εἶναι μάλιστα πάντων τῶν πεζῶν ζώων. καὶ ἡ Ὑῖς ὑποτυχῆσα, πρὸς ταῦτά φησιν, ἀλλ' ὅταν τὸ το λέγειν ἴδῃ ὅτι καὶ πύλας τῆς αὐτῆς σκύλακας τήλεις.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐκείνῃ τῇ τάχει τὰ πρὸς γέννησιν ἀλλ' ἐν τῇ πελοότητι κείνεται.

70. Ὁφίον.

70. Όφεις καὶ ΚαρχήνΘ.

Όφεις Καρχήνω συνδητῶτο, ἑταυρείαν πρὸς αὐτὸν ποιη-
σάμενΘ. ὁ μὲν ἔν ΚαρχήνΘ ἀπλὸς ὢν τὸ
πον, μετὰ ἀλλόδατοι καὶ κείνον παρήνει τὸ πανουργίας· ὁ δὲ
ὡς ποῦν ἑαυτὸν παρῆχε πειθόμενον. ἐπιτηρήσας δ' ὁ
ΚαρχήνΘ αὐτὸν ὑπενύλα, καὶ ὅσον οἶόν τε πείσας φονεύει.
τῷ δ' Όφειος μὲν θάνατον ἐκλαθέηΘ, ἐκείνΘ ἔπειν,
ἔτιος ἔδδ καὶ πρὸθεν εὐδύν καὶ ἀπλὸν ἔβδ. ἐδὲ γὰρ αὖ ταύ-
τιν τὸ δίκλιν ἔπασας.

Ἐπιμύθιον.

Ό μῦθΘ δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς φίλοις ζῶν δόλω περι-
οίης, αὐτὸι μᾶλλον βλάπτονται.

71. Ποιμὴν καὶ ΛύκΘ.

Ποιμὴν νεογνὸν Λύκεν σκύμνον εὐρών, καὶ ἀνελόμενος,
ζῶν τοῖς κυσὶν ἔτρεφεν. ἐπεὶ δ' ἠυξήθη, εἰποίη
ΛύκΘ πρόβατον ἤρπασε, μὲν γὰρ κυνῶν καὶ αὐτὸς ἐδῶκε.
καὶ γὰρ ὁ κυνῶν ἔδδ ὅτε μὴ δυναμῶν καταλαβεῖν τὸ
Λύκον, καὶ διὰ ταῦτα ὑποσφρόντων, ἐκείνΘ ἠκολέ-
θει, μέλεις αὖ τῶτον καταλαβὼν, οἷα δὴ ΛύκΘ, συμ-
μετάσχη τὸ θήρας, ἔτα ὑπὲς τρεφεν. εἰ δὲ μὴ ΛύκΘ ἔ-
ξωθεν ἀρπάσειε πρόβατον, αὐτὸς λάθρα θύων ἅμα τοῖς
κυσὶν ἐδοινεῖτο, ἕως ὁ ποιμὴν στυχασάμενΘ, καὶ ζυνεῖς
τὸ δρώμενον, εἰς δένδρον αὐτὸν ἀναρτήσας ἀπὸ κλίηνεν.

Ἐπιμύθιον.

Ό μῦθΘ δηλοῖ, ὅτι φύσις πονηρὰ χρηστὸν ἥδους ἐ-
τρέφει.

Ε

72. Λέων.

72. Λέων, καὶ Λύκος.

Λέων γινώσκας, ἐνόσθ' ἀπὸ κεκλιμένος ἐν ἀνθρώπῳ· παρῆσαν δ' ὀπισθεφόμην τ' βασιλεία πλὴν ἀλώπηκος, τάλλα γὰρ ζώων. ὁ πίκυν Λύκος λαβόμενος εὐκαλείας, κατηγόρει ὡς τὰ Λέοντι τ' Ἀλώπηκος, ἅτε διὰ παρ' ἐδὲν πεινρήνης τ' πάντων αὐτοῦ κρατεία, καὶ διὰ ταῦτα μὴδ' εἰς ὀπισθελὴν ἀφειγμένος. ἐν ποσέτω δ' παρὶν καὶ ἡ Ἀλώπηξ, καὶ οὐκ ἐπὶ τελευταίων ἡ κερασία οὐκ ἐπὶ Λύκου ῥημάτων. ὁ μὲν ἐν Λέων καὶ αὐτῆς ἐβρυχάτο, ἡ δ' ἀπολογίας καιρὸν αἰτήσασα, καὶ περὶ τῆς Συνελθόντων τοσούτον ὠρέλησεν, ὅσον ἐγὼ πανταχόσε περνοήσασα, καὶ διεραπείαν ἔδωκεν παρ' ἰατρῶν ζητήσασα, καὶ μαθεύσας, οὗ δ' Λέοντι εὐδὺς τ' διεραπείαν εἶπεν κελεύσαντι, ἐκοίνη φησὶν, εἰ Λύκον ζῶντα ἐκδέξῃς τὴν αὐτὴν δόξαν διεμὴν ἀμφίεσθαι. καὶ τὸ Λύκος αὐτίκα νεκρὸν κειμένον, ἡ Ἀλώπηξ γελῶσα εἶπε, ἔγωγε ἔχρη τ' δεσπέτῳ περὶ δυσμίνεσαν κνήν, ἀλλὰ πρὸς εὐμείζαν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ὁ καθ' ἑτέρου μηχανάμενος καθ' ἑαυτοῦ τὴν πάλιν φειγέται.

73. Τυνή.

Τυνή τις ἀνδραμέδυσον ἔχει, τὸ πάθος αὐτὸν ἀπαλάξαι θέλῃ, τοῖον δὲ τι σφίγγειαι. κικαρωμένον γὰρ αὐτὸν ὑπὸ τ' μέδης ὡραθηήσασα, καὶ νεκρὸν διὰ κλῆν ἀναιδιότητι, ἐπ' ὤμων ἄρασα, ὅτι τὸ πολυάνδρον ἀπενεγκύστα καλέειτο, καὶ ἀπὸ λείων. ἡνίκα δ' αὐτὸν ἤδη ἀνάνηφεν ἐσυχάσατο, περὶ λαθῆναι τὴν δύσιν ἐκοπήσθαι πολυανδρεῖς. ἐκείνους δ' φήσαντος, τίς ὁ τὴν δύσιν κόπῃ;

κόπων; ἡ Γυνὴ ἀπεκρίνατο, ὁ τοῖς νεκροῖς τὰ σπῆα κο-
μιζων ἐγὼ πέριμι. κακεῖν Θ', μὴ μοι φαγῶν, ἀλλὰ-
πειν, ὧ βέλτιστε, μᾶλλον προσέειπε· λυπεῖς γάρ με
βρώσεως, ἀλλὰ μὴ πόσεως μνημονεύων. ἡ δ' ἔτι πρὸς τῇ
παλάσσῃ, οἷα τῇ Δυσήνῳ, φησὶν, ἔδῃ γὰρ ἔδῃ σοφί-
σασθαι ὧν ἦτα. σὺ γὰρ ἄνερ εἰ μόνον ἐκ ἐκπαίδευσθης, ἀλ-
λά καὶ χεῖρων σαυτὲ γήρως, εἰς ἕξιν σοι καλῶς ἴσθης
τῇ παθεῖς.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος Δημοῖ, ὅπ' εἰ δὲ κακαῖς πράξεσιν ἐγ-
χευρίζων· εἰ γὰρ ὅτε καὶ μὴ δέλοντι πρὸ ἀνδρώτῃ τοῖς
Θ' ἐπιτίθειται.

74. Κύκν Θ'.

Ἀνὴρ εὐπορῶν Χῆνὰ τε ἄμα καὶ Κύκνον ἔτρεφον, ἐκ
ὧν τοῖς αὐτοῖς μὲν τοῖς. ἡ μὲν γὰρ ὥδῃς, ἡ δ' ἔτι
τραπέζης ἐνεκον. ἐπὶ δ' ἔδει καὶ χλῶα παθεῖν ἐφ' οἷς ὁ-
τρέφετο, νύξ μὲν ἦν, καὶ διαγινώσκον ὁ καιρὸς ἐκ ἀφῆ-
κεν ἐχάτερον. ὁ δ' Κύκν Θ' ἀντὶ τῆς χλῶας ἀπαχθεῖς,
ἄδει τὸ μέλος, θανάτῳ προοίμιον. καὶ τῇ μὲν ὥδῃ μὴνύ-
ει τὴν φύσιν, τὴν δὲ τελευτῇ διαφεύγει τῆς μέλῃς.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος Δημοῖ. ὅπ' πολλὰ καὶ ἡ μεσοκὴ τελευτῇς
ἀναβολῇ ἀπεργάζεται.

75. Αἰθίοψ.

Αἰθίοπά τις ἀνῆσατο τοῖτον αὐτὰ τὸ χρῶμα εἶδον δὲ
κῶν ἀμελείᾳ τῷ πρότερον ἔχοντο· καὶ πῶλα-
βὼν οἶκαδε, πάντα μὲν αὐτὰ προσῆγε τὰ ῥύματα, πᾶσι
δὲ λυτρεῖς ἐπὶ ῥατο καθαίρειν· καὶ τὸ μὲν χρῶμα με-
ταβαλεῖν ἔκ εἶχε, νοσεῖν δὲ τὸ πονεῖν παρῆσκεύατεν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι μένουσιν αἱ φύσεις ὡς προσήλθον
τὴν ἀρχὴν.

76. Χελιδὼν καὶ Κορώνη.

Χελιδὼν καὶ Κορώνη πρὸς ἄλλους ἐφιλονεῖκον· ὅπου
ἦσαν δὲ ἡ Κορώνη πρὸς αὐτὴν εἶπεν, ἀλλὰ τὸ
μὲν σὺν ἄλλοις τὴν ἑαρινὴν ὥραν ἀνδεῖ, τὸ δ' ἐμὸν σῶ-
μα καὶ χειμῶνι παρῆλείνεται.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἡ πῶλασις τῷ σώματι εὐπρε-
πείας κρείπων ὀξί.

77. Βούταλις.

Βούταλις ἀπὸ τίνος θυερείδος ἐκρέματο· νυκτερεῖς δὲ
προσελθῶσα, ἐπυνθάνετο τὴν αἰτίαν, εἰ ἦν ἡμέρας
μὲν ἡσυχάζει, νύκτωρ δὲ ᾄδει· ἥ δὲ μὴ μάττω τῷτο
ποιεῖν λεγούσης, ἡμέρας γὰρ ποιεῖ ᾄδουσα συνελήφθη, καὶ
διὰ

διὰ τὸ τοῦ ἀπ' ἐκείνου ἐσπορευνίσθαι ἢ νυκτεῖς εἶπεν, ἀλλ' ἔτι νῦν σε φυλάττειν δεῖ, ὅτε μηδὲν ὄφελος, ἀλλὰ πρὶν ἢ συλληφθῆναι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ὅτι τοῖς ἀτυχήμασιν ἀνόνητος ἢ μετάνοια.

78. Κοχλίας.

Γεωργεῖ παῖς ὥπια κοχλίας· ἀκέσας δὲ αὐτῷ τρυζόντων, ἔφη, ὦ χάρις ζῶα, τῇ οἰκίῳ ὑμῶν ἐμπροσθεν, αὐτοὶ ἄδειε;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πᾶν τὸ πρὸς καὶ ἐν δρώμενον ἐποινείσιν.

79. Γυνὴ καὶ θεραπεύειν.

Γυνὴ χρεὼ οἰκτρὸς θεραπευίδας ἔχουσα, ταύτας ἐώθει νυκτὸς ἐγείρειν ὅτι τὰ ἔργα, πρὸς τὰς τῇ ἀλεκτριούων ὥδαι· αἱ δὲ συνεχῶς τὴν πίνην ταλαιπωρεῖναι, ἔγνωσαν δὲ ὅτι τὴν οἰκίαν ἀπικτεῖναι ἀλεκτριούων, ὡς ἐκείνη νυκτὶ ὄξανισάνθη· τὴν δὲ σπονδαὶ συνέβη δ' αὐταῖς τὸ τοῦ διαπραξαμένης χαλεπωτέρας φειπεῖν τοῖς δεινοῖς. ἢ γὰρ δεσπότις ἀγνοῖσα τὴν ἀλεκτριούων ὥσαν ἐννυχώτερον ταύτης αἴεσι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος διλοῖ, ὅτι πολλοῖς ἀνθρώποις τὰ βελεύματα κακῶν αἵτια γίνεσθαι.

80. Γυνὴ Μάγθ.

Γυνὴ μάγθ· καὶ θεῶν μύθων ἀποτροπασμὸς ἐπαγγελιομένη, πολλὰ διετέλει πειθεῖσα, καὶ κέρδιον ἐντεῦθεν ἔχουσα. γράψαντες δὲ πνευσι αὐτῇ ἀσεβείας, εἶλον καὶ ἐπαγγέλλεσθαι ἀπὸ αὐτῆς εἰς θάνατον· ἰδὼν δὲ τις ἀπαγγελίαν αὐτῇ ἔφη, ἥ τις τῶν θεῶν ὁργαίς ἀποτρέψειν ἐπαγγελιομένη, πῶς ἐδὲ ἀνθρώπων βελὴν μαλαπεῖσαι ἠδυνήθη;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος διλοῖ, ὅτι πολλοὶ μέγιστα ἐπαγγέλλονται, μηδὲ μικρὰ ποιῆσαι διενέμμενοι.

81. Γαλή.

Γαλή· εἰς ἐργαστήριον εἰσελθὼσα χαλκίως, τῷ ἐκεί κειμένῳ περικύβητε ῥίνῳ· ξυμμήνης δὲ τῇ γλώττης αἵμα πολὺ ἐφέρετο· ἢ δὲ ἠδελῶ, νομίζουσα τι τῇ σιδίρῳ ἀφαιρεῖν, ἄχρως δὲ πανήλως πᾶσαν τὴν γλῶσσαν ἀνήλωσεν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς τοὺς ἐν φιλονεικίαις ἑαυτοὺς ἐλάττωσιν.

82. Γεωρ.

82. Γεωργός.

Γεωργός τις σκάπων χρυσίῳ παύειτο· καθ' ἑκάστω
ἐν τῷ γλῶ ὡς ἔω' αὐτῆς εὐεργετηθεὶς, ἔσεφε. πρὸς
ἡ Τύχῃ ὁπσαῖσα, φησὶν, ὦ ἕτος, τί τῇ γῇ τὰ ἐμὰ δώσῃ
προσαναπίθῃς, ἅπερ ἐγὼ σοι δίδωκα, πλατῖσαι σε βυλο-
μήρη; εἰ γὰρ ὁ καιρὸς μεταβάλοι, καὶ πρὸς ἑτέρας χεῖρας
ᾗτε σὸν τὸ χρυσίον ἔλθοι, οἶδ' ὅτι τῶιχαυτὰ μετὴν
Τύχῃ μίμψῃ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι χρὴ τὴν εὐεργεσίαν ὀφειλόμεν καὶ
τέτῳ χάριτας ἀποδιδόναι.

83. Ὀδοιπόροι.

Δύο τινὲς καὶ τὴν αὐτὴν ὁδοιπόρουν, καὶ πατέρων πέλε-
κων εὐρήνιος, ἅπερ ὁ μὴ εὐρὴν παρῇ καὶ αὐτὴν
μὴ λέγειν, εὐρηκα, ἀλλ' εὐρήκαμην· μὲν μικρὸν ὅτε πελ-
δόντων αὐτοῖς ᾗτε τὸ πέλεκυν ἀποβεβληκότων, ὁ ἔχων
αὐτὸν διωκόμην, πρὸς τὴν μὴ εὐρήνῃα συνοδοιπόρουν ἔ-
λεξεν, ἀπολώλαμην· ὁ δ' εἶπεν, ἀπέλωλα λέγε, ἔκ ἀπο-
λώλαμην· καὶ γὰρ καὶ ὅτε τὸ πέλεκυν εὗρες, εὐρηκα ἔλεγες,
ἔκ εὐρήκαμην.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ μὴ μεταλαμβάνοντες ᾗτε
ἐντυχημάτων, εἰδ' ἐν τῇ συμφορᾷ βέλαιοι εἰσι φίλοι.

84. Βάτραχι.

84. Βάτραχοι.

Δ Τ'ο Βάτραχοι ἀλλήλοις ἐγγεινίων. ἐνέμοντο δ', ἵ
 μὲν εἰς ἐν βαθύα καὶ πύρρον τ' ὁδὸν λίμνη, ὁ δ' ἐν
 ὁδῷ, μικρὸν ὕδωρ ἔχων. καὶ δὴ τῷ ἐν τῇ λίμνῃ θαλάσσης
 φθάνειν πρὸς αὐτὸν μελαβῆναι, ὡς ἂν ἀσφαλεστέ-
 ρος διαίτης μελαλάβῃ, ἐκείνῳ ἐκ ἐπείδειο, λέγων,
 δυσάποσπαστος ἔχην τ' τῷ τότε ζυνηθείας, ἕως δ' ἐζυ-
 νῇ, ἅμαξαν παρελθῶσαν αὐτὸν ζυνηθῆσαι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος Δημοῖ, ὅτι καὶ τῷ ἀνθρώπων οἱ τοῖς παύ-
 λους ὀπχυφρῆντες, φθάνουσιν ὠπολλύμενοι πρὶν ὅππῃ
 βέλτιον τετραπύδαί.

85. Μελιπτεργός.

Εἰς μελιπτεργεῖον τις εἰσελθὼν τῷ κεκρημένῳ ἀπὸ
 τοῦ κρηλίου ἀφείλετο. ὁ δὲ ἐπανελθὼν ἐπειδὴ
 τὰς κυφάλας εἶδεν ἐρήμους, εἰσηλὼν τὸ κατ' αὐτὰς διερε-
 νώμενος. αἱ δὲ μέλισσαι ἀπὸ τ' νομῆς ἐπανήκουσαι, αἱ
 κατέλαβον αὐτὸν, τοῖς κέντεροις ἔπαιον, καὶ τὰ χεῖρα
 διεπῆκον· ὁ δὴ πρὸς αὐτὰς, χάρισα ζῶα, τ' μὲν κλέ-
 ψαντα ὑμῶν τὰ κηρία ἀδῶον ἀφήκατε, ἐμὲ δὲ τ' ὅππῃ
 μελέμενον ὑμῶν πλήθετε;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος Δημοῖ, ὅτι ἔγωγε ἀνθρώπων τινὲς δι' ἄγ-
 ροιαν τὺς ἐχθρὺς μὴ φυλαγόμενοι, τὺς φίλους ὡς ὅπ-
 βέλους ἀποθνήσκει.

86. Ἄλ-

86. Ἀλκυόν.

Ἀλκυὼν ὄρνις ὅτι φιλέρημος, αἰετὴ θαλάττῃ δια-
 τωμένη. ταύτῃ λέγεται τὰς τῶν ἀνθρώπων θήρας
 φυλαττομένην, ἐν σκοπέλοις ὡς θαλαπῖσις νεοηχοποιεῖ-
 δαι. καὶ δὴ ποτε ἦκλειν μέλλουσα, ἐνεοηχοποίησατο. Ὁξελθού-
 σης δὲ ποτε αὐτῆς εἰς νομὴν Κυμέων τὴν θάλασσαν ὑπὸ
 λάτρει κυματωθεῖσαν πνεύματι, ὑπερδιδῶναι τὴν κα-
 λιάς, καὶ ταύτῃ ὀπκλύουσαν τὰς νεοηχίας διαφθεῖραι. ἢ
 δ' ἐπανελθούσα, καὶ γνῶσα τὸ περὶ χθὲν, εἶπε, δειλαία ἐ-
 γώγε, ἢ τις τὴν γῆν ὡς ὀπκύνον φυλαττομένη, ὅτι
 ταύτῃ κατέφυγον, ἢ μοι πολλῶν γέρονεν ἀπιστοτέρω.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μύθος δηλοῖ, ὅτι καὶ τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι τὰς ἐχ-
 θρὰς φυλαττομένοι, λανθάνουσι πολλῶν χαλεπωτέρων τῶν
 ἐχθρῶν φίλοις ἐμπήγοντες.

87. Ἀλκυόν.

Ἀλκυόν ἐν τινι ποταμῷ ὑπάρχει. διατείναν δὲ τὰ
 δίκτυα καὶ τὸ ρεῦμα πειλαβὼν ἐκατέρωθεν, κα-
 λωδίῳ περσίδας λίθον, τὸ ὕδωρ ἐπὶ πῆν, ὅπως οἱ
 ἰχθύες φεύγοντες ἀπὸ φυλάκων τοῖς βράχοις ἐμπήσω-
 σι. καὶ ὅτε πῆν τὸν τόπον οἰκύνων τῆς δευτέρου τῆς το-
 ποιῆντα, ἐμύφειο ὡς τὸ ποταμὸν δουλέντα, καὶ διὰ τὸς ὕ-
 δωρ μὴ συγχωρεῖντα πίναν. καὶ ὅς ἀπεκρίνατο, ἀλλ' εἰ μὴ
 ὅπως ὁ ποταμὸς ταχέηται, ἐμὲ δειήσει λιμνήσονται ἀπε-
 δανεῖν.

Ἐπι-

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ τῶν πόλεων οἱ δημαγωγοὶ τό-
τε μάλιστα ἐργάζονται, ὅταν τὰς παλείδας εἰς χάσιν πε-
ρίωσιν.

88. Πίθηκ' καὶ Δελφίς.

Ἐθὺς ὄντι τοῖς πλείοσι Μελισαῖα κυνίδια καὶ π-
θήκες ἐπάγειται πρὸς Ὀδυσσεύην τῇ πλῇ, πλείω
ἢ εἶχε σὺν ἑαυτῷ καὶ πίθηκον. ἡμιμύων δ' αὐτῶν καὶ
τὸ Σύνιον τὸ δ' Ἀθηναίων ἀκρωτήριον, χερμῶτα (φοδὴν)
συνέειχε γνέσθαι. τὸ δ' νεὸς πελιδναίης, καὶ πάντων δια-
κολυμβώνων, ἐνήχετο καὶ τὸ πίθηκ'. Δελφίς δέ τις αὐ-
τὸν διασέμνυτο, καὶ ἄνθρωπον ἔτι ὑπολαβὼν, ὑπελ-
δαὶ ἀνείχε διακομίζων ἐπὶ τὴν χερσον. ὡς δ' ἔτι τὸ πε-
ραιᾶ ἐνέειχε τὸ καὶ Ἀθηναίων ἐπὶ νηὶ, ἐπὶ νηὶ δ' ἐπὶ
πύθην, εἰ τὸ καὶ ὅτι Ἀθηνᾶς τὸ καὶ ἐπὶ πύθην, καὶ
λαμπερὴν ἐνταῦθα τετυχηκέναι γονέων, ἐπὶ νηὶ, εἰ καὶ
τὸ περαιᾶ ὅτι πύθην. ὑπολαβὼν δ' ὁ πίθηκ' οὐκ ἐν-
δρωπε αὐτὸν λέγειν, ἔφη, καὶ μάλα φίλον ἔστι αὐτῷ καὶ
συνήθη. καὶ ὁ Δελφίς ἐπὶ τοσούτῳ ψεύδει ἀγανακτήσας
κατακρίων αὐτὸν ἀπέκλινεν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἄνδρας, οἱ τὴν ἀλήθειαν οὐκ εἰδότες
ἁπατὰν νομίζουσιν.

89. Μῦθος

89. Μῦαι.

ΕΝ τινι ταμείῳ μέλιθ' ἐκχυθίηθ', Μῦαι πρεσ-
πῖσαι καλῆϊδον. ἐμπαλῶτων ᾧ ἥϊ ποδῶν ἀνα-
πῖναι ἐκ εἶχον, ἀποπνιγόμεναι δ' ἔλεγον, ἀθλιαὶ ἡ-
μῆς, ὅτι διὰ βροχῆας βροῶσιν ἀπολλύμεθα.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλοῖς ἡ λιχνεία πολλῶν κα-
κῶν αἰτία γίγνεται.

90. Ἐρμῆς καὶ Ἀγαλμασιοποιός.

Ερμῆς γινῶναι βελορόμενθ' ἐν τινι τιμῇ παρ' ἀνθρώ-
ποις ὅτιν, ἦκεν οἷς Ἀγαλματοποιῷ, ἐαυτὸν εἰχάσας
ἀνθρώπῳ, καὶ θεασάμενθ' ἀγαλμα τῷ Δίδῳ, ἡρώτα, πό-
σε πῖς αὐτὸ πείσεται δύναται· τῷ δ' εἰπόντιθ' ὀρεχ-
μῆς, γλάσας, πόσε τὸ δ' Ἡρας ἔφη; εἰπόντιθ' ᾧ,
πλείονθ'· ἰδὼν καὶ τὸ ἐαυτῷ ἀγαλμα, καὶ νομίσας, ὡς
ἐπεδὴ ἀγγελός ἐστι Θεῶν καὶ κερδῶθ', πολὺν αὐτῷ πρὸς
τοῖς ἀνθρώποις εἶναι τὸ λόγος, ἤρετο πῶς αὐτῷ. ὁ δ' Ἀ-
γαλμασιοποιός ἔφη, εἰάν τέ τις ὠνήσῃ, καὶ τῷτον πρεσβή-
ειν σοὶ δίδωμι.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἀνδρα κινόδοξον, ἐν εἰδεμῶ πρὸς
ἄλλους ὅτινα τιμῇ.

91. Ἐρ-

91. Ἑρμῆς καὶ Τειρεσίας.

Ἑρμῆς βελόμωθε τὴν Τειρεσίην μαντικὴν εἰ ἀληθῆς ὅτι γινώσκαι, κλέψας τὰς αὐτῆς εὖς ἔξ ἀγροικίας, ἦκεν αἰς αὐτὸν εἰς αἶσυ ὁμοιωθεὶς ἀνθρώπων, καὶ παρ' αὐτῷ κατήχηθη. τὸ δ' ὅτ' ἦν βοῶν ἀπωλείας ἀγγελθείσης τῇ Τειρεσίᾳ, ἐκείνος φθασαλὼν τὸ Ἑρμῆν, ὕψηλ' ἔλεγε, οἶον ὅτι τινὰ περὶ τῆς κλέψεως κατόμῳρος, καὶ τὴν παρῆντα φράζην αὐτῷ, ὃν τινὰ ἂν τὸ ἐνέειπεν διασῆλαι. ὁ δ' Ἑρμῆς τὸ μὲν παρῆντα διασάμῳρος Ἀείδον ἔξ ἀειτέρων ὅτι τὰ δεξιὰ διήπτάμῳρος, ἔφρασε. τῷ δ' ὀφθαλμῷ μὴ περὶ αὐτὸς ἔειπεν, ἐκ δευτέρου Κορώνῳ εἶδεν ὅτι τινος δίδου καθημῳρῶν, καὶ ποτὲ μὲν ἄνω βλέπεσαν, ποτὲ δ' ὑπὸ τὴν γῆν καθαμῳρῶν, καὶ τῷ μάντι φράζει, καὶ ὅς ὑποπτεῖν εἶπεν, ἀλλ' αὐτὴ γὰρ ἡ Κορώνη διόμνυται τὸν τε ἑσπερὸν καὶ τὴν γῆν, ὥς εἰαν σὺ δόλῃς τὰς ἐμὰς ἀπολήφομαι βίης.

Ἐπιμύδιον.

Τέτρω τῷ λόγῳ χρήσιον ἂν τις πρὸς ἄνδρα κλέπῃ.

92. Κύνες.

Ἐχων τὶς δύο Κύνες, τὸ μὲν ἕτερον θηρεύειν ἐδίδασκε, τὸ δ' ἄλλο λοιπὸν οἰκοφυλακεῖν. καὶ δὴ εἰ ποτὲ ὁ θηρευτικὸς ἤγρευε τι, καὶ ὁ οἰκὸς συμμετεῖχεν αὐτῷ τὸ δουῖν. ἀνακλῖντος δ' ὅτ' ἡ θηρευτικὴ κακείνον ὄνειδίζοντες, εἰ γὰρ αὐτὸς μὲν καθ' ἑκάστῳ μοχθεῖ, ἐκείνος δ' ἐκ μηδὲν πόνων τοῖς αὐτῷ τρέφεται πόνοις, ὑπολαβὼν αὐτὸς εἶπεν, μὴ ἐμὲ, ἀλλὰ τὸ δεσπότην μέμψαι, ὅς ὑπονοεῖν με ἐδίδασκεν, ἀλλὰ πόνας ἀλλοτρίους ἐδίδει.

Ἐπι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ τῶν νέων οἱ μηδὲν ὀπιστάμενοι,
καὶ μεμνητοὶ εἰσιν, ὅταν αὐτοὺς οἱ γονεῖς ἔτι ἀγῶνισιν.

93. Ἀνὴρ καὶ Γυνή.

Ἐχων τις γυναῖκα, πρὸς τὰς κατ' οἶκον ἀπαντὰς ἀπε-
χθῶς ἔχεσαν, ἠβελήθη γινῶναι εἰ καὶ πρὸς τὰς πα-
τρῶς οἰκίας ἔτι διάκειται. διὸ δὴ καὶ μετ' εὐλόγου προ-
φάσεως πρὸς τὴν αὐτῆς αὐτὴν ὑποτέλλει πατέρα. καὶ δ' ὁ-
λίγας ἡμέρας ἐπανελθούσης αὐτῆς, ἐπυνθάνειο, πῶς
πρὸς τὰς ἐκεῖ διεχθύνειο. καὶ ὁ φανερὸς, ὡς οἱ βεκόλοι καὶ
οἱ ποιμένες μετ' ἐπιδόκοντο. πρὸς αὐτὴν ἔφη, ἀλλ' ὦ
γύναι, εἰ τέτοις ἀπεχθάνη, οἱ ὄρθρῳ μὲν τὰς ποιμένας
ἐξελαύνουσιν, ὁ δὲ ὅσον εἴσας, τὴν χερὶν προσδοκᾷν περὶ τέ-
των, οἷς πᾶσαν συνδιέτειβες τὴν ἡμέραν;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔτι πολλάκις ἐκ τῶν μικρῶν τὰ
μεγάλα, καὶ τῶν προσηλῶν τὰ ἀδύνατα γινώσκειται.

94. Εἰφός καὶ Λύκος.

Ἐρισθὺς ὑπερήσασα τὴν ποιμήνην, ὑπὸ Λύκου κατεδιδόκειο.
ὁππότερα φησὶ πρὸς αὐτὸν, εἶπεν, ὦ Λύκε, ἐπεὶ πέ-
πνησμαι ὅτι σὸν βροῦμα φησὶν εἶναι, ἵνα μὴ ἀπιδῶς ἀπο-
δάνω, αὐλήσων προῖον ὅπως ὀρεχθήσωμαι. καὶ ὁ Λύκος αὐ-
κύνιστος, καὶ τὸν Εἰφόν ὀρεχθήσας, οἱ κύνας ἀκύνιστος, τὸν Λύ-
κον ἐδίδωκεν. ὁ δὲ ὅππότερα φησὶ τῇ Εἰφῶ φησὶ, δικαίως
ταῦτά μοι γίνεσθαι. ἔδωκε γὰρ μετὰ γένεσιν ὄντα, αὐλήσων
μὴ μιμηθῆναι.

Ε

Ἐπι-

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ τ' μὴ πρὸς αὐτὴν πεφύκεισιν ἀμελῆντες, τὰ δ' ἑτέρων ὀπτηθεύειν πειρώμενοι, δυσυχίαις περιπίπτουσιν.

95. Καρχῖνος καὶ Ἀλώπηξ.

Καρχῖνος ἀπὸ τῆς θαλάσσης ἀναβὰς ἐπὶ πινος ἐνέμετο τότῃ. Ἀλώπηξ δ' ἐλμώθησα, ὡς ἐδεάσατο, προσελθὼσα ἀνέλαβεν αὐτόν. ὃ δ' ἑλλαν καλαβιβρώσκειται, ἔφη, ἀλλ' ἔγωγε δίκαια πέπονθα, ὅς θαλάττιος ὢν χερσαῖος ἠβελήθην γινέσθαι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ τῶν ἀνθρώπων οἱ τὰ οἰκῆα καλιπύοντες ὀπτηθεύματα, καὶ τοῖς μηδὲν προσήκεισιν ὀπτηθεύειν εἰκότως δυσυχίουν.

96. Κισσαρωδὸς.

Κισσαρωδὸς ἀφυῆς ἐν οἴκῳ κεκονιαμῆν συνήθως ἄδων καὶ ἀντηχέσης αὐτῷ τ' φωνῆς ὥσπερ (φρόδρα εὐφρανος εἶναι). καὶ δι' ἐπαρθείας ἐπὶ τέτῳ, ἔγνω δεῖν καὶ δεῖν αὐτὸν ὀπτηθεύειν. ἀφικόμενος δ' ὀπτηθεύσας, καὶ κακῶς ἄδων πάνυ, λίθοις αὐτὸν ἐξώσαντες ἀπέλασαν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔτι καὶ τῶν ῥητόρων ἔτι οἱ ἐν ῥητορῇ δοκῶντες εἶναι πρὸς, ὅταν ἐπὶ τὰς πολιτείας ἀφίκωνται, ἐδενδὸς ἀξιοῖ εἶσι.

97. Κλί.

97. Κλέπται.

Κλέπται εἰς πᾶσι εἰσελθόντες οἰκίαν, ἐδὲν εὖρον εἰ μὴ ἀλεκίρυθνα, καὶ τέτον λαθόντες ἀπήεσαν. ὁ δὲ μέλλων, ὥς αὐτῷ δύεσθαι, ἐδείτο, ὡς ἂν αὐτὸν ἀπολύσῃσι, λέγων, χρήσιμ' ἔστι τοῖς ἀνθρώποις, νυκτὸς αἰτὸς ὅπῃ τὰ ἔργα ἐγείρων. οἱ δὲ ἔφασαν, ἀλλὰ διὰ τοῦτο σε μᾶλλον θυομένο· ἐκείνους γὰρ ἐγείρων, κλέπειν ἡμᾶς ἐκ ἑαυτοῦ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ταῦτα μάλιστα τοῖς πονηροῖς ἐναντιῖται, ἃ τοῖς χρηστοῖς ὅτιν εὐεργετήματα.

98. Κορώνη καὶ Κόραξ,

Κορώνη φθονήσασα Κόρακι, ὅτι πρὶν δι' οἰωνῶν πῶς ἀνθρώποις μαντεύεται, καὶ διὰ τοῦτο μαρτυρησάμενος ὡς περὶ ἐργῶν τὸ μέλλον, διασαμῆναι τινὰς ὁδοιπόρους παειόντας, ἤκεν ὅπῃ τι δένδρον, καὶ σῆσα, μεγάλως ἐκράξεν. καὶ ὁ πρὸς τὸ φωνεῖν ὁπισθεφέντων, καὶ καταπλαγχόντων, ὑποπυχὼν τις ἔφη ἀπίωμένο ὃ ἔπει, Κορώνη γὰρ ὅτιν ἢ τις κέκραγε, καὶ οἰωνισμὸν ἐκ ἑαυτοῦ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔτι καὶ τῶν ἀνθρώπων οἱ τοῖς κρείττοσιν ἀμυλλώμενοι, πρὸς τῶν τῶν ἴσων μὴ ἐφικέσθαι, καὶ γέλωτα ὀφλισκάνουσι.

99. Κορώνη καὶ Κύων.

Κορώνη Ἀθλιῶ θυέσα, κύνε δὲ ἐξίασιν ἐκάλει. ὃ δὲ
 πρὸς αὐτὴν ἔφη, πῶς μάττω τὰς θυσίας ἀναλίσκεις;
 ἢ γὰρ Θεὸς ἔτω σε μισεῖ, ὥς καὶ ἐγὼ συντρέφων σοι οἰ-
 ωνῶν τὴν πίσιν φειλεῖν· καὶ ἡ Κορώνη πρὸς αὐτὸν, διὰ
 τοῦτο μᾶλλον αὐτῇ θυώ, ἵνα διαλλαγῇ μοι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος Δημοῖ, ὅτι πολλοὶ διὰ κέρδους τὰς ἐχ-
 θρὰς εὐεργετοῦν καὶ ὀκνεῖσιν.

100. Κόραξ καὶ Ὀφίς.

Κόραξ τροφῆς ἀπορῶν, ὥς καὶ ἐξένειν πνι εὐηλίφ
 τόπῳ Ὀφιν κοιμώμενον, τῦτον καὶ ἀπὸ τῆς ἡρπασ-
 τῆς δὲ ὅπως εὐφραίνεται, καὶ δακόντος αὐτὸν, ἀποθνήσκον μέλ-
 λων ἔρηκε, δέλαια ἔρωγε, ὅς ποιεῖτον εὖρον ἐριμῶν,
 οὗτος δὲ καὶ ἀπόλλυμαι.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἄνδρα διὰ θησαυρῶν εὕρησιν ὅτι σω-
 τηεῖα κινδυνεύσαντα.

101. Κολοῖδες καὶ Πεισιτεραί.

Κολοῖδες ἐν τινι περὶ τερεῶν περὶ τρεῶν ἰδὼν καλῶς τρε-
 φομένας, λευκὰς αὐτὸν ἦλθεν, ὥς καὶ αὐτὸς τὴν αὐ-
 τῆς διὰ τῆς μετὰ τὴν φέρουσα. αἱ δὲ, μέχρι μὴ ἡσύχαζεν, οἶ-
 μιναι,

ρῶνται, ὥς τε ἐρῶν αὐτὸν ἔϊ, ὡροσένιο· ἐπεὶ δὲ ποιεῖ κλα-
δόμην· ἐφ' ὧν γὰρ, τῶν καὶ αὐτὰ τῶν αὐτῶ γνῶσαι φύ-
σιν, ἐξήλασαν παύσαι· καὶ ὅς ἀπολυχὼν τ' ἐν αὐτῇ τρε-
φῆς ἐπενῆκε πρὸς τὸς Κολοίους πάλιν. καὶ κῆνοι διὰ τὸ
χρῶμα αὐτὸν ἐκ ὀπηνόγεις, τ' μετ' αὐτῷ διαίτης ἀπεΐρ-
ξαν, ὥς τε δυοῖν ὀπιδυμήσαντα, μηδετέρας τυχεῖν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι δὲ καὶ ἡμᾶς τοῖς ἐαυτῷ ἀρκέ-
σαι, λογιζομένους, ὅτι ἡ πλεονεξία πρὸς τὴν μὴ εἶν ὠφε-
λεῖν, ἀφαιρεῖται καὶ τὰ ὡροσένια πολλάκις.

102. Κολοίος.

Κολοίον τις συλλαβὴν, καὶ Νῆας αὐτῷ τ' πῶς αὐτῶν
τῶν ἐαυτῷ παρέδωκε παιδῶν. ὁ δὲ μὴ ὑπομείνας τὴν
μετ' ἀνθρώπων δίσταν, ὥς πρὸς ὀλίγον ἀδείας ἐτυχε
φυγῶν ἦκεν εἰς τὴν ἐαυτῷ καλιάν. ὥς τε
δισμῶ τοῖς κλάδοις, ἀποπῆναι μὴ δύναμιν, ἐπειδὴ
ἀποθνήσκον ἐμελλε, πρὸς ἐαυτὸν ἔφη, δέλαι· ἐξωγε
ὅς τὴν παρ' ἀνθρώποις μὴ ὑπομείνας δελείαν, ἐλαττο-
ἐμαυτὸν τ' ζῶνς σερήσας.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τινὲς ἔδω' ὅτε μερίων κινδύνων
ἐαυτοὺς βελόμηναι ῥύσασθαι, εἰς μείζους ὥς πῶς ἐπὶ πῶς.

103. Ἐρμῆς.

Ζεὺς Ἐρμῆν ὡροσένιε πᾶσι τοῖς τεχνίταις ψεύδους
φάρμακον ἐλχεῖν. ὁ δὲ τῷτο τείρας, καὶ μέτρον ποιή-
σας.

σας, ἴσον ἐχάσθ' ἐνέχεν. ἐπεὶ δ' ὁ μόνος τῶ σκυτέως ἰσότη-
 φθύνειτο, πολὺ κατέλελθετο φάρμακον, ὅλῳ λαβὼν τὴν
 θυεὶαν ἐνέχεν αὐτῷ· καὶ τότε συνέβη τὸς τεχνίτας
 ἀπαντας φεύδεται, μάστιγα δ' ὅ πάντων τὸς σκυτέας.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος περὶ φευδολόγους τεχνίτας.

104. Ζεὺς.

Ζεὺς πλαῖσας τὸς ἀνθρώπους, τὰς μὲν ἄλλας διαδύ-
 σεις αὐτοῖς ἐνέδθηκε, μόνῳ δ' ἐνδεῖναι τὴν αἰσχ-
 ρίαν ἐπιλάθην. διὸ καὶ μὴ ἔχων πόρην ἂν αὐτὴν εἰσαγά-
 γῃ, διὰ τῶ ὄχλου αὐτὴν εἰσελθεῖν ἐκέλευσεν. ἡ δὲ τὸ
 μῦθον ὡς ὅτε ἀντήλεχτο ἀναξιοπαθεῖσαι, ἐπεὶ δὲ Ἐφρόδω
 αὐτῇ ἐπέκειτο, ἔφη, ἀλλ' ἔγωγε ὅπῃ ταύταις εἰσερχομαι
 καὶ ὁμιολογίαις, ὥς ἂν ἔρωε μὴ εἰσελθῇ, ἂν δ' εἰσελθῇ,
 αὐτῇ ἔξελεύσομαι ὡς αὐτῇ. ἀπὸ δὲ τότε συνέβη
 πάντας τὸς πόρνας ἀναισχύντας εἶναι.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τὸς ἄνδρες ἐρωῖται κατεχουμένους
 ἀναισχύντας εἶναι συμβαίνει.

105. Ζεὺς.

Ζεὺς γὰρ κς τελῶν, πάντα τὰ ζῶα εἰς αὐτὸν μόνος δ' ἔ-
 χειρῶν ὑπερησίου, διαπερὼν καὶ αἰτίαν καὶ ὑπερήσε-
 ως ἐπιωδάνειο αὐτῆς, πῖντο χάριν αὐτῇ ὅπῃ τὸ δειπ-
 νον ἐπαρτήσθην. καὶ δ' ἐπὶ σπῆς, οἶκον οἶκον, οἶκον αἰ-
 εῖτος, ἀγανακτῆσαι καὶ αὐτῆς, κατεδίκασε καὶ οἶκον βα-
 ρύνειν.

Ἐπιμύδιον.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ πολλοὶ ἢ ἀνθρώπων αἰεὶν-
ται μᾶλλον λιτῶς παρ' ἑαυτοῖς ζῶν, ἢ παρ' ἄλλοις πο-
λυτελεῶς.

106. Λύκῳ καὶ Πρύδαλον.

Λύκῳ ὑπὸ κυνῶν διχθεὶς, καὶ κακῶς πάγων, ἐβέ-
βλητο. τροφῆς δ' ἀπορῶν, διασάμνῳ Πρύδαλον,
εἶδεντο πιδὸν ἐκ τῶ ὄρεος ῥέοντι αὐτῷ ποταμῷ κομίσαι.
εἰ γὰρ σὺ μοί, φησι, δώσεις πιδὸν, ἐγὼ τροφῇ ἐμαυτῷ εὖ-
ρήσω. τὸ δ' ὑποτυχὸν ἔφη, ἀλλ' εἰάν ἐγὼ πιδὸν ὀψώσῃ
σὺ καὶ τροφῇ μοι χρήσῃ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἀνδρα κακῆς, δι' ὑποκρίσεως ἐνε-
δρεῖν οἶσα.

107. Λαγωοί.

Λαγωοὶ ποτὲ πολεμεῖντες Ἀελοῖς παρεχάλεν εἰς συμ-
μαχίαν Ἀλώπεκας. αἱ δ' ἔφασαν, ἐβουθήσαμεθα
ἂν ὑμῖν, εἰ μὴ ἡδαιμεν τίνες ἐστέ, καὶ τίσι πολεμεῖτε.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς κρείττοσι φιλονεικεῖντες ἑ-
αυτῶν σωτηρίας καταφρονεῖσι.

108. Μύρ-

σας, ἴσον ἐκάσῳ ἐνέχεν. ἐπεὶ ὅ μόνος τῷ σκυτέως ἰσολέ-
φθεν, πολὺ κατελέλητο φάρμακον, ὅλῳ λαβὼν τῆς
δυείας ἐνέχεν αὐτῷ· καὶ τότε συνέβη τὸς τεχνίτας
ἅπαντας ψεύδεσθαι, μάλιστα ὅ πάντων τὸς σκυτέας.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ψευδολόγους τεχνίτας.

104. Ζεὺς.

Ζεὺς πλάσας τὸς ἀνθρώπους, τὰς μὲν ἄλλας διαθή-
σης αὐτοῖς ἐνέθηκε, μόνῳ δ' ἐνθεῖναι τὴν αἰσχό-
νῳ ἐπελάθειο. διὸ καὶ μὴ ἔχων πόθεν ἂν αὐτὴν εἰσαγά-
γῃ, διὰ τοῦ ὅχλου αὐτὴν εἰσελθεῖν ἐκέλευσεν. ἡ δὲ τὸ
μὲν ὡς ὅσον ἀντήλεθον ἀναξιοπαθεῖσα, ἐπεὶ δὲ Ἐφύρα
αὐτῇ ἐνέκειτο, ἔφη, ἀλλ' ἐγὼ γε ὅπῃ ταύταις εἰσερχομαι
ἢ διουλοῖαις, ὡς ἂν ἔρωις μὴ εἰσελθῇ, ἂν δ' εἰσελθῇ,
αὐτὴ ἐξελεύσομαι ὄφρα τίκα. ἀπὸ δὲ τότε συνέβη
πάντας τὸς πόρους ἀναισχύντας εἶναι.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δημοῖ, ὅτι τὸς ἄνδρες ἔρωις κατεχόμενοι
ἀναισχύντες εἶναι συμβαίνει.

105. Ζεὺς.

Ζεὺς γὰρ μετὰ τῶν, πάντα τὰ ζῶα εἰς αὐτὸν μόνος ὅς τ'
Χελώνης ὑπερησάκης, διαπορῶν τ' αἰτίαν τ' ὑπερήσε-
ως ἐπιωδάνειο αὐτῆς, πίνῃ χάριν αὐτῇ ὅπῃ τὸ δειπ-
τον ἐπαφύρειο. τ' ὅς εἰπέσης, οἶκῳ φίλῳ, οἶκῳ ἁ-
εῖτος, ἀνακαλῆσαι καὶ αὐτῆς, κατεδίχατε τ' οἶκον βα-
πτίσαντες φέρειν.

Ἐπιμύδιον.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ πολλοὶ ἢ ἀνθρώπων αἰρῶνται μάλλον λιπῶς παρ' ἑαυτοῖς ζῶν, ἢ παρ' ἄλλοις πολυτελεῶς.

106. Λύκος καὶ Περσεύς.

Λύκος ὑπὸ κυνῶν διηχθεὶς, καὶ κακῶς πάγων, ἐβέβηκε. τροφῆς δ' ἀπορῶν, διασάμηντος Περσεύς, εἰδοὺς πόλιν ἐκ τῆς ὁδοῦ ῥέοντος αὐτὸς ποταμῷ κομίσαι. εἰ γὰρ σὺ μοί, φησι, δώσεις πόλιν, ἐγὼ τροφῇ ἐμαυτοῦ εὐφραίσομαι. τὸ δ' ὑποτυχὸν ἔφη, ἀλλ' ἐὰν ἐγὼ πόλιν ὁπιδῶ σοι σὺ καὶ τροφῇ μοι χρηθήσῃ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἀνδρα κακῆς, δι' ὑποκρίσεως ἐνεδρεύοντα.

107. Λαγωοί.

Λαγωοὶ πόλιν πολεμῶντες Ἀελοῖς παρεχάμενοι εἰς σύμμαχον Ἀλάπηκας. αἱ δ' ἔφασαν, ἐβοηθήσαμεν αὐτοῖς, εἰ μὴ ἡδόμεν τίνες ἐστέ, καὶ τίσι πολεμεῖτε.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς κρείττοσι φιλοεικύντες ἑαυτοῖς σωτηρίας καταφρονῶσι.

108. Μύς.

108. Μύρμηξ.

Μύρμηξ ὁ νῦν, τὸ παλαιὸν ἀνθρωπότητι, καὶ τῇ γεωργίᾳ διωκεῖται ὡς ἐχθρὸς, καὶ πῶς ἰδίῳις ἡρεῖται πίνουσι, ἀλλὰ καὶ τὰς τῆς γῆς γειτόνων καρπὸν ὑφηρεῖτο· ὁ δὲ Ζεὺς ἀγανακτῆσας ὅτι τῇ τύτῃ πλεονεξία, μέλει μὲν φασιν αὐτὸν εἰς τὴν τῶν ζῴων, ὁ Μύρμηξ καλεῖται. ὁ δὲ τὴν μορφὴν ἀλλάξας, τὴν διάθεσιν ἐμετέβαλε. μέλει γὰρ τῷ νῦν τὰς ἀρούρας δεῖν τὰς τῆς γῆς ἐτέρων πόδας συλλέγειν, καὶ αὐτὸς ἀποδησαυεῖν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ φύσιν πονηροὶ, καὶ τὰ μάλιστα τὸ εἶδος μεταβληθῶσι, καὶ τρόπον ἐμεταβάλλονται.

109. Νυκτεῖς καὶ Γαλή.

Νυκτεῖς ὅτι γῆς πεσῶσα, ὑπὸ Γαλῆς συνελήφθη, καὶ μέλλουσα ἀναιρεῖσθαι, περὶ σωτηρίας ἐδεῖτο. καὶ τῇ φαιδρίας, μὴ δύνασθαι αὐτὴν ἀπολῦσθαι, φύσιν γὰρ πάντων πῶς πῶς πολεμῶν, αὐτὴ ἐλεγον, ἐκ ὅρων ἀλλὰ μὴ εἶναι. καὶ ἔτιως ἀφείδη. ὕστερον δὲ πάλιν πεσῶσα, καὶ ὑπὸ ἐτέρου συλληφθεῖσα Γαλῆς, μὴ βρωθῆναι ἐδεῖτο. καὶ τῇ εἰπέσθαι, ἀπασιν ἐχθραίνειν μυσίν, αὐτὴ μὴ Μῦς, ἀλλὰ Νυκτεῖς ἐλεγον εἶναι, καὶ πάλιν ἀπελύθη. καὶ ἔτιως συνέβη δις αὐτῇ ἀλλαξασθῆναι τὸ ὄνομα, σωτηρίας τυχεῖν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι δεῖ καὶ ἡμᾶς μὴ τοῖς αὐτοῖς ἀεὶ ἐπιμύδην λογισμοῦς, ὡς οἱ τοῖς κακοῖς συμμεταχθῆναι. ἡ δὲ πολλὰ καὶ τὰς κινδύνους ἐκφεύγῃ.

110. Ὀδύς.

110. Ὀδιδιπόροι.

Οδοιπόροι κατὰ πνα αἰμαλὸν ὁδεύοντες ἦλθον ὅπ-
 πνα σκοπᾶν. καὶ κείθεν θεασάμενοι φρύγανα πέρ-
 ρωθεν ὅππλινον, ναῦν εἶναι μεγάλῃ ῥήθησαν. διὸ δὴ
 προσέμυρον, ὡς μελλέσης αὐτῆς προσορμίζεσθαι. ἐπεὶ δὲ
 ὑπὸ ἀνέμου φερόμενα τὰ φρύγανα ἐγλυτέρω ἐχρῆστο, ἐκέ-
 ραυν, ἀλλὰ πλοῖον ἐδόκεν βλέπειν. ἐξενεχθέντα δὲ αὐ-
 τὰ, φρύγανα ὄρτα ἰδέντες, πρὸς ἀλλήλους ἐφασαν, ὡς ἄ-
 ρματίῳ ἡμεῖς τὸ μηδὲν ὄν προσεδεχόμεθα!

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι εἰς ἀπερόπ-
 ης δοκῆντες πορεύεσθαι εἶναι, ὅταν εἰς πτεῖραν ἔλθωσι, ἐ-
 λινὸς εὐείσκειναι ἄξιοι.

111. Ὀνθ ἄγειθ.

ΟΝθ ἄγειθ Ὀνον ἰδὼν ἡμερον ἐν τινὶ εὐηλίῳ τῷ
 πρῶ, προσελθὼν αὐτὸν ἐμακάριζεν, ὅτι τε τῇ
 εὐεξίᾳ τὸ σῶμαίθ, καὶ τῇ τ' τροφῇ ἀπολαύσει. ὕστερον
 δὲ ἰδὼν αὐτὸν ἀχθοροῦντα, καὶ τὸν ἡλάτῳ ὅππθεν ἐπό-
 μενον, καὶ ῥοπαίοις αὐτὸν παίοντα, ἔφη, ἀλλ' ἔρωγε ἐκέ-
 τεσευδαιμονίζω. ὁρῶ γὰρ ὡς ἐκ ἀνευ κακῶν μεγάλων
 τῶν εὐδαιμονίαν ἔχεις.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐκ ἐστὶ ζηλωτὰ τὰ μὲν κινδύνων
 καὶ ταλαιπωριῶν κέρδη.

112. Ὀνοι.

112. Ὅροι.

Οἱ πολὲ ὅτι τὰ συνεχῶς ἀχθοροεῖν καὶ ταλαιπωρεῖν, πρέσβης ἐπεμψαν πρὸς τὴν Δία, λύσιν ἧς πόων αἰτέμηναι. ὁ δὲ αὐτοῖς ὁπιδείξει βελομήνῃ, ὅτι τὰτο ἀδύνατόν ὄσιν, ἔφη, τότε αὐτὲς ἀπαλλαγίσεσθαι κακοπαθείας, ὅταν ἑρῆνιες ποιήσωσι ποταμόν. κακείνῃ αὐτὸν ἀληθεύειν ὑπολαβόντες, ἀπ' ἐκείνης καὶ μέχει τὴν νῦν ἔνθα ἂν ἔρην ἐτέρων ἰδῶσιν ὄνων ἐλαῦδα καὶ αὐτοὶ πεισιτάμηναι ἔρυσιν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐκείνῃ τὸ πεπρωμένον ἀντερεῖ πεισίον ὄσιν.

113. Ὀνῃ καὶ Ἀλώπηξ.

Οἱ Ὀνῃ ἐνδυσάμενῃ λεοντὴν φερίει τὰλλα ἧς ζώων ἐμφοβῶν, καὶ δὴ δεασάμενῃ Ἀλώπηκα, ἐπερᾷ καὶ ταύτῃ δειδῖησθαι. ἡ δὲ (ἐπύχανε γὰρ αὐτὴ φοβεῖται καὶ πρὸς αὐτὸν ἔφη, ἀλλ' εὖ ἴδω, καὶ ἐγὼ ἂν σε ἐφοβήθην, εἰ μὴ ὀγκωμένῃ ἦκιστα.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔνιοι ἧς ἀπαιδέυτων, τοῖς ἔξω δοκῶντες τινες εἶναι, ὑπὸ τῇ ἰδίας γλωσσῇ ἐλέγχονται.

114. Ὀνῃ

114. *ΟνΘ κὺ Βάτραχοι.

*ΟΝΘ ξύλα βασιζων, διέβαινέ πνα λίμνῳ. ὀλιωή-
 σας ὃ ὡς χαίεπεσεν, ἔξανασιῶναι μὴ δυνάμηνΘ,
 ὠδύρετό τε κὺ ἔσευεν. οἱ ὃ ἐν τῇ λίμνῃ Βάτραχοι τ' σε-
 παλμῶν τέτε ἀκέραντες, ὡ ἔπες, ἔφασαν, κὺ τί ἂν ἐπι-
 ησας, εἰ τοσούτον ἐνλαῦδα χρόνον διέτεινεις, ὅσον ἡμεῖς,
 ὅτε πρὸς ὀλίγον πεσὼν ἔπως ὀδύρη;

*Επιμύδιον.

Τέτῳ τῷ λόγῳ χεῖσαι' ἂν τις πρὸς ἄνδρα ῥάθυ-
 μον, ἐπ' ἐλαχίστοις πόνοις δυσφορεῖντα, αὐτὸς τὸς πλείους
 ῥαδίως ὑφιστάμηνΘ.

115. *ΟνΘ κὺ Κόραξ.

*ΟΝΘ ἡλκωμύθῳ τ' νῶτον, ἐν πνι λαιμῶνι ἐνέμετο.
 Κόρακῳ ὃ ὅπκαθίσαντο αὐτῷ, κὺ πὲ ἔλκῳ
 ξαίνο·το, ὃ *ΟνΘ ὠχέτο κὺ ἡλατο. τῷ ὃ ὀνηλάτε
 πόρρωθεν ἰσαμύρε κὺ γελῶντο, Λύκῳ παειὼν αὐτὸν
 εἶδε, κὺ ἔφη, ἀθλιοὶ ἡμεῖς, οἱ καὶ μόνον ὀφθῶμεν αὐτῷ
 διωκόμεθα, τέτῳ δὲ κὺ πρῶσεγγελάσιν.

*Επιμύδιον.

*Ο μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ χακῆρτοι τῷ ἀνθρώπῳ κὺ μό-
 νον φανέντες δηλοῖ εἶσιν.

116. *ΟνΘ

116. Ὀνοϑὺ καὶ Ἀλώπηξ.

ὈΝΟϑὺ καὶ Ἀλώπηξ κοινωνίαν συνδέμενοι πρὸς ἀλλήλους ἔξῃλθον εἰς ἄγρην. Λέοντι δ' αὐτοῖς τυχόντος, ἢ Ἀλώπηξ τ' ἐπιρρημὸν ὄρωσα κίνδυνον παρέλθουσα πρὸς Λέοντι, παραδίδωσεν αὐτῇ τ' Ὀνον ὑπόσχεσθαι εἰάν αὐτῇ τὸ κίνδυνον ἐπαγγέλληται. τῷ δὲ ἀπολύσας αὐτὴν φήσας, ἐκείνη παραγυῖσα τ' Ὀνον εἰς τὴν πάλιν ἐμπροσθεν παρεσκέυασε, καὶ ὁ Λέων ὄρων ἐκῆνοι φεύγειν μὴ δυνάμενον, πρὸς τὴν τὴν Ἀλώπεκα συνέρχεται εἰς ὅπως ὅτι τ' Ὀνον ἐτρέπη.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς κοινωνοῖς ἐπιβελεύοντες, λανθάνουσι πολλάκις καὶ αὐτὲς περσάπολιντες.

117. Ὀρυς καὶ Χελιδών.

ὈΡΥς Ὀφεις ὡς εὐρεῖσα, ὅπμιελῶς ἐκδεσμένας ἐξέκολλα. Χελιδὼν δὲ διασαμμένη αὐτῇ, ἔφω, ὦ ματαία, τί ταῦτα τρέφεις, ἅπερ αὐξήσεται, αὐτὸ σὺ πρὸς τῆς ἀδικεῖν ἄρξῃ; ;

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἀτιθάσεντος ἔστιν ἢ πονηρία, καὶ τὰ μέγιστα ενεργητῆται.

118. Κάμηλος.

Ὅτε παρῶν Κάμηλος ὤφθη, οἱ ἄνθρωποι φοβηθέντες, καὶ τὸ μέγεθος χαλαπαραγύτες, ἔφευγον. ὡς δὲ χεῖρες περιόνησεν συνείδον αὐτῆς τὸ παρῶν, ἐδάρρησαν μέχλει τὴν ὤμην· αἰδομένοι δὲ καὶ μικρὸν τὸ ζῶον ὡς χολῶν ἐκ ἔχει, εἰς ποσσὶν χαλαφρομένης ἦλθον, ὡς τε καὶ χαλινὰς αὐτῇ ὠλεθέντες, παισὶν ἐλαύνειν δεδώκασιν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τὰ φοβερά τῃ παραγμάτων, ἢ συνήθεια εὐχαφρονήτα ποιεῖ.

119. Ὄφεις.

Ὅφεις ὑπὸ πολλῶν ἀνθρώπων παλίσμυτος, τῷ Διὶ ἐπετύχανεν. ὃ δὲ Ζεὺς πρὸς αὐτὸν εἶπεν, ἀλλ' εἰ πρότερον παλήσαντα ἐπληξας, ἐκ αὐτοῦ δεύτερος ἐπεχίρῃσει τὸ ποιεῖν.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς πρότερον ὀπίσθινον ἀντιστάμενοι τοῖς ἄλλοις φοβέροι γίνονται.

120. Πεισιτερά.

Πεισιτερά δὲ τῇ συνεχομένη, ὡς ἐδεάσατο ἔν πνι τόπῳ κελύφει ὕδατος γεγενημένην, ἐνόμισεν ἀληθινὴν εἶναι, διὸ καὶ πολλῶν τῶν ῥοζῶν ἐνέχθειρα, ἔλαθεν ἐαυτῇ.

G

τῇ

τινὶ τῶ πῖνακι ἐμπεσῶσα, ὥς κὶ τῷ περὶ αὐτῆς φει-
κλαδέντων χαλαπέσειν ὅτι γινώ, κὶ ὑπὸ πνϙ τῷ φει-
τυχέντων ἀλῶναι.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔνιοι τῷ ἀνδρώπων διὰ φροδῶς
φροσύμας, ἀφεισκέπῃως φεύγματος ἐγχειρήσεις ἐμ-
βάλλουσιν ἐαυτὸς εἰς ἀλεθρον.

121. Πεισερὰ κὶ Κορώνη.

Πεισερὰ ἐν πνι φειτερεῶνι τρεφομένη, ὅτι πολυτε-
νία ἐφρυάπητο. Κορώνη δ' αὐτῆς ἀκέσασα, ἔφη,
ἀλλ', ὦ αὖτη, πέπαυστο ὅτι τέτω σμενυνομένη. ὅσω γὰρ αἱ
πλήονα τέκνης, πσάτω κὶ πλείους λύπας συνάγεις.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι κὶ τῷ οἰκετῷ δυσμύχισταί εἰσιν,
ἔσοι ἐν τῇ δαλείᾳ πολλὰ τέκνα ποιεῖσιν.

122. Πλέσθ.

Πλέσθ δύο θυγατέρας ἔχων, τ' μᾶς ἀποδαγέσκει
θρηνέσας ἐμιδωσάλο. τ' ὅ ἐτέρας παιδὸς λεγέσκει,
ὥς ἀθλιαὶ ἡμεῖς, αἱ γε αὐταί, ὧν ὅτι τὸ πένθθ, θρηνεῖν
ἐκ ἰσμῶν, αἱ ὅ μὴ προσήκοντα ἔτω φροδῶς κόπτονται.
ἡ μήτηρ ἔφη, μὴ θαύμαζε τέκνον, εἰ αὖται ἔτω θρηνε-
σιν, ὅτι γὰρ ἀργυρίῳ τὰτο πεισθ.

Ἐπ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐνιοὶ ἦν ἀνθρώπων διὰ φιλαργυρίαν ἐκ ὀκισθῆναι ἀλλοτρίας συμφορὰς ἐργολαβεῖν.

123. Ποιμὴν.

Ποιμὴν ἐλάσας εἰς πῖνα δρυμῶνα τὰ πρόβατα, ὑποσφάσας ὑπὸ δρυὸν τὸ ἱμάτιον, καὶ ἀναβὰς, τὴν καρπὸν κατέσειε. τὰ δὲ πρόβατα ἐδίοντο τὰς βαλάνους, ἐλάσαν καὶ τὰ ἱμάτια συγκαταφαρόντα· ὁ δὲ ποιμὴν κατήβατο, ὡς εἶδε τὸ γεγονός, ὅς τις κήρυκα, ἔφη, ζῶα, ὑμεῖς τοῖς λοιποῖς ἐτα εἰς ἐδῆτας παρέχετε, ἐμὲ δὲ τρέφοντες ὑμεῖς καὶ τὸ ἱμάτιον ἀφείλεσθε.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ πολλοὶ ἦν ἀνθρώπων διὰ φιλαργυρίαν, τὰς μηδὲν προσκομίσας ἐυεργιστοῦντες καὶ ἦν οἰκείων φάυλα ἐργάζοντα.

124. Ἀλκιεύς καὶ Σμαρίς.

Αλκιεύς τὸ δίκλυνον χαλάσας ἐν τῇ θαλάττῃ, ἀνήγαγε καὶ Σμαρίδα. Σμαρὴ δὲ ἔσα, ἰκέτευεν αὐτὸν νῦν μὴ κτελεῖν αὐτήν, ἀλλ' ἐᾶσαι διὰ τὸ Σμαρὴν τυφλὴν εἶναι, ἀλλ' ὅταν αὐξυνθῇ καὶ μεγαλή, φησὶ, θύσμαι, συλλαβεῖν με θυρήσῃ, ἐπεὶ καὶ εἰς μέζονά σοι ἀφέλειαν ἴσμαι· καὶ ὁ ἀλκιεύς εἶπεν, ἀλλ' ἐξῶγε ἄνεις ἂν εἴλω, εἰ τὸ ἐν χειρὶ παρὲς κέρδιον, καὶ σμαρὴν ἢ, τὸ προσδοκώμενον καὶ μέγα ὑπάρχει ἐλπίσιν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἀλόγιστος ἂν εἴη, ὁ δὲ ἐλπίζει
μεῖζον, τὰ ἐν χερσὶν ἀφείς σμικρὸν ὄντα.

125. Ἰππῶ καὶ Ὀνῶ.

Ἀνθρώπος τις εἶχεν Ἰππον καὶ Ὀνον. ὁ δευόντων ᾗ ἐν
τῇ ὁδῷ εἶπεν ὁ Ὀνῶ πρὸς Ἰππῶ, ἄρην ἐκ τῶ ἐμὴ
βάρεος, εἰ δέ τις εἴδῃ με σὺν, ὁ ᾗ ἐκ ἐπείδει, ὁ ᾗ Ὀνῶ
πρὸς αὐτὸν ἐκ τῶ κόπῃ ἐτρεψύτησιν· τῷ ᾗ δισπότῃ πάντα
ἐπιδέντος αὐτῷ, καὶ αὐτῷ τὴν Ὀνον δορᾶν, θρῆνων ὁ Ἰπ-
πῶ ἐβόα, οἱ μοι πρὸς παναθλίῳ, τί μοι συνέβη πρὸς ταλαι-
πύρῳ; μὴ θελήσας γὰρ μικρὸν βάρος λαβεῖν, ἰδὲ ἅπαν-
τα βαρύνω, καὶ τὸ δέσμα.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τοῖς μικροῖς οἱ μεγάλοι συγκα-
τανύντες, ἀμφοτέρω σωθήσονται ἐν βίῳ.

126. Ἀνθρωπῶ καὶ Σάτυρῶ.

Ἀνθρώπος τις πρὸς Σάτυρον οἰλίαν ποιησάμεν, ὅ
συνεδίαν ὑπὸ αὐτῷ χειμῶν ᾗ καὶ ψυχῇ γυ-
μᾶν, ὁ ἀνθρωπῶ τὰς χεῖρας αὐτῷ προσφέρειν πρὸς
μαλὶ ἀπὸ πρὸς, τῷ ᾗ Σάτυρος ἐπερωτήσαντο, δι' ἡ αἰτία
ταῦτο προσήκει, ἔφη, τὰς χεῖρας με δερμίνω ἐκ τῶ κρύου
καὶ μικρὸν ᾗ ἐδεσμάτω περιμῶ προσεσνεχθέντο, ὁ ἀν-
θρώπος προσφέρειν πρὸς μαλὶ ἐφύσα αὐτό. πυνθανομένη
ᾗ πάλιν δι' ἡ αἰτία ταῦτο προσήκει, ἔφη, τὸ ἐδεσμα κατὰ
ψυχῇ. ὑπολαβὼν ᾗ ὁ Σάτυρος, ἀλλ' ἔγωγε, ἔφη, ἀπὸ
τῆ

τῶ νῦν ἀποτάσσεμαί σε τῇ φιλίᾳ, ὅτι ἐκ τῆ αὐτῆς σό-
μαίῃ τὸ θερμὸν καὶ τὸ ψυχρὸν ὑξάζεις.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος διλοῖ, ὅτι δεῖ φεύγειν ἡμᾶς τὰς φιλίας,
ὡς ἀμφίβολός ἐστιν ἢ διάδοσις.

117. Ἀλώπηξ καὶ Δρυοτόμος.

Ἀλώπηξ κυνηγὸς φεύγουσα, καὶ ἐν ἐρημίᾳ πολὺν δρό-
μον αἰνύουσα, ἀνδρα δρυοτόμον εὐείσκη ἐν ταύτῃ,
ὃν καδικέτευε τῇ κρύψει αὐτῇ, τῇ δὲ ὑποδείξαί τε αὐ-
τῇ τὴν ἐαυτῆς χαλύβην, εἰσελθούσα ἐκρύπτετο εἰς τὰς ρωτί-
ας. ὅτῃ δὲ κυνηγετὴν ἐλθόντων καὶ ἐρωτῶντων τὸν ἀνδρα,
ἕως τῇ μὴ φωνῇ ἠρεῖτο μηδὲν εἰδέναι, τῇ δὲ χεὶρ αὐτῆς
τὸ πονεῖν ὑποδείκνυ. οἱ δὲ μὴ προσχύντες, ἀπὸ λῆθους ὡς
χρήμα. ὡς ἔν ἐιδεν αὐτὸς ἡ Ἀλώπηξ παρελθούσας,
ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ σπηλαίου. μεμφομένη δὲ αὐτῷ ἐκείνῃ, ὡς
συνδείσαν μὴ δι' αὐτῆς, χάριτας δὲ αὐτῷ ἐκ ὁμολογῶσαν,
ἡ Ἀλώπηξ ὅπως ἐρρεῖσιν, ἔφη, ὡς ἔπος, ἀλλ' ἐγὼ γε ἠδὲν
ἂν σοὶ χάριτας, εἰ τοῖς λόγοις ὅμοια καὶ τὰ ἔργα τῇ χεὶρὶ
καὶ τὰς τρέπας εἶχες.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος πρὸς τὴν χρῆσιν μὴ ἐπαγγελλομένης τοῖς
λόγοις, ἐναντία δὲ ποιεῖν τὰς τοῖς ἔργοις.

118. Ἀνθρωπὸς καὶ θηρίον ἀγέλαμα.

Ἀνθρωπὸς τις ξύλινον ἔχων θεδν, καδικέτευε τὸ ἀγα-
θὸν πρὸς αὐτὸν, ὡς ἔν ταῦτα ἔφαρκεν, καὶ ἔδεν
ἵππον ἐν περὶ τῆς θύρας, θυμωθεὶς, ἄρως αὐτὸν ὅτῃ σκελῶν,
ἔρριψεν

ἔρριψεν εἰς τὸ ἕδαφος. περισχευάσης ἔν τ' κεφαλῆς, καὶ
αὐτίκα κλαδείσης, χρυσὸς ἔρριψεν ὅτι πλεῖσθ, ὄντως
δὴ βωμάτων ὁ ἀνθρώπος ἐβόα, στεβλὸς ὑπάρχεις ὡς γ
οἶμαι, καὶ ἀγνάμων. τιμῶντά σε γὰρ ἡ καὶ με ὠφέλησας,
τυπήσασίνα δὲ σε πολλοῖς καλοῖς ἀμείβῃ.

Ἐμπύσιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐκ ὠφελήσῃ τιμῶν πενηθὲν ἀνδραποκ, πύπλων ὃ αὐτὸν μᾶλλον ὠφελήσῃ.

129. *Ανθρῶπος καὶ Κύων.

ΑΝΘΡΩΠΟΣ ΤΙΣ ΗΠΟΙΜΑΖΕ ΔΕΙΠΝΟΝ ΕΞΙΔΩΝ ΤΙΝΑ ΤῶΝ
 ΦΙΛΩΝ ΑΥΤΟΥ ΚΑΙ ΟΙΚΕΙΩΝ· Ο δὲ ΚΥΩΝ ΑΥΤῷ ἄλλοι
 ΚΥΝΑ ΕΚΑΛΕΙ, ΛΕΓΩΝ, ὦ ΦΙΛΕ, ΔΕΥΘΡ ΣΥΝΔΕΙΠΝΗΣΟΝ ΜΟΙ.
 ὁ ΠΡΟΣΕΛΘΩΝ, ΧΑΙΡΩΝ ΙΣΤΑΤΟ, ΒΛΕΠΩΝ δὲ ΜΕΓΑΛΗΝ ΔΕΙΠΝΟΝ,
 ΡΟΩΝ Εἰ Τῇ ΚΑΡΔΙΑ, ΒΑΒΑΙ, ΠΟΣΗ ΜΟΙ ΧΑΡΕ· ἄΡΤΙ ὙΞΑΠ-
 ΤΑΙΩΣ ΕΦΑΝΗ! ΤΡΑΦΗΣΟΜΑΙ ΤΙ Ζῶ, ΚΑΙ ΕἰΣ ΚΟΡΩΝ ΔΕΙΠΝΗΣΩ,
 ὥΣΤΕ ΜΕ ΑΥΕΙΟΝ ΜΗΔΑΜῶ ΝΕ ΠΕΙΝᾶΣΑΙ· ΤΑΥΤΑ ΚΑΘ' ΕΑΥΤῷ
 ΛΕΓΟΝΤΙ· Τῷ ΚΥΝΟΣ, ΚΑΙ ἄΜΑ ΛΕΙΟΝΤΙ· ὁ ΚΕΡΚΟΝ, ὥΣ ΕἰΣ Τῷ
 ΦΙΛΟΝ ΔΑΡΡΥΝΤΙ· ὁ ΜΑΓΗΡ, ὥΣ ΕἰΔΕ ΤῶΤΟΝ ὅΤΙ ΔΕ ΚΑΚῶΣ
 ΣΕ ΤΙΛΩ ΚΕΡΚΟΝ ΘΕΙΣ ΕΕΦΟΝΤΑ, ΚΑΛΙΑΧΩΝ Τὰ ΣΧΕΛΗ ΑΥΤῷ, ἔΡ-
 ΡΙΨΕ ΘΩΡΑΧΗΜΑ ΕΞΩΘΕΝ Τῷ ΣΥΡΕΙΔΩΝ· ὁ Δὲ ΚΑΛΙΩΝ, ὁ
 ΠῆΚΑ ΜΕΓΑΛΩΣ ΚΡΑΪΖΩΝ. Τῷ ΤΙΣ Δὲ ΚΥΝΩΝ Τῷ ΚΑΘ' ὍΣΤΙ
 ΑΥΤῷ ΣΥΝΑΝΤΩΝΤΩΝ, ΕΠΗΡΩΤΑ, ΠῶΣ ΕΔΕΙΠΝΗΣΑΣ, ΦΙΛΙ·
 ὁ Δὲ ΤΡΕΨ ΑΥΤὸΝ ὙΠΟΛΑΒΩΝ, ἔΦΗ, Εἰ Τὴ ΠΟΛΛῆΣ ΠΟΣΕΩΣ
 ΜΕΙΣΥΘΗΣ ὙΞῶ ΚΟΡΩΝ, ὅΤΙ ΤΙΛΩ ὍΣΤΕΝ ΑΥΤΙΛΩ ὍΤΙΝ ὙΞῆΛΩΝ,
 ΕἰΔΩ.

Ἐπιμύθιον.

Ο μὲν δὲ Σηλοῖ, ὅπ' ἔδει θαρσύνειν τοῖς ἐξ ἀλλοτε-
ων ἐν πολέῳ ἐπεβλάβαινον.

130. Ἀλιεύς.

Αλιεύς ἀλιευτικῆς ἀπειροῦ, λαβὼν αὐλὸς καὶ δίχτυα παρελθὺς εἰς τινὶ θάλασσαν, καὶ τὰς ὅπῃ τινος πέτρας, τὸ μὲν περὶ τὴν ἡλὶν, νομίζων πρὸς τινὶ ἡδυφωνίαν τὴν ἰχθύας ἐφάλλεσθαι. ὡς δ' ὅπῃ πολὺ διατεινόμενος ἦν, ἐδὲν ἀποδέμνυντο τὴν αὐλὸς ἀναλαμβάνει τὸ ἀμφιβληστρον, καὶ βαλὼν καὶ τὴν ὑδατι, πολλὰς ἰχθύας ἤγρευσεν. ἐκβαλὼν δὲ αὐτὰς ἀπὸ τῆς δικτύου, ὡς εἶδε πηδῶντας, ἔφη, ὦ κλέμματα ζῶα, ὅτε δὲ πίπαιμαι, τί το ποιεῖτε.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς τὴν ᾧ λόγον, καὶ ᾧ καὶ ἐν τῇ περὶ πηδῶντας.

131. Βουκόλος.

Βουκόλος ἀγέλιω ταύρων βόσκων, ἀπώλεσε μόνον. περὶ τῶν δὲ πᾶσαν τινὶ ἔρημον, διέτειβεν ἐρευνᾶν. ὡς δὲ ἐδὲν εὐρεῖν ἐδυνήθη, ἠύξατο τῷ διῷ, ἂν τὴν λαβόντα μόνον κλέπτῃ ὑποδείξει, εἴποιεν εἰς θυσίαν προσάξουσιν. καὶ δὴ ἐρχόμενος εἰς τινὰ δρυμῶνα, εὐεῖσκει Λέοντα κατεδίοντα τὸ μόνον. ἐμφοβὸς ἐν γυμνότητι, καὶ μέγα δειλιάσας, ἐπάρει τὰς χεῖρας αὐτοῦ εἰς τὸ ἔρπον, εἶπεν, ὦ Ἰσπορία Ζεῦ, ἐπιγυλαμῖν σοι εἴποιεν δώσῃν, εἰ ἂν τὴν κλέπτῃ εὐρω. νῦν ταῦτόν σοι θυσίην ὑποσχέμαι, εἰ ἂν τίς τὰς χεῖρας ἐκφύγῃ.

Ἐπὶ

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἄνδρας δυσυχεῖς, οἱ τινες ἀπορῶντες
καὶ εὐχόμενοι εὐρεῖν, εὐρόντες δὲ ζητούντων ἀποφύγεῖν.

132. Κόραξ.

Κόραξ νοσῶν ἔφη τῇ μητρὶ, μή τις εὖχῃ τῷ Θεῷ, καὶ
μὴ θρήνη, ἢ δ' ἀπολαβῆσαι ἔφη, τίς σε, ὦ τέκνον,
τῷ Θεῷ ἐλεήσει; ἦνος γὰρ κρέας ὑπὸ σὺ γὰρ ἐκ ἐκλάπῃ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δημοῖ, ὅτι οἱ πολλὰς ἐχθρὰς ἐν βίῳ ἔχοντες,
ἰδένα φίλον ἐν ἀνάγκῃ εὐρήσασιν.

133. Ἀεῖός.

Ἵππεράνωθεν πέτρας Ἀεῖός ἐκαδέζετο, Λαγῶν δὲ
ρεῦσαι ζητῶν. τῷτον δὲ τις ἔβαλε τοξεύσας, καὶ τὸ
μυρὸν βέλος ἐν τῷ αὐτῷ εἰσῆλθεν· ἡ δὲ γλυφὴ σὺν τοῖς
πτεροῖς πρὸ τῶν ὀφθαλμῶν εἰσῆκε· ὁ δὲ ἰδὼν ἔφη, καὶ τῷ
μοι ἑτέρῃ λύπη, τὸ τοῖς ἰδίῃς πτεροῖς ἐναποδνήσκειν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δημοῖ, ὅτι δεινὸν ὄσιν, ὅταν πρὸς ἐκ τῶν ἰδι-
ῶν κινδυνεύσῃ.

134. Τόπιος

134. Τέτηξ καὶ Μύρμηκες.

ΧΕΙΜΩΝΘ ὥρα ἤν' οἶπων βραχύνων, οἱ Μύρμηκες ἔφυγον. Τέτηξ δ' λιμώνων ἦται αὐτὸς τροφῷ. οἱ δ' Μύρμηκες εἶπον αὐτῷ, διὰ τί τὸ θέρθ' εἰσὶν ἡσυχίας τροφῷ; ὃ δ' εἶπεν, ἐκ ἐρόλαζον, ἀλλ' ἦδον μεσικῶς. οἱ δὲ γλάσαντες εἶπον, ἀλλ' εἰ θέρεις ὥραις ἡύλεις, χημῶνΘ ὀρχεῖ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι εἰ πνα ἀμελεῖν ἐν παντὶ παρῆματι, ἵνα μὴ λυπηθῇ καὶ κινδυνεύσῃ.

135. Σκώληξ καὶ Ἀλώπηξ.

ΟΤΩ πηλῶ κρυπτόμενος Σκώληξ, εἰς γλῶττις ἐλθὼν ἔλεγε πᾶσι τοῖς ζώοις, ἰατροῖς εἰμι φαρμάκων ὀπτήμων, οἷός ἐστιν ὁ ἤν' Θεῶν ἰατροῖς Παίων· καὶ πῶς, εἶπεν Ἀλώπηξ, ἄλλους ἰώμενος, σαρτὸν χολὸν ὄνεια ἐκλαῖω;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἐὰν μὴ πρέχεις ἢ πείρα, πᾶς λόγος ἀεὶ εἰς ὑπέρβλην.

136. Ὀρνις χρυσοτόκος.

ΟΡΝΙΔΑ τις εἶχεν ὡς χρυσοῦ τίκισαν· καὶ νομίσας ἔνδον αὐτῆς ὄσκειν χρυσοῦ ἐν, κτείννας εὑρηκεν ὁμοίαν τῇ λαίπῳ ὀρνίθῳ. ὃ δ' ἀφρόον πλεῖστον ἐλπίσας εὐρήσεν, καὶ τὴν μικρὴν ἐσέτηλα ἐκείνη.

Ἐπιμύθιον.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι δεῖ τοῖς παρῶσιν ἀρκεῖσθαι, καὶ τὴν ἀπλησίαν φεύγειν.

137. Λέων καὶ Ἀλώπηξ.

Λέων γρηθῶσας, καὶ μὴ δυνατόν διαρκέσαι αὐτῷ εἰς τροφὴν, ἔγνω δι' ὀπνοίας τι περᾶσαι. καὶ δὴ ὥρῳ γρούμμος ἐν σπηλαίῳ τινί, καὶ κατακλεισθὶς, προσεποιεῖτο νοσεῖν· ὥρα γρούμμος ἐν τῷ ζῶα ὀπισκίψας χάριν, συλλαμβάνων κατήλθιν αὐτά. πολλῶν ἐν ζῶων ἀναλαδέντων, Ἀλώπηξ τὸ τέχνασμα τοῦτο γνῶσα, παρεγγύησεν πρὸς αὐτὸν καὶ σῶτα ἔξωθεν τοῦ σπηλαίου ἐπυνθάνετο πᾶς ἔχει. τῷ δ' εἰπόντι, χακῶς, καὶ τὴν αἰτίαν πυνθανομένην, δι' ἣν ἐκ εἰσέρχεται, ἡ Ἀλώπηξ ἔφη, ὅτι ὁρῶ ἵχθυον πολλῶν εἰσόντων, ἐλίων δ' οὐκ εἰσόντων.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ φρόνιμοι καὶ ἀνδράπων ἐκ τεκμηρίων προσεγγύμμοι τὰς κινδύνους ἐκφεύγουσιν.

138. Λύκος καὶ Γεαυς.

Λύκος λιμῶπων περὶ ζῆτον τροφὴν· γρούμμος δὲ καὶ ἄτινα τόπον, ἤκεσε παιδίον κλαίοντος, καὶ Γεαυς λεγέσθαι αὐτῷ, παῦσαι τοῦ κλαίειν. εἰ δὲ μὴ, τῇ ὥρᾳ ταύτῃ ὀπιδῶτω σε τῷ Λύκῳ· οἰόμενος δὴ ὁ Λύκος ὅτι ἀληθεύς ἡ Γεαυς, ἔσπετο πολλὴν ἐκδεχόμενος ὥραν. ὡς δ' ἐσπέρα κατέλαβεν, ἀκέσθαι πάλιν τῇ Γεαυς κολακευέσθαι τὸ παιδίον, καὶ λεγέσθαι αὐτῷ, εἰάν τι ληθῇ ὁ Λύκος
δεῦρε,

δεύρο, φονεύσουμεν, ὦ τέκνον, αὐτόν· ταῦτα ἀκέσας ὁ
Λύκῳ ἐπορεύετο, λέγων, ἐν ταύτῃ τῇ ἐπαύλει, ἀλλὰ
μὴ λέγῃσιν, ἀλλὰ διέφρετίεσιν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθῳ πρὸς ἀνδρώπυς, οἱ τινες τὰ ἔργα τοῖς λό-
γοις ἔκ ἔχουσιν ὁμοία.

139. Ἐειφος καὶ Λύκῳ.

Ἐειφος ὅπινεν ὁ δώματις ἐστὶς, ἐπεὶ δὴ Λύκον πα-
ειόνηα εἶδεν, ἐλοιδορεῖ καὶ ἔσκαωπεν αὐτόν. ὁ δὲ
Λύκος ἔφη, ὦ ἕτος, ἔσὺ με λοιδορεῖς, ἀλλ' ὁ τόπος.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλάκις καὶ ὁ τόπος καὶ ὁ καιρὸς
διδῶσι τὰ διεξέως καὶ τὰ ἀμυνόμενα.

140. Ἡμίονος.

Ἡμίονος ἐν χειρὶς παχυδαῖς, ἀνεσκήρτισε βοῶν καὶ
λέγων, παλὴρ μαθεῖν ἵππος ὁ παχυδέρμος, καὶ γὰρ
αὐτῷ ὅλος ἀφωμοιῶδιον. καὶ πότε ἀνάγκης ἐπελθέσης
τρέχειν, ἐπεὶ δὴ τῷ δέματι ἐπαύσατο, τὸ παλὲρ ὄντι ἐν-
δὲς ὑπερμνήσθην.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθῳ δηλοῖ, ὅτι καὶ ὁ χρόνος εἰς δοξαζόμενα φέρη πρὸς
ἐαυτὸν γαμὴν τύχης μὴ ὀπλυνθῆναι, ἀλλ' ἐξαιὶς γὰρ
ἐστὶν ὁ βίος ἕτος.

141. Ὀφιοῦς

141. Ὀφίς καὶ Γεωργός.

Ὀφίς ἐν Γεωργῷ προθύροις φωλεύων ἀνέειλεν αὐτῷ τὸ
νήπιον παιδίον. πίνθος δὲ τοῖς γονεῦσιν ἐγλύετο
μία. ὁ δὲ παῖς ὑπὸ τῇ λύπῃ πελεκυν λαβὼν, ἐμελλεν
τὸ ὄφιν ἐξελεθόντα φονεύσειν. ὡς δὲ ἔκυψε μικρὸν, σπύ-
σας ὁ γεωργὸς τῷ πατάξαι αὐτὸν, ἡσόχησε, μόνον κρέσας
τὴν τῇ τρώγλῃς ὀπὴν. ἀπελεθόντος δὲ τῷ Ὀφείως, ὁ Γε-
ωργὸς νομίσας τὸ ὄφιν μηκέτι μνησικακεῖν, λαβὼν ἄρτον
καὶ ἄλας, ἔθηκεν ἐν τῇ τρώγλῃ. ὁ δὲ Ὀφίς λεπτὸν σует-
ζας, εἶπεν, ἔκ ἐσσι ἡμῖν ἀπάρτι πίστις ἢ φιλία, ἕως αὖ
ἐγὼ τὴν πέτραν ὀρώ, σὺ δὲ τὸ τύμβον τῷ σὺ τέκνε.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ὑδαὶς μίσεις, ἢ ἀμύνῃς ὀπιλανθάν-
νεται, ἐφ' ὅσον βλέπῃ μνημόσυνον, δι' ἐλευπήθη.

142. Σαλπγκλῆς.

Σαλπγκλῆς στρατὸν ὀπισυνάγων, καὶ κρηνηθεὶς ὑπὸ τῇ
πολεμίων, ἐβόα, μὴ κλείνέ με, ὦ ἄνδρες, εἰκὴ
μάτῳ. ἐδένα γὰρ ὑμῶν ἀπέκλινε, πλὴν γὰρ τῷ χαλκῷ
τύττε ἐδὲν ἄλλο κλῶμαι. οἱ δὲ πρὸς αὐτὸν ἔφασαν, ὅτι
τῷτο γὰρ μάλλον τεθνήξῃ, ὅτι σὺ μὴ δυνάμην ποι-
μεῖν, τὸς πάντας πρὸς μάχῳ ἐγείρῃς.

Ἐπιμύδιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πλέον παύσῃ, οἱ τὸς κακὰς ἢ
βαρεῖς δυνάσας ἐπεγείροντες εἰς τὸ κακοποιεῖν.

143. Κῆ.

143. Κάλαμος καὶ Ἑλαία.

Διακατεΐαν καὶ ἰσὺν καὶ ἡσυχίαν, Κάλαμος καὶ Ἑλαία
 ἤειπον. τῷ δ' χαλάμῳ ὀνειδίζουσαν ὑπὸ τ' ἐλαίας,
 ὅς ἀδυνάτῃ καὶ ῥαδίῳς ὑποκλινομένη πᾶσι τοῖς ἀνέμοις, ὁ
 κάλαμος σιωπῶν ἐκ ἐφθέρζεσθαι, καὶ μικρὸν ὑπομείνας,
 πρὶν ἀνεμὸς ἐπνευσὶν ἰσχυρὸς, ὁ μὲν κάλαμος ὑποσφιδεῖς
 καὶ ὑποκλινθεὶς τοῖς ἀνέμοις, ῥαδίως διεσπάθη. ἡ δ' ἐ-
 λαία ἐπρὶν ἀνέτενε τοῖς ἀνέμοις, χαλεκλάδῃ τῇ βίῃ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ πρὸ καμρῷ καὶ τοῖς κρείττοσιν αὐ-
 τῷ μὴ ἀνδιστάμενοι, κρείττους εἰσὶ τοῖς πρὸς μείζονας φι-
 λονεκέντων.

144. Λύκος καὶ Γέρας.

Λύκος λαίμῳ ὅσπερ ἐπεπύγη. ὁ δ' Γέρας μωρὸν παρ-
 ἔξεν εἶπεν, ἡ τιμὴ κεφαλῇ αὐτῆς ὀφθαλμοῖς, τὸ
 ἔστιν ἐν τῷ λαίμῳ αὐτῆς ἐκβάλλοι. ἡ δ' τὴν ὀφθαλμοῖς,
 φιλίχιδες ἔπα, τὸ μωρὸν ἐπεζήτησε. ὅς τις γελάσας καὶ
 τὴν ὀδόντας διέξας, ἀρεῇ σοι μωρὸς, ἔφη, τὸ καὶ μόνον,
 ὅτι ἐκ Λύκος σόμαλος καὶ ὀδόντων ἐξήρες χάραξ σῶμα μω-
 ρὸν παθεῖσαν.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς ἀνδρας, οἱ πνεύσιν ἀπὸ κινδύνου διασω-
 δύντες, τοῖς εὐεργέταις τοιαύτας ἀπονέμει χάριτας.

145. 'Αλέκτορες.

Αλέκτορων δύο μαχομένων πρὶ θεῶν ὀρνίθων, ὃς εἷς τ' ἕτερον κατέβη πώσατο, καὶ ὁ μὲν ἠπτιηθεὶς, εἰς τόπον καλῆσκον ἀπὸν ἀνέβη. ὃ δ' νικῆσας, εἰς ὕψος ἀνέβη, καὶ ἐφ' ὕψηλῃ τοίχῃ σῆς, μεγαλοφώνως ἐβόησεν, καὶ παρ' ἐνδὺς Ἀετὸς κατὰ πηλὸς, ἤρπασεν αὐτόν, ὃ δ' ἐν σκότῳ καρυμμένος, ἀδυνάτως ἔκ τ' ἐξ ἠελίου ἐπέβαινε.

'Επιμύδιον.

'Ο μῦθος δηλοῖ, ὅτι κύριος ὑψηλοῖς ἀνιγιάσεται, ταπεινοῖς δὲ διδωσι χάριν.

146. Γέρων καὶ Θάνατος.

Γέρων πρὸ ξύλου κόψας καὶ ταῦτα φέρων, πολλὰ ὀδὸν ἐβιάζετο. καὶ διὰ τ' πολὺν κόπον ἀποδέμνητο ἐν τόπῳ τινὶ τ' φόνον, τ' Θάνατον ἐπεκαλεῖτο. καὶ δὲ Θανάτε παρὸν, καὶ πυνθανόμενος τὴν αἰτίαν δι' ἣν αὐτὸν ἐβιάσθη, διηλάσας ὁ γέρων ἔφη, ἵνα με τ' φόνον ἄρῃς.

'Επιμύδιον.

'Ο μῦθος δηλοῖ, ὅτι πᾶς ἀνθρώπος φιλόζωος, καὶ καὶ συνηθὲς, καὶ πῶτος ὄντι.

147. Βάτραχοι.

ΒΑΤΡΑΧΟΙ ΔΥΑ ΞΗΡΑΝΘΕΙΣΙΣ Τ' ΛΙΜΝΗΣ ΕΝ ἢ ΚΑΤΩΚΕΝ,
 ΠΕΙΝΕΤΕΝ ΖΗΤῶΝΤΕΣ Πῦ ΚΑΛΑΜΕΥΝΑ, ΚΥ ΕΛΘΟΝΤΕΣ ΕΙΣ
 ΡΕΙΑΡ ΕΑΔΥ, ΚΥ ΚΥΨΑΝΤΕΣ ΚΑΤΩ, ΚΥ ΙΘΑΝΤΕΣ ΤΟ ὙΔΩΡ, Ο ΜΥ
 ΕΙΣ ΣΥΝΕΒΕΛΕΥΕΝ, ΙΝΑ ΠΙΘΗΣΩΣΙ ΠΑΡ' ΕΥΘΥΣ ΚΑΤΩ· Ο Δ' Ε-
 ΠΡΟ ΕΪΠΕΝ, ΕΙ Ξ ΚΥ ΤῆΤΕ ΞΗΡΑΝΘῆ, ΠΩΣ ΔΥΝΗΣΘΗΜΕΘΑ Α-
 ΝΑΔΩΜΑΙ;

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ἀνευ συμβολῆς μὴ ποιεῖν τι.

148. Ἀρνὸς ΚΥ Λύκῳ.

ΑΡΝὸς ΕΦ' ὙΨΗΛῃ Τόπῳ ΕΣΤΑΜΕΝΟ ΛΥΚΟΝ ΚΑΤΩΚΕΝ
 ΠΑΙΔΟΝ ΤΙΝΩ ὈΔὸν ἔσκωπῆ, ΚΥ ΘΗΡΙΟΝ ΚΑΚΟΝ ΑΠΟ-
 ΚΤΛΑΙ ΚΥ ΑἰΜΑΒΟΡΕΝ, Ο Ξ ΛΥΚῳ ΣΕΡΑΦΗΣ, ΕΪΠΕ ΠΡὸς Αἰ-
 ΤΟΝ, Ε ΣΥ ΜΕ ΛΟΙΣΘΕΙΣ, ΑΛΛ' Ο ΠΥΡΓῳ ΕΝ Φ' ἸΣΤΑΣΑΙ.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς τὰς ὑπομνήσας ὕβειν ἀπὸ ἀναξίων
 ἀνθρώπων, δια φόβον ὕψηλότερον.

149. Κώνωψ ΚΥ Λέων.

ΚΩΝΩΨ ΠΡὸς ΛΕΟΝΤΑ ΕΛΘὼν ΕΪΠΕ, ΕΔΕ ΦΟΒῆΜΑΙ ΣΕ,
 ΕΔΕ ΔΥΝΑΤΕΡΟΣ ΜΕ ΕΪ· ΕΙ Ξ ΜΗ, ΤΙ ΣΟΙ ΘΕΤΙΝ ἢ ΔΥΝΑ-
 ΜΙΣ; ΘΠ ΞΥΓΕ ΤΟΙΣ ΟΝΥΞΙ ΚΥ ΔΑΚΝΗΣ ΤΟΙΣ ὈΔΥΣΙ; ΤῆΤΟ ΚΥ
 ΜΗΤΕΡΑ ΑΝΔΕΙ ΜΑΧΡΩΜΗ ΠΟΙΕΙ. ΕΓΩ Ξ ΛΙΑΝ ὙΠΕΡΧΩ ΣΕ

Η 2

ἰσχυρό-

ἰσχυρότερος. εἰ δὲ θέλῃς, ἔλθωμεν καὶ εἰς πύλον. καὶ
σαλπύσας ὁ Κώνωψ, ἐνεπήγχε δάκνων τὰ περὶ τὰς ρίνας
αὐτῆς ἄτειχα πρὸς ὅσα. ὁ δὲ Λέων πῖς ἰδίῳις ὄνυξι κα-
τέλυνεν ἑαυτὸν, ἕως ἃ ἠγανάκησεν. ὁ Κώνωψ δὲ νικήσας
καὶ Λέοντα, καὶ σαλπύσας, καὶ ὀπνίλιον ἄσας ἔπαιτο. Ἀ-
ράχνης δὲ δις μὲν ἐμπλακεῖς, ἐπὶ δὲ ὀνυχοῖς ἀπωδύρετο
ὅππῃ μάλιστα πολεμῶν, ὑπὸ ἐυτελεῖς ζῶντος ἡ Ἀράχνης
ἀπώλετο.

Ἐπιμύθιον.

Ὁ μῦθος πρὸς τὴν καταβάλλοντα μίαν, καὶ ὑπὸ
μικρῶν καταβαλλομένην.

Variante

Variantes Lectiones.

Fab. 2. l. 19. Δ Η' pro μὴ legitur in editione omnium antiquissimâ, in ὁμινοδίῳ ἐδ οἷς ὄσιν.

Fab. 5. l. 5. Κατεδάροσιν.

9. l. 4. ὦ τὰν. Br. & Frob.

10. l. 1. Ἀλεξιδρόνας πς, Br.

12. l. 1. Κναφεύς. Κναφέα. Br. Frob.

l. 4. μήπος. Br. Frob.

13. l. 1. εἰλκον. B. F.

l. 9. πάντως π. B.

16. l. 6. εἶπη. l. 7. περιεγκοῖν. B. F.

l. 9. βέλει ποῖσαι, πίνσον. ὦρὰ σοῦ. B. F.

l. 10. ὑποδείξαι. B. F.

18. l. 9. τὸ χρυσ. B. F.

l. ult. ἀπεμπολήθη. B. ἀπεμπωλήθη. F. recte.

19. l. 3. ἄτερος. B. F.

20. l. 8. θανάτω. B. F.

23. l. 1. ἀπολειφθεῖς. B. F. omnes.

l. 4. διελέχθησαν. B. F.

24. l. 1. χῆρά τις. B.

26. l. 2. ἀπερθ. B. F.

l. 3. ὑφελόμην. B. F.

l. 7. τόν γε. B. F.

l. 8. ἔκταν λήσεδε. B. F.

27. l. 2. ἄπερθ, iterum ἄπερθ. B. F.

l. 8. ἀπεθνήσκοντα. B. F.

Fab. 28. l. 9. ἀπρώεσι. B. ἀπρώρησι. F. recte.

30. l. 6. ἔχέπ. B. F.

31. l. ult. addita ὅτι μὴ δῖον καὶ μὴ μετὰ τὴν ἑρμηνείαν ματρὶν ἀπέγνωσιν καὶ ἡρωαν ἐβδαι. B

32. l. 4. ἀφώρεα. B. ἐφώρεα. F.

33. l. 6. ἔπε καὶ ἑρ, &c. B. F.

35. l. ult. ἀναμείνης. B. F.

36. l. 4. ἔχον/Θ. B. F.

l. 5. post ἀκύνσασα inseruntur, πρὸς αὐτὴν ἔδραμε, καὶ γᾶσα. B. F.

l. 10. διεσπάρξαν. B. F.

37. l. 3. περιελθόντα ἑ. B. F.

38. l. 9. εἶπεν ἢ τῇ, &c. B. F.

l. 10. γίγνοντα. F.

39. Συνέβη Sic Froben. Nevel. Ma' é. Henricus Steph. in Thesauro, βένεβος citat, at híc neutrius est generis.

40. l. 4. ἀφρημύρα. B. F.

42. l. 1. ποιησαύμαι. B. F.

l. 8. ἢ δαλαπτα. ibid. τὸς deest. B.

43. l. 4. διαλείπεινάχθαι. B. F.

l. 5. ἐρωτηθεῖς. B. F.

l. 8. ὅπως. B.

44. l. 10. ἐτέρως. B.

l. 16. ναὶ ante ἀληθῶς. B. F.

45. ἀπὸ μὲν πανθὶ εἶναι, ubique cum ὁ μικρὸν.

46. l. 7. τὸς ἐνοικ. &c. B. F.

l. 9. χαλεπὴν ὄντων. B. F.

47. διανέμειναι, ita Frob. Nevel. &c.

48. l. 7. deest τὸ ante ὅς. B. F.

49. l. 8. ἡρημίαν. B. F.

52. l. 4. πεινόντες. B. F.

53. l. 3. κολοῖδς. B. F.

54. l. 5. πρὸς τὸ τὸς. B.

- Fab. 56. l. 4. γελῶν. B. F.
 1. 8. ῥώννυσιν. B. F.
 57. l. 5. ταυτὴν. B. F.
 1. 11. ἤδη γδ. B.
 58. l. 4. ἔνοπλῳ. B. ἔνοπλον. F.
 1. 9. κατ'. B.
 59. l. 6. μέλ'. B. F.
 61. l. 6. ἐν φιλονεικίαις. B. F.
 62. l. 3. ἐκείῃ — ἐφαλλομένης ex conjecturâ.
 1. 5. μὴ δὲ ὅτι. B. F.
 64. l. 3. τῷ ἡν, &c. B. F.
 65. l. 2. ὀλίγον ἐκείνων. B. F.
 1. 8. ὑπὸ. B. F.
 67. l. 4. καταδύσαι. B. F.
 1. 6. σῶσαι. B.
 69. l. 1. ὧς. B.
 1. 2. ζώων πεζῶν. B.
 70. l. 9. εἰρητοὶ B.
 71. l. 2. ἡνξήθη. B.
 1. 6. οἷα δὲ λύκος συμμετάσχη. B. F.
 72. l. 3. ζώων. B. F.
 1. 14. λύκος αὐτίκα νεκρῷ, & εἶπεν. B.
 1. 16. καθ' ἑτέρω. B.

Inter tertiam & septuagesimam atque quartam tres Fabulæ interseruntur. B.

Σὺς καὶ Μῦς.

Σ ὧς εἰλχέ τις μὺν ἔρχεν ὄντ' ἀσπίδας.
 Ὅν χαλκίαις βλέποντες ἔτασαν γέλων.
 Ὁ μῦς δ' ἐπὶ ζῶν εἶπε μετὰ δακρύων
 Ὡς ἔδ' σὺν δύναδι καὶ τρέφειν ἔνα.
 Ἐπ' ὀφθαλμοῖς.
 Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἔδ' ἡ γελῶν πλώ-
 ματα τὰ πύλας, Ὅτιος.

"ΟνΘ.

Φέρων λέοντος δέρμα τοῖς ἄλλοις ὄνΘ,
 "Ηυχαλῶν εἶναι πρὸς αἰπύλους βλέπων
 "Επεὶ δὲ γυμνὸς τ' λεόντης ἐνέβη,
 Τῷτον μύλων ἐμνησε τ' ἀταξίας.
 "Επιμύδιον.

"Ο μῦθος δηλοῖ, ὅτι αἱ παρ' ἀξίαν π-
 μαὶ τάχιστα λύονται.

Στρεβός.

Πᾶσιν πεφύκει θηρὶ καὶ πτηνοῖς μάχη
 "Ηλω λίβυσσα στρεβός ἢ τέρας δ' ἐπλάνα
 "Εἶναι μὲν ὄρνις, ἐκ μέρους δ' θηρίον,
 Πτηνοῖς χάρα δεικνύσα, τοῖς θηρσὶν πόδας.
 "Επιμύδιον.

"Ο μῦθος δηλοῖ, ὅτι τὸ ἀμφίβολον ἐν
 κοινωνίαις ἄπτον.

Errore nescio quo hunc irrepisse viden-
 tur, nam in Edit. Frobenianā & Nevelei
 inter Gabriæ fabulas censentur. Varia-
 tiones observatu dignas habet. ὁπιμύδιοι
 primæ ita se habet in Edit. Frob. & Ne-
 vel. "Επιμύδιον πρὸς τὸς τὰ ἐαυτῆ
 ὡς ἀπὸ μάχης ὡς βλέποντας, τὰ δ' ὅτι
 ἑτέρων γελῶντας. Lemma Tertiæ, περὶ
 θηρῶν, καὶ ὀρνέων μάχης καὶ στρεβός. "Επι-
 μύδιος, πρὸς τὸς δύο κυρίους δυνάμει-
 τας, καὶ πλατύνοντας ἀμφότερας.

- Fab. 73. l. ult. *πίθειαι*. B. F.
 77. l. ult. *ἐνύνηθη*. B. F.
 79. l. ult. *ὀπ--ρίνειαι*. B. F.
 80. l. 1. *μάγ* *κ*. B.
 81. l. 4. *ἀνήλωσιν*. B. F.
 82. l. 5. *τῷτο σοι*. B. *τῷτό σοι*. F.
 83. l. 3. *μῦ μπερὸν*. B. F.
 l. 6. *λέγε*. B. F.
 86. l. 6. *ὑπερερδῆναι*. B. F.
 l. 9. *τῷ γλῶ*. B. F.
 88. l. 7. *ὑπελθών*. B. *ἀπελθών*. F. malé.
 89. l. 2. *deest αὐτῷ*. B.
 90. l. ult. *ἐν ἑδεμῶ* *πῶς* *ἄλλας*. B.
 91. l. 7. *τὸ μὲν πρῶτον*. B. F.
 l. 14. *ἐὰν σὺ*. B. F.
 92. l. 3. *ἐν τῷ τ' δοίνης*. B. malé.
 94. l. 4. *ὀρχήσωμαι*. B. F.
 l. 6. *ὀπρεφούς*. B. recté.
 95. l. 1. *ἀπὸ τ'*. B. F.
 97. l. 1. *οὐ μὴ*. B. *ὅτι μὴ*. F. *utrumque rectè se habet*.
 l. ult. *ἐναρτῖται*. B. F.
 101. l. 8. *τ' μετ' αὐτῷ*. B. F.
 104. l. 4. *ὄχλῳ*. nullo sensu, lege, *ὄχεις*, vel *σρώκ-
 γῳ*, ità mens fabulæ fiet clarissima.
 l. ult. *τὸς πέρις*.
 105. l. 2. *post ὑπερησάσης interser. διαπερὼν τῷ
 αἰτῶν τ' ὑπερήσας*. B. F.
 l. 6. *οἱ πολλοὶ*. B. F.
 106. l. 4. *δύσει*. B. F.
 107. l. 4. *τ' εἰαυτῷ*. B. F.
 112. l. 6. *ἔνθα ἄν*. B.
 116. l. ult. *ὅτι οἱ τοῖς*. B. F.
 117. l. ult. *ἐυεργετῆται*. B. F.

F. 124. l. 4. αὐξυνθῶ, omnes edit. at hoc vocabulum nusquam, quod scio, compareret. lege αὐξηθῶ.

129. l. 13. πῶς ἐδείπνητας. forte legendum πῆ, alioqui responsio erit ἀποπῶ.

l. 14. ἐκ τῆ πολλῆς. B. F.

133. l. 3. γλυφῇ, omnes libri, malo γλυφίς, solenne hac in re verbum.

135. l. 5. ἡ πεῖρα.

137. l. 4. κατακληθεῖς, omnes edit. melius κατακληθείς.

141. l. 5. αὐτόν.

l. 7. τῆ (ὄρις). B. F.

l. 9. πέτραν, saxum securi percussam.

l. 10. τόπον, & τῆ σῆ. B. forte τύπον, imaginem, vel effigiem filii defuncti.

142. l. 4. ἄλλο κλῶμα. B. F.

143. l. 5. ὑποσηδεῖς. B. F.

144. l. 4. ἐπιζήτης. B. F.

Quinque quæ restant, fabulas non agnoscit omnium optima & vetustissima editio. Et ineptè adiciuntur, nam quodnam illud est, quæso, primæ ὀπμύδιον, è S.S. petatum? Secunda porro eadem est cum vicesimâ; tertia cum decimâ octavâ; quarta cum centesimâ trigessimâ nonâ.

Edit. Froben. emendatiores habet.

145. l. 6. ἐκ τοῖς.

146. l. 1. κόψας κῆ.

l. 3. ἐπεκαλείτο.

l. 6. φιλοζωῶ, & ἔνι pro ὅτι.

147. l. 6 ὅτι deest.

149. l. 4. δάκρυς τοῖς.

Aristoteles L. 2. Rhetoric. Cap. 21.

Hanc recitat Æsopi fabulam, elegantem sanè, & dignam, quæ huic Libro adjiciatur.

* Αἰσωπὸς ἐν Σάμῳ συνηγορῶν δημαγωγῷ κεινῳ-
μῶϊ περὶ θανάτου ἔφη.

Ἀλώπεκα διαβαίνεσαν ποταμὸν ἀπωδῆναι εἰς φά-
ραγγα. ἡ δυναμὴν δὲ ἐκβῆναι, πολὺν χρόνον
κακοπαθεῖν, καὶ κυνοραῖδας πολλὰς ἔχεσθαι αὐτῆς· ἐ-
χθρὸν δὲ πλανώμενον, ὡς εἶδεν αὐτὴν, καλοικλείεσθαι
ἐρωτᾶν, εἰ ἀφέλοι αὐτῆς τὰς κυνοραῖδας. τὴν δὲ ἐκ-
κλῆν. ἐρωτῶν δὲ διὰ τί, φάναι, ὅτι ἔτοι μὲν πλήρεις με-
τῶν εἰσὶ, καὶ ὀλίγον ἔλαβον αἶμα. εἰ δὲ τῆς ἀφ᾽ ἑλ-
πετος ἐλθόντες πεινῶντες, ἐκπύνησάν με τὸ λοιπὸν αἶ-
μα. ἀτὰρ ἔν κ' ὑμεῖς, ἔφη, ὦ ἄνδρες Σάμιοι, ἔτθ-
μὲν ἐδὲν ἔτι βλάβη. πλείους γὰρ ἔστιν· εἰ δὲ τὸν
ἀποκλείνητε, ἔτεροι ἥξουσιν πένητες, οἱ ὑμῶν ἀναλώ-
σασθαι τὰ κοινὰ κλέπτοντες.

Richard I. King of England

Richard I. King of England, was born in 1157, and died in 1199.

He was a member of the Plantagenet dynasty, and was known as the Lionheart.

Richard I. was a famous warrior and a skilled leader. He fought in the Third Crusade, and was known for his bravery and courage. He was also a great administrator, and he worked hard to improve the lives of his subjects. He was a very popular king, and he was loved by his people. He was a very brave and a very strong king. He was a very good leader, and he was a very good warrior. He was a very good administrator, and he was a very good king. He was a very brave and a very strong king. He was a very good leader, and he was a very good warrior. He was a very good administrator, and he was a very good king.

du
pe
&
vi
lic
qu
po
bu
au
bu
bor
her
pul
dec
le

Æ S O P I

F A B U L Æ.

Aquila & Vulpes.

Aquila & Vulpes inita amicitia prope habitare decreverunt, amicitiam familiaritate confirmantes. Itaque Aquila super alta arbore nidum affixit. Vulpes verò in proximis arbuſtis filios peperit. Ad pabulum igitur aliquando Vulpe profecta, Aquila cibi inopia laborans, devolans in arbuſta, & filios hujus abreptos, unà cum ſuis pullis devoravit. Vulpes itaque reverſa, & re cognita, non tam filiorum triſtata eſt morte, quàm vindictæ inopia: quia enim terreſtris eſſet, volucrem perſequi haud poterat. Quare procul ſtans, quod etiam impotentiſſimum eſt facile, inimicæ maledicebat. Non multo autem poſt, capram quibuſdam in agro ſacrificantiſſimis, devolans Aquila partem victimæ cum ignitis carbonibus rapuit, & in nidum tulit. Vento autem vehementer tunc flante, & flamma excitata, Aquilæ pulli, involucreſ adhuc quum eſſent, aſſati in terram deciderunt. Vulpes verò accurrens in conſpectu Aquilæ omnes devoravit.

Affbulatio.

Fabula significat, eos, qui amicitiam violarint, licet ab affectis injuriâ fugiant ultionem ob impotentiam, divinum tamen supplicium non depulsuros.

2. *Aquila & Scarabeus.*

Lepus Aquila insectante in lustrum Scarabei pro-
fugit, rogans ut ab eo fervaretur. Scarabeus au-
tem rogabat Aquilam ne occideret supplicem, obte-
stans ipsam per maximum Jovem, ne scilicet con-
temneret parvitatem ejus. Illa verò irata ala percussit
Scarabeum, & Leporem correptum devoravit. At Scar-
abeus, & cum Aquila simul avolavit, ut nidum ejus
disceret: ac jam cum accessisset, ova ejus devoluta dis-
rupit. Illa autem quum grave existimaret, si quis hoc
ausus fuisset, & in altiore loco secundo nidificasset, &
illic rursus Scarabeus pariter hanc affecit. Sed Aquila
inops consilii penitus adscendit ad Jovem (illi enim
sacra esse dicitur) & in ipsis genibus tertiam foeturam
ovorum posuit. Deo ipsa commendans, & suppli-
cans ut custodiret. Scarabeus autem è stercore pi-
lula facta ascendit, & in sinum Jovis eam demisit.
Jupiter verò quum surrexisset ut sinum excuteret,
ova quoque projecit oblitus, quæ & contrivit de-
jecta. Cognito autem à Scarabeo quod hæc fecisset ut
Aquilam ulcisceretur: nam non modo Scarabeum illa
injuria affecit, sed & in Jovem ipsum impia fuit:
reversæ Aquilæ ait Jupiter, Scarabeum esse qui moesti-
tiæ causa fuerit, & certè jure fuisse. Nolens igitur
genus Aquilarum rarefcere, consuluit Scarabeo ut
Aquilæ conciliaretur. Eo autem non parente, Jupi-
ter

ter in aliud tempus Aquilarum transmutavit partum, quum Scarabei non appareant.

Affabulatio.

Fabula significat, nullum contemnere oportere, reputantes quòd non sit quisquam, qui laceffitus se ulcisci non queat.

3. Philomela & Accipiter.

PHilomela super arbore desidens de more canebat. Accipiter autem conspicatus ac cibi indigens, advolans corripuit. Quæ quum occidenda esset, orabat Accipitrem ne devoraretur; neque enim satis esse ad Accipitris ventrem implendum, sed oportere ipsum cibo egentem ad majores aves converti. Accipiter autem suscepto sermone ait. Sed ego certè amens essem, si qui in manibus paratus est, cibo dimisso, quæ nullibi videntur persequar.

Affabulatio.

Fabula significat, eos etiàm homines eodem modo esse inconsultos, qui spe majorum quæ incerta sunt, quæ in manibus habentur projiciunt.

4. Vulpes & Hircus.

VULpes & Hircus sitientes in puteum descendunt, sed postquam biberunt, Hirco indagante ascensum, Vulpes ait, Confide, utile quid in utriusque etiam salutem excogitavi: si enim rectus steteris, & anteriores pedes parieti applicueris, &

cornua pariter in anteriorem partem inclinaveris, quum percurrerim ipsa per tuos humeros & cornua, & extra puteum illinc exiluerim, & te postea extraham hinc. ab Hirco autem ad hoc promptè officio præstito, illa quum ex puteo sic exiluisset, exultabat circum os læta. Hircus autem ipsam accusabat, quod transgressa fuerit conventiones. Illa autem, Sed si tot, inquit, mentes possedisses quot in barba pilos, non autè descendisses, quam ascensum considerasses.

Affabulatio.

Fabula significat, sic & prudentem virum oportere prius fines considerare rerum, deinde sic ipsas aggredi.

5. Vulpes & Leo.

Vulpes nunquam conspicata Leonem, quum ei casu quodam occurrisset, primùm sic timuit, ut ferre mè moreretur. Deinde secundò conspicata, timuit certè, non tamen ut prius: tertio autem ipsum conspicata, sic contra eum ausa est, ut accederet & colloqueretur.

Affabulatio.

Fabula significat, conversationem terribilia quoque accessu facilia reddere.

6. *Felis & Gallus.*

FELIS comprehenso Gallo, cum rationabili causa hunc volebat devorare: Cæterum accusabat ipsum, dicendo molestum esse hominibus nocte clamantem, neque permittentem somno frui. Eo verò respondente ad illorum utilitatem id se facere, ut ad consueta opera excitarentur; rursus Felis causam intulit: quòd impius esset erga naturam, cum matre ac sororibus coeundo. Eo autem & hoc ad utilitatem dominorum facere dicente, quum multa ipsis hinc ova pariantur; Felis præfata, Sed si tu multis abundas speciosis responsionibus, ego tamen jejunos non perstabo, ipsum devoravit.

Affabulatio.

Fabula significat pravam naturam peccare volentem, si non verisimili cum prætextu possit, aperte tandem malignè egere.

7. *Vulpes.*

VULPES laqueo capta, quum abscissa cauda evasisset, non vivendam præ pudore existimabat vitam. Decrevit itaque & aliis Vulpibus hoc itidem persuadere, ut communi malo suum celaret deductus. Et jam omnibus collectis, suadebat caudas abscindere, quod non indecens solum hoc membrum sit, sed & supervacuum onus appensum. Respondens autem ex ipsis quædam, ait: Heus tu, nisi tibi hoc conduceret nobis non consuleres.

Affabulatio.

Fabula significare videtur, pravos homines non benevolentia in propinquos consulere, sed propter suam ipsorum utilitatem.

8. Vulpes & Rubus.

Vulpes sepe conscensa, quum lapsa casura foret, apprehendit in adjutorium Rubum. Quamobrem quum pedibus suis illius aculeis laceratis doleret, ad eam dixit, Hei mihi, confugi enim ad te tanquam ad auxiliatorem, sed tu pejus me tractasti. Sed errasti, heus tu, inquit Rubus, quæ me apprehendere voluisti, qui omnes apprehendere soleo.

Affabulatio.

Fabula significat, sic & homines esse stultos, qui ad auxilii gratia accurrunt, quibus magis injuria afficere natura insitum est.

9. Vulpes & Crocodilus.

Vulpes & Crocodilus contendebant de nobilitate. Quum multa autem Crocodilus superba de progenitorum narrasset splendore, quod exercitationum principes fuerint: Vulpes respondens, O amicissime, ait, sed si ipse nihil dicas, tamen ex cute videris quam antiquis temporibus sis exercitatus.

Affabulatio.

Fabula significat, mendaces viros, res ipsas arguere.

10. Galli & Perdix.

GALLOS quidam habens domi, emptam quoq; Perdixem cum illis pasci dimisit: qui quum ipsam verberarent ac expellerent, illa tristabatur valde, existimans, ut alienigenam hæc se pati à Gallis. Quum verò paulò post & illos videret pugnare, & seipsos cedere, mœrore soluta, ait, Sed quidem posthac non tristabor, videns & ipsos pugnare inter se.

Affabulatio.

Fabula significat, quòd prudentes facillè ferant ab alienis injurias, quum ipsos videant, neque à suis abstinere.

11. Vulpes.

VULPES in domum mimi profecta, & singula ipsius vasa perscrutata, invenit & caput larvæ ingeniose fabricatum, quo & accepto manibus ait, O quale caput, & cerebrum non habet.

Affabulatio.

Fabula in viros magnificos quidem corpore, sed animo inconsultos.

12. Carbo.

12. Carbonarius & Fullo.

Carbonarius in quadam habitans domo, rogabat, ut & Fullo accederet, & secum cohabitaret. Fullo autem respondens ait, Sed non hoc possem ego facere, timeo enim ne quæ ego dealbo, tu fuligine repleas.

Affabulatio.

Fabula significat, omne dissimile esse infociabile.

13. Piscatores.

Piscatores trahebant verriculum, quod quum grave foret, gaudebant & exultabant, multum inesse prædæ existimantes, sed quum in littus ipsum traxissent, piscesque paucos quidem, sed lapidem in eo permagnum invenissent, tristari & mœrere cœperunt, non tam piscium paucitate, quàm quod & contraria antè animo præsumpserant. Quidam autem inter eos natu grandior dixit, Ne tristemur, ô focii! nam voluptati, ut videtur, soror est tristitia: & nos igitur oportebat tantum ante lætatos omnino aliqua in re etiam tristari.

Affabulatio.

Fabula significat, non oportere tristari frustrata spe.

14. Jactator

14. *Jactator.*

VIr quidam peregrinatus, deinde in suam patriam reversus, aliaque multa in diversis viriliter gessisse locis jactabat, atque etiam Rhodi saltasse saltum, quem nullus ejus loci potuerit saltare: ad hoc & testes qui ibi interfuerunt dicebat se habere. Quidam autem ex iis qui aderant respondens, ait, Heus tu, si verum hoc est, non est tibi opus testibus: En Rhodus, en & saltus.

Affabulatio.

Fabula significat, nisi prompta rei demonstratio sit, omnem sermonem vacuum esse & supervacuum.

15. *Impossibilia promittens.*

Vir pauper ægrotans & malè affectus, quum à medicis desperatus esset, Deos rogabat, pollicens si sanitatem sibi rursus restituisent, centum boves ipsis oblaturum esse in sacrificium. Uxore autem ejus rogante, Et ubi tibi hæc si convalueris? Ille ait, Putas enim surgere me hinc, ut dii hæc à me repetant?

Affabulatio.

Fabula significat, multos facile polliceri, quæ re comprobare non sperent.

16. *Malig-*

16. *Malignus.*

Vir malignus ad eum, qui in Delphis est, iuxta Apollinem tentaturus ipsum. Atque ideo comprehenso passerulo manu, & eo veste contexto, stetitque proximè tripodem, ac rogavit Deum, dicendo O Apollo, quod manibus fero, utrum, vivum est an mortuum? nam si mortuum diceret, vivum ostensurus erat passerulum: sin vivum, statim suffocatum mortuum illum produceret. Sed Deus, malignà ipsius cognita mente, ait, Utrum vis, heus tu, facere, facito: penes te enim est illud facere, sive vivum quod contines, sive mortuum ostendere.

Affabulario.

Fabula significat, Deum neque decipi posse, neque quicquam eum latere.

17. *Piscatores.*

Piscatores egressi ad venationem, quum multo tempore defatigati nihil cepissent, & admodum tristabantur, & discedere apparabant. Sed statim Thynnus maximo quodam insectante pisce, in navigium ipsorum insiluit: quo capto, læti abiire.

Affabulatio.

Fabula significat, sæpe quæ ars non præbuit, ea donasse fortunam.

18. *Deceptor.*

Vir pauper ægotans vovebat diis si evaderet boves centum in sacrificium oblaturum; sed dei tenturi hunc à morbo liberarunt. At ille surgens, quoniam bobus carebat, ex pasta boves centum à se formatos in ara positos sacrificavit: sed dei ipsum ulturi in somniis adfuerunt ei, dicentes: Abi ad lictus ad eum locum: illic enim Atticas mille drachmas invenies. Ille autem excitatus, lætus & alacer ad demonstratum locum perrexit, aurum disquirens. Sed illic in piratas incidit, ab ipsisque comprehensus est. Captus ergo ut dimitteretur piratas orabat, mille auri talenta daturum ipsis promittens. Sed quum non crederetur, abactus ab ipsis, divenditus est mille drachmis.

Affabulatio.

Fabula significat, mendacibus hominibus inimicum esse Deum.

19. *Rana.*

Ranae duæ in palude pascebantur, æstate autem siccata palude, illa derelicta quærebant aliam: cæterum profundum invenerunt puteum. Quo viso altera alteri inquit, Descendamus, heus tu, in hunc puteum, illa respondens ait, Si igitur & hic aqua aruerit, quomodo ascendemus?

Affabulatio.

Fabula declarat, non oportere inconsideratè res aggredi.

20. *Senex & Mors.*

Senex quondam incisus in monte lignis, ac in humeros elevatis, ubi multam viam oneratus ivit, defessus & deposuit ligna, & mortem ut veniret, invocabat. At morte illico adstante & causam rogante qua se vocasset, Senex ait, Ut onus hoc sublatum imponeres mihi.

Affabulatio.

Fabula significat, omnem hominem vita studiosum esse, & licet infinitis periculis immersus videatur mortem appetere, tamen vivere multò magis quàm mori eligere.

21. *Anus & Medicus.*

Mulier Anus dolens oculos, conduxit Medicum quendam mercede, conventionem facta si se curaret, pactam mercedem ei daturam: sin autem minimè, nihil daturam. Aggressus est igitur Medicus curam: quotidie verò accedens ad vetulam, & oculo ei ungens, quum illa nequaquam videre posset ea heri obunctionem, ipse vas aliquod ex domo auferens quotidie discedebat. Anus igitur suam suppellestem videbat singulis diebus minui adeò, ut tandem omnino sanata nihil relinqueretur. At Medicus quum jam pactam pecuniam ab ea efflagitaret, ut quæ purè jam videret, & testes adduceret: Magis certè, ait illa, nunc nihil video. Nam quum oculis laborabam, multa mea in mea videbam domo: nunc autem quum me tu videre inquis, nihil omnino ex illis video.

Affa-

Affabulatio.

Fabula significat, prævios homines ex iis quæ agant, ignaros contra seipsos argumentum asserre.

22. Agricola & filii ipsius.

Agricola quidam vita excessurus, ac volens suos filios periculum facere de agricultura, vocatis ipsis ait, Filii mei, ego jam à vita discedo, vos autem si quæ in vinea à me occultata sunt, quæseritis, invenietis omnia. Illi igitur rati thesaurum illic defossam esse, omnem vineæ terram post interitum patris defoderunt, & thesaurum quidem non invenerunt, sed vinea pulchre fossa multiplicem fructum reddidit.

Affabulatio.

Fabula significat, laborem thesaurum esse hominibus.

23. Herus & canes.

Vir quidam à tempestate in suo suburbio deprehensus primum oveis comedit, dehinc capras. Tempestate autem invalescente, & operarios boves jugulatos comedit. Canes verò his visis, dixerunt inter se, Sed fugiamus nos hinc. Si enim operariis bobus Herus noster non abstinet, quomodo nobis abstinebit?

Affabulatio.

Fabula significat eos maximè fugere & cavere oportere qui ne suis quidem abstinant.

24. Mulier & Gallina.

Mulier quædam vidua Gallinam habebat, singulis diebus ovum sibi parientem: rata verò si plus Gallinæ hordei projiceret, bis parituram die, hoc fecit. Sed Gallina pinguefacta, ne semel quidem die parere potuit.

Affabulatio.

Fabula significat, eos qui ob avaritiam plurimum sunt appetentes, & quæ adsunt amittere.

25. Morsus à Cane.

Morsus à cane quidam medicaturum circuibat quærens. Quum autem occurrisset quidam ei, & cognosceret quod quærebat. Heus tu, ait, si sanari vis, accipe panem, atque eo sanguinem vulneris sicca, & ei qui momordit cani ad edendum da; & is ridendo, ait, Sed si hoc fecero, oportebit me ab omnibus qui in urbe sunt canibus morderi.

Affabulatio.

Fabula significat, pravos etiam homines beneficio affectos, magis ad inferendam injuriam exacui.

26. Ado-

26. Adolescentuli & Cocus.

DUO Adolescentuli juxta Cocum affidebant, & Coco in aliquo domestico opere occupato, alter horum partem quandam carniū cum subripuisset in alterius demisit sinum. Converso autem Coco, & carnem quærente, qui abstulerat jurabat non habere: qui autem habebat, non abstulisse. Cocus verò cognita malitia ipsorum, ait, Sed etsi me latueritis pejeratum Deum non latebitis.

Affabulatio.

Fabula significat, quòd licet homines pejeranter lateamus. Deum tamen non latebimus.

Inimici.

DUO quidam inter se inimici, in eadem navi navigabant: quorum alter in puppi, alter in prora sedebat: Tempestate autem superveniente, & nave jam submergenda, qui erat in puppi gubernatorem rogabat, utra pars navigii prius obruenda esset. Quumque ille proram dixisset. Sed mihi non est grave, ait, mori, si visurus sum antè me inimicum morientem.

Affabulatio.

Fabula significat, multos homines nihil suum nocumentum curare, si modo inimicos suos videant ante se male affectos.

28. *Felis & Mures.*

IN domo quadam quum multi essent Mures. Felis eo cognito iuit eo ac eorum singulos captos devorabat. At illi quotidie quum se absumi viderent, dixerunt inter se, Ne posthac infra descendamus, ne penitus intereamus. Nam si Felis non potest huc venire, nos salvi erimus. Sed Felis quum non amplius Mures descenderent, statuit apud se per astutiam eos decipiens evocare. Cæterum quum pessulum quendam conscendisset, de eo se suspendit, & mortuum simulabat. Ex muribus autem quidam acclinatus, visoque eo ait, Heus tu, etsi faccus fieres, non te adibo.

Affabulatio.

Fabula significat, prudentes homines, quum aliquorum pravitatem experti fuerint, non amplius eorum falli simulationibus.

29. *Vulpes & Simius.*

IN concilio quondam irrationabilium animalium, saltauit Simius, & approbatus, Rex ab ipsis electus est. Vulpes autem ei invidens, ut in casse quodam carnem vidit, Simium secum illuc duxit, quod invenisset ipsi thesaurum illum dicens, non tamen & uti eo: quippe quem lex Regi tribueret: atque hortata est ipsum ut regem thesaurum accipere. At ille inconsideratè profectus, & captus à casse, ut quæ decepisset, accusabat Vulpem. Illa autem ei, O Simie, quum talem tu habeas dementiam, imperium in bruta tenebis?

Affa-

Affabulatio.

*Fabula significat, eos qui actiones aliquas inconsultè ag-
grediuntur, in infortunia incidere.*

30. Thunnus & Delphin.

THunnus Delphino persequente, magno impetu fe-
rebatur. Quum capiendus esset, inscius ob ve-
hementem impetum decedit in insulam quandam, ab
eodem verò impetu & Delphin cum eo ejectus est.
Thunnus autem conversus, quum agentem animam Del-
phinum vidisset, ait, Non amplius mihi mors molesta
est, quum eum videam qui mihi causa fuit ipsius, unà
mecum perire.

Affabulatio.

*Fabula significat, facile miseras ferre homines, si eos qui
illarum auctores fuerunt, infelicitè agere videant.*

31. Medicus & agrotans.

Medicus agrotum curabat: agroto autem mortuo,
ille afferentibus dicebat, Homo hic si vino absti-
nuisset, & clysteribus usus fuisset, non interiisset. Qui-
dam autem ex iis qui aderant respondens ait, Optime,
non oportebat te hæc nunc dicere quum nulla utilitas
est, sed tunc admonere quum his uti poterat.

Affabulatio.

Fabula significat, oportere amicos tempore necessitatis præbere auxilia, & non cum jam de rebus desperatur, cavillari.

32. Auceps & Vipera.

Auceps visco accepto & arundinibus aucupatum exiit. Viso autem turdo super alta arbore sedente, & arundinibus inter se in longitudinem conjunctis, sursum eum comprehensurus suspiciebat. Cæterum ignarus Viperam dormientem conculcavit. Quum verò irata momordisset ipsum, ille jam agens animam dicebat, Memiserum, alium enim capturus, ipse ab alio captus sum ad mortem.

Affabulatio.

Fabula significat, eos qui proximis insidiantur, ignari sæpe ab aliis id ipsum pati.

33. Fiber.

Fiber animal est quadrupes in stagnis plerumque vitam degens, cujus pudenda dicunt usui esse medicis. Hic igitur quum ab hominibus persequentibus jam capiendus sit, cognito cujus gratia peratur, abscessa sua pudenda projicit persequentibus, & sic salutem consequitur.

Affabulatio.

Fabula significat, eo modo homines prudentes pro sua salute nullum habere respectum pecuniarum.

34. Canis

34. *Canis & Cocus.*

CAnis irrumpens in culinam, & Coco occupato, corde arrepto fugit. At Cocus conversus, ut vidit ipsum fugientem inquit, Heus tu, scito ubi ubi fueris me te observaturum: non enim mihi cor abstulisti, sed dedisti potius.

Affabulatio.

Fabula significat, saepe nocumenta hominibus documenta fieri.

35. *Canis & Lupus.*

CAnis ante stabulum quoddam dormiebat: quumque Lupus irrupisset, & devoraturus eum esset, rogabat ne tunc se mactaret. Nunc enim, inquit, tenuis sum, & macilentus: si autem parumper expectaveris, mei domini facturi sunt nuptias, & ego tunc multa depastus pinguior ero, & tibi suavior cibus fiam. Lupus igitur persuasus abiit. Post aliquot dies reversus invenit superius super domus tecto Canem dormientem, & stans inferius ad se vocabat, admonens eum foederis. Et canis, At, Lupe, si posthac ante stabulum me videris dormientem, non amplius expectes nuptias.

Affabulatio.

Fabula significat, prudentes homines quum aliqua in re periclitati salvi facti fuerint, cavere ab eo quam diu vixerint.

36. *Ca-*

36. *Canis & Gallus.*

Canis & Gallus inita societate, iter faciebant. Vespera autem superveniente, Gallus conscensa arbore dormiebat, at Canis ad radicem arboris excavata. Quum Gallus, ut assoler, noctu cantasset, vulpes ut audivit occurrit, & stans inferius, ut ad se descenderet, rogabat, quod cuperet aded egregio cantu animal complecti. Quum autem is dixisset ut janitorem prius excitaret ad radicem dormientem, ut quum ille aperuisset, descenderet, & illa quærente ut ipsum vocaret, Canis statim profiliens eam dilaceravit.

Affabulatio.

Fabula significat, prudentes homines, inimicos insultantes ad fortiores astu mittere.

37. *Leo & Rana.*

Leo audita aliquando Rana valde clamante vertit se ad vocem, ratus magnum aliquod animal esse, parumper autem expectante, ut vidit ipsam stagno egressam, accedens propius proculcavit.

Affabulatio.

Fabula significat, non oportere, ante quam videas auditu solo perturbari.

38. *Leo & Asinus & Vulpes.*

Leo & Asinus & Vulpes inita societate, egressi sunt ad venandum. Multa igitur præda capta, iussit Leo Asino ut divideret sibi. At ille tribus partibus factis æqualiter, ut eligerent eos hortabatur. Et Leo ira percitus Asinum devoravit. Inde Vulpi ut divideret iussit. Illa verò in unam partem omnibus congestis, sibi minimum quiddam reliquit. Tum Leo ipsi, Quis te, ô optima, dividere sic docuit? Ea inquit, Asini calamitas.

Affabulatio.

Fabula significat, castigationes hominibus esse aliorum infortunia.

39. *Leo & Ursus.*

Leo & Ursus simul magnum nacti hinnulum, de eo pugnabant. Graviter igitur à seipsis affecti, ut ex multa pugna etiam vertigine corriperentur, defatigati jacebant. Vulpes autem circumcirca eundo ubi prostratos eos vidit, & hinnulum in medio, jacentem, hunc per medios utrosque percurrrens rapuit, fugiensque abiit. At illi videbant quidem ipsam, sed quia non poterant surgere, Nos miseros, dicebant, quòd Vulpi laboravimus.

Affabulatio.

Fabula significat, aliis laborantibus alios lucrari.

40. *Vates.*

Vates in foro sedens, differebat. Quum autem super-
pervenisset quidam derepente, & renunciasset
quod domus ipsius fenestræ apertæ omnes essent, &
quæ intus erant ablata omnia, exilivit suspirans, & cur-
sim ibat. At quum quidam vidisset ipsum currentem,
Heus tu, inquit, qui alienas res præscire profiteris, tu
ipsius non prævaticinabere?

Affabulatio.

*Fabula in eos qui suam vitam præve gubernantes, quæ
nihil ad se attinent præscire conantur.*

41. *Formica & Columba.*

Formica sitiens descendit in fontem, ac tracta à flu-
xu, suffocabatur. Columba verò hoc viso, ramum
arboris decerptum in fontem projecit, super quo seden-
do Formica evasit. Auceps autem quidam post hoc
calamis compositis ad Columbam comprehendendam
ibat. Hoc autem viso Formica aucupis pedem mor-
dit, qui dolens & calamos projecit, & ut Columba
statim fugeret, auctor fuit.

Affabulatio.

*Fabula significat, oportere benefactoribus gratiam re-
ferre.*

42. *Vespertilio & Rubus & Mergus.*

Vespertilio & Rubus & Mergus inita societate, mercatoriam decreverunt vitam agere. Itaque Vespertilio argentum mutuata, deposuit in medium, Rubus vestem secum accepit, Mergus tertius æs, & enavigaverunt. Tempestate autem vehementi oborta, & navi emersa, omnibus perditis, ipsi in terram evaserunt. Ex illo igitur Mergus littoribus semper assidet, num quopiam æs ejiciat mare. Vespertilio verò creditores timens, interdiu non apparet, sed noctu ad pabulum exit. Rubus prætereuntium vesti inhæret, quærens si quibi suam cognoscat.

Affabulatio.

Fabula significat, in ea, quibus incumbimus, in posterum nos recidere.

43. *Egrotus & Medicus.*

Ægrotus quidam à Medico rogatus quomodo valuisset: Plus, ait, quam oporteret, sudasse. Ille autem bonum ait hoc esse. Secundò verò ab ipso iterum rogatus quomodo habuisset, horrore correptum, ait, valde concussum fuisse. Ille & hoc bonum esse ait. Tertiò rursus rogatus quomodo valuisset, ait, in intercutem incidisse. Ille & hoc rursus bonum ait esse. Inde ex domesticis quodam ipsum rogante, Ut habes? Ego, ait, heus tu, præ bonis pereō.

Affa-

Affabulatio.

Fabula significat, maximè ex hominibus odio nobis haberi, qui ad gratiam semper loqui student.

44. Lignator & Mercurius.

Lignator quidam juxta fluvium suam amisit securim. Inops igitur consilii juxta ripam sedens plorabat. Mercurius autem intellecta causa, & miseratus hominem, urinatus in fluvium, auream sustulit securim, & an hæc esset quam perdiderat rogavit. Illo non eam esse, dicente, iterum urinatus argenteam sustulit. Illo, neq; hanc esse suam dicente, tertio urinatus, illam ipsam sustulit, illo hanc verè esse deperditam dicente. Mercurius probata ipsius æquitate, omnes ei donavit. Ille profectus omnia sociis quæ acciderant narravit. Quorum unus eadem facere decrevit, & ad fluvium profectus, & suam securim consultò demisit in profluentem, & plorans sedebat. Apparuit igitur Mercurius & illi, & causa intellecta ploratûs, urinatus similiter auream securim extulit, & rogavit, an hanc amisisset. Illo lætabundo, & Verè hæc est, dicente, perosus Deus tantam impudentiam, non solum illam detinuit, sed ne propriam quidem reddidit.

Affabulatio.

Fabula significat, quantum justis Deus auxiliatur, tantum injustis esse contrarium.

45. *Asinus & Hortulanus.*

Asinus serviens olitori, quoniam parum comedebat, plurimum laborabat, precatus est Jovem, ut ab olitore liberatus, alteri venderetur domino. Quum Jupiter exoratus, jussisset ipsum figulo vendi, iterum iniquiore animo perferebat quàm prius, onera, & cœcum, & tegulas ferens. Rursus igitur ut mutaret dominum rogavit, & coriario venundatus est. Pejorem itaque prioribus herum nactus, & videns quæ ab eo fierent, suspirando ait, Hei mihi misero, melius erat mihi apud priores heros manere, hic enim, ut video & pellem meam conficiet.

Affabulatio.

Fabula significat, tunc maximè priores dominos à famulis expoti, quum de secundis periculum fecerint.

46. *Auceps & Galerita.*

Auceps avibus struxerat laqueos: Galerita verò hunc procul videns, rogavit, quidnam faceret? eo urbem condere dicente, deinde procul regresso, & abscondito, Galerita, viri verbis credens, accessit ad castrum & capta est. At aucupe accurrente, illa dixit, Heustu, si talem urbem condis non multos invenies inco-

Affabulatio.

Fabula significat, tunc maxime domos & urbes desolari, quum præfecti molesti fuerint.

47. Viator.

Viator multa confecta via, oravit, si quod inveniret, dimidium Mercurio ejus dedicaturum. Natus igitur peram cariotarum & amygdalarum plenam, atque ea accepta, eas comedit. Sed cariotarum ossa & amygdalarum cortices super altari quodam imposuit, inquit, Habes, ô Mercuri, votum. Nam rei inventæ exteriora & interiora tecum partior.

Affabulatio.

Fabula significat, virum avarum, qui & Deos ob cupiditatem fallit.

48. Puer & Mater.

Puer ex literario ludo condiscipuli librum furatus, tulit matri. Quum ea vero non corripuisset, sed potius amplexata fuisset, provectus ætate cœpit & majora furari. In ipso autem furto aliquando deprehensus, ducebatur recta ad mortem. At sequente & lugente matre, ille carnifices orabat, ut pauca quædam matri colloqueretur in aurem. Quæ quum illico ori filii se admovisset, ille aurem dentibus demorsam abscidit. Matre autem & aliis accusantibus, quia non solum furatus sit, sed jam & in matrem impius esset, ille ait, hæc enim mihi perditionis fuit causa. Si enim quum librum furatus

furatus eram me corripuisset, non ad hæc usque progressus nunc ducerer ad mortem.

Affabulatio.

Fabula significat, eorum qui non in principio puniuntur in majus augeri mala.

49. Pastor & Mare.

PASTOR in maritimo loco gregem pascens, viso tranquillo mari, desideravit navigare ad mercaturam. Venditis igitur ovibus, & palmarum fructibus emptis, solvit. Tempestate verò vehementi facta, & navis in periculo quum esset, ne submergeretur, omni onere ejecto in mare, vix vacua navi evasit incolumis. Post verò dies non paucos, transeunte quodam, & maris (erat enim id fortè tranquillum) quietem admirante, suscepto sermone. Hic ait, cariotas iterum, ut videtur, desiderat, & propterea videtur quietum.

Affabulatio.

Fabula significat, calamitates hominibus documenta fieri.

50. Punica & Malus.

PUNICA & Malus de pulchritudine contendebant. Multis contentionibus interim factis, rubus ex proxima sepe audiens, Desinamus, ait, ô amicæ, aliquando pugnare.

Affabulatio.

Fabula significat, in præstantiorum seditionibus vilissimos etiam conari esse aliquos.

51. Talpa.

TAlpa cœcum animal est. Dixit igitur aliquando matri, Morum mater video, deinde rursus ait, Thuris odore plena sum : & tertio iterum, Ærei, inquit, lapilli fragorem audio. Mater verò respondens ait, O filia, ut jam percipio, non solum visu privata es sed & auditu, & olfactu.

Affabulatio.

Fabula significat, nonnullos jactabundos impossibilia profiteri, & in minimis redargui.

52. Vespæ & Perdices.

VEspæ & Perdices sitibundæ ad agricolam iverunt ab eoque petierunt ut daret eis bibere, promittentes pro aqua hanc gratiam reddituras: Perdices quidem, fodere vineas: Vespæ autem, circumcirca eund aculeis arcere fures. At agricola inquit, Sed mihi sunt duo boves, qui nihil promittunt, tamen omnia faciunt. Melius igitur est illis dare quam vobis.

Affabulatio.

Fabula in viros perniciosos, qui promittunt quidem juvare, ledunt autem admodum.

53. *Pavo & Monedula.*

A Vibus creaturis regem, Pavo rogabat ut se ob pulchritudinem eligerent. Eligentibus autem eum omnibus monedula suscepto sermone ait, Sed si te regnante Aquila nos persequi aggressa fuerit, quomodo nobis opem feres?

Affabulatio.

Fabula significat, principes non modò propter pulchritudinem, sed & fortitudinem, & prudentiam eligere oportere.

54. *Aper & Vulpes.*

A Per, quum cuidam adstaret arbori, dentes acuebat. Vulpe autem rogante causam, quare nulla proposita necessitate, dentes acueret, inquit, Non abs re hoc facio. Nam si me periculum invaserit, minime me tunc acuendis dentibus occupatum esse oportebit, sed potius paratis uti.

Affabulatio.

Fabula significat, adversus periculum preparatum esse oportere.

55. *Cassita.*

Cassita à laqueo capta plorans dicebat, Hei mihi miseræ & infelici volucris. Non aurum surripui cuiusquam, non argentum, non aliud quicquam pretiosum. Granum autem tritici parvum mortis mihi causa fuit.

Affabulatio.

Fabula in eos qui ob vile lucrum magnum subeunt periculum.

56. *Hinnulus.*

Hinnulus aliquando Cervo ait, Pater, tu natus es & major & celerior canibus, & cornua præterea ingentia gestas ad vindictam, curnam igitur sic eos times? Et ille ridens ait: Vera quidem hæc inquis, fili: unum verò scio, quòd quum canis latratum audivero, statim ad fugam nescio quomodo efferor.

Affabulatio.

Fabula significat, naturâ timidam nulla admonitione confirmari.

57. *Lepores & Rana.*

Lepores aliquando in unum profecti sui ipsorum deplorabant vitam, quòd foret periculis obnoxia, & timoris plena: se enim ab omnibus & canibus & aquis,

lis, & aliis multis consumi. Melius itaq; esse mori semel, quam toto vitæ tempore timere : hoc igitur confirmato, impetum fecerunt simul in paludem, quasi in eam delapsuri, & suffocandi. Sed quum Ranæ, quæ circum paludem sedebant, cursus strepitu percepto illico in hanc insiluissent, ex leporibus quidam sagacior esse visus aliis ait, Sistite, ô socii, nihil grave in vos ipsos molimini, jam ut videtis, & nobis alia sunt animalia timidiora:

Affabulatio.

Fabula significat, miseros gravioribus aliorum consolari calamitatibus.

58. Asinus & Equus.

A Sinus Equum beatum putabat, quod abunde nutriretur & accuratè, quum ipse neque palarum satis haberet, idque plurimum defatigatus. Quum autem tempus institit belli & miles armatum ascendit Equum, huc illuc ipsum impellens, cæterum & in medios hostes insiluit, & Equus vulneratus jacebat. His visis, Asinus Equum, mutata sententiâ, miserum existimabat.

Affabulatio.

Fabula significat, non oportere principes & divites amulari, sed in illos invidia & periculo consideratis, paupertatem amare.

59. *Avarus.*

AVarus quidam, quum omnia sua bona vendidisset, & auream massam fecisset, in loco quodam defodit, una defosso illic & animo suo & mente, atque quotidie eundo, ipsam videbat. Id autem quum ex operariis quidam observasset, cognovit, & refossam massam abstulit. Post hæc & ille profectus, & vacuum locum videns, lugere cœpit, & capillos evellere. Hunc quum quidam vidisset sic plorantem & causam audivisset, Ne sic, ait, heus tu, tristere, neque enim habens aurum, habebas. Lapidem igitur pro auro acceptum reconde, & puta tibi aurum esse: eundem enim tibi usum præstabit. Nam, ut video, neque quum aurum erat, utebare

Affabulatio.

Fabula significat, nihil esse possessionem, nisi usus adfuerit.

60. *Anseres & Grues.*

ANseres & Grues in eodem prato pascebantur. Venatoribus autem visis, Grues, quod essent leves statim evolaverunt: Anseres verò ob onus corporum, quum mansissent, capti fuerunt.

Affabulatio.

Fabula significat, & in expugnatione urbis inopes facili fugere, divites autem servire captos.

61. Testudo & Aquila.

Testudo orabat Aquilam, ut se volare doceret. Ea autem admonente, procul hoc à natura ipsius esse, illa magis precibus instabat. Accepit ergo ipsam ungibus, & in altum sustulit, inde demisit. Hæc autem in petras cecidit, & contrita est.

Affabulatio.

Fabula significat, multos, quia in contentionibus prudentiores non audierint, seipsos lasisse.

62. Pulex.

Pulex aliquando saltans, viri pedibus inhæsit: hic autem Herculem in auxilium invocabat: at quum illinc rursus saltasset, suspirans ait, O Hercules si contra pulicem non auxiliatus es, quomodo contra majores adversarios adjuvabis?

Affabulatio.

Fabula significat, non oportere in minimis Deum rogare, sed in necessariis.

63. Cervæ.

Cervæ altero obcæcata oculo, in litore pascebatur, sanum oculum ad terram propter venatores habens, alterum verò ad mare, unde nihil suspicabatur: præter

præternavigantes autem quidam, & hoc conjectantes ipsam sagittarunt. Hæc autem seipsam lugebat, quod unde timuerat, nihil passa foret: quod non putabat malum allaturum, ab eo proditam.

Affabulatio.

Fabula significat, sæpe quæ nobis noxia videntur, utilia fieri: quæ verò utilia, noxia.

65. Cerva & Leo.

Cerva venatores fugiens, in speluncam ingressa est: in leonem autem ibi incidens ab ea comprehensa est: moriens autem dicebat, Hei mihi, quod hominem fugiens in ferarum immittissimum incidi.

Affabulatio.

Fabula significat, multos homines, dum parva fugiunt pericula, in magna incurrere.

65. Cerva & Vitis.

Cerva venatores fugiens, sub vite delituit. Quum præteriissent autem parumper illi; Cerva prorsus jam latere arbitrata, vitis folia depasci incepit. Illis vero agitatæ & venatores conversi, & quod erat verum, arbitrati animal aliquod sub foliis occultari, sagittis confecerunt Cervam. Hæc autem moriens talia dicebat: iusta passa sum, non enim offendere oportebat quæ me servaret.

Affa-

Affabulatio.

Fabula significat, qui injuria benefactores afficiunt, à Deo puniri.

66. Asinus & Leo.

CUM Asino Gallus aliquando pascebatur. Leone autem aggresso Asinum, Gallus exclamavit, & Leo (aiunt enim hunc Galli vocem timere) fugit. At Asinus ratus propter se fugisse, aggressus est statim Leonem, Ut verò procul hunc persequutus est, quò non amplius Galli perveniebat vox, conversus Leo devoravit. Hic verò moriens clamabat, Me miserum & dementem! Ex pugnacibus enim non natus parentibus, cujus gratia in aciem irrui?

Affabulatio.

Fabula significat, plerosque homines inimicos, qui se de industria humiliarunt, aggredi, atque ita ab illis occidi.

67. Olitor & Canis.

OLITORIS Canis in puteum decidit: Olitor autem ipsum illinc extracturus, descendit & ipse in puteum. Ratus autem Canis accessisse, ut se inferiùs magis obrueret, Olitorem conversus momordit. Hic autem cum dolore reversus, Justa, inquit, patior, nam cur unquam fui interfectorem servare studui?

Affabulatio.

Fabula in injustos, & ingratos.

68. *Sus & Canis.*

SUS & Canis mutuò convitiabantur. Et Sus jurabat per Venerem, proculdubio dentibus discissurum Canem. Canis verò ad hæc per Ironiam dixit, Bene per Venerem nobis juras, significas enim ab ipsa vehementer amari, quæ impuras tuas carnes degustantem nullo pacto in facellum admittit. Et Sus, propter hoc igitur magis præ se fert Dea amare me. Nam occidentem, aut alio quovis modo lædentem omnino averfatur tu tamen malè oles, & viva, & mortua.

Affabulatio.

Fabula significat, prudentes oratores quæ ab inimicis obijciuntur convicia artificiose in laudem convertere.

69. *Sus & Canis.*

SUS & Canis de fœcunditate certabant : dixit autem Canis fœcundam se esse maximè pedestrium omnium : & Sus occurrens, ad hæc inquit, Sed quum hoc dicis, scito & cœcos tuos te catulos parere.

Affabulatio.

Fabula significat, non celeritate res, sed perfectione judicari.

70. *Serpens & Cancer.*

Serpens unà cum Cancro vivebat, inita cum eo societate. Itaque Cancer simplex moribus, ut & ille mutaret admonebat astutiam: hic autem minimè obediēbat. Quum observasset igitur Cancer ipsum dormientem, & pro viribus compressisset, occidit. At Serpente post mortem extenso, ille ait, Sic oportebat antehac rectum & simplicem esse. Neque enim hanc poenam dedisses.

Affabulatio.

Fabula significat, qui cum dolo amicos adeunt, ipsos offendunt potius.

71. *Pastor & Lupus.*

Pastor nuper natum Lupi catulum reperit, ac sustulit, unaque cum canibus nutrit. At quum adolevisset, si quando Lupus ovem rapuisset, cum canibus & ipse persequēbatur. Quum canes verò aliquando non possent assequi Lupum, atque ideo reverterentur, ille sequebatur, ut quum ipsum assequutus esset, ut Lupus particeps foret venationis, deinde redibat. Sin autem Lupus extra non rapuisset ovem, ipse clam occidens unà cum canibus comedebat, donec pastor quum conjectasset & intellexisset rem, de arbore ipsum suspendit & occidit.

Affabulatio.

Fabula significat, naturam pravam bonos mores non nutrire.

E

72. *Leo*

72. *Leo & Lupus.*

Leo quum consenuisset, ægrotabat jacens in antro. Accesserunt autem visiratura regem, præter Vulpem, cætera animalia. Lupus igitur capta occasione, accusabat apud Leonem Vulpem, quasi nihili facientem super omnium dominum, & propterea neque ad visitationem profectam. Interim affuit & Vulpes, & ultima audivit Lupi verba. Leo igitur contra eam infremuit: sed defensionis tempore petito, & quis, inquit, eorum qui convenerunt, tantum profuit, quantum ego, quæ in omnem partem circuivi, & medicamentum pro te à medico quæsi, & didici? Quum autem Leo statim ut medicamentum diceret imperasset, illa inquit, Si Lupo vivente excoriato, ipsius calidam pellem indueris. Et Lupo statim mortuo jacente, Vulpes ridens ait, Sic non oporteret dominum ad malevolentiam movere, sed ad benevolentiam.

Affabulatio.

Fabula significat, eum qui quotidie machinatur, in seipsum laqueum vertere.

73. *Mulier.*

Mulier quædam virum ebrium habebat: ipsum autem à morbo liberatura, tale quid comminiscitur. Aggravatum enim ipsum ab ebrietate quum observasset, & mortui instar insensatum in humeros elevatum in sepulcretum allatum deposuit, & abiit. Quum verò

verò ipsum jam sobrium esse conjectata est, profecta januam pulsavit sepulcreti: ille autem quum diceret, Quis est qui pulsat januam? uxor respondit, Mortuis cibaria ferens, ego adsum: & ille non mihi comesse, sed bibere, ô optime, potius affer: molestus enim mihi es, quum cibi non potus meministi. Hæc autem pectore percusso, Heu mihi miseræ, inquit: nam neque astu profui: tu enim vir non solum non emendatus es, sed peior quoque teipso evalisti, cum in habitum tibi deductus sit morbus.

Affabulatio.

Fabula significat, non oportere malis actibus immorari, nam & nolentem quandoque hominem consuetudo invadit.

74. Cygnus.

Vir dives & Anserem & Cygnum simul nutriebat, non ad eadem tamen, sed alterum cantus, alterum mensæ gratia. Quum autem oporteret anserem ea efficere quorum causa nutriebatur, nox erat ac discernere tempus non permisit utrumque. Cygnus autem pro anserem abductus, cantat cantum quendam, mortis exordium: ac cantu quidem exprimit naturam, mortem verò effugit suavitate canendi.

Affabulatio.

Fabula significat, sæpe musicen differre mortem.

74. *Æthiops.*

ÆThiopem quidam emit : talem ei colorem inesse ratus negligentia ejus qui prius habuit. Ac assumpto in domum omnes ei adhibuit abstersiones, omnibus lavacris tentavit, mundare: & colorem quidem transmutare non potuit, sed morbum vexatio paravit.

Affabulatio.

Fabula significat, manere naturas, ut à principio provenerunt.

76. *Hirundo & Cornix.*

Hirundo & Cornix de pulchritudine contendebant. Respondens autem Cornix ei dixit, Sed tua pulchritudo verno tempore floret, meum verò corpus etiam hyeme durat.

Affabulatio.

Fabula significat, durationem corporis decore meliorem esse.

77. *Butalis.*

Butalis à fenestra quadam pendebat ; vespertilio autem profecta rogavit causam, quare die silet, nocte canit. Quum autem ea non incassum hoc facere dixisset, nam die canendo olim capta fuerat, & propterea

pterea ex illo prudens evasit. Vespertilio ait, Sed non te cavere nunc oportet quum nulla utilitas, sed antequam caperis.

Affabulatio.

Fabula significat, in infortuniis inutilem esse penitentiam.

78. Cochlea.

Rustici filius affabat cochleas: quum autem audiret eas stridentes, ait, O pessimæ animantes, domibus vestris incensis vos canitis.

Affabulatio.

Fabula significat, omne intempestivè factum vituperabile esse.

79. Mulier & Ancilla.

Mulier vidua operosa ancillas habens, has solebat noctu excitare ad opera, ad Gallorum cantus. His verò assiduè defatigatis labore, visum est oportere domesticum occidere Gallum, tanquam illum, qui noctu excitaret heram. Evenit autem ipsis hoc facto ut in grandiora inciderent mala. Nam hera, quum ignoraret Gallorum horam, magis de nocte eas excitabat.

Affabulatio.

Fabula significat, plerisque hominibus consilia esse malorum causas.

80. Mulier venefica.

Mulier venefica & divinarum irarum propulsiones promittens, multa facere perseverabat, & lucrum inde facere: quidam igitur accusaverunt eam impietatis, & convicerunt, & damnatam ducebant ad mortem. Videns autem quidam eam duci, ait, Tu quæ Deorum iras avertere promittebas, quomodo neque hominum consilium mutare potuisti?

Affabulatio.

Fabula significat, multos magna promittentes, ne parva quidem facere posse.

81. Mustela.

Mustela in officinam ingressa ferrarii, ibi jacentem circumlambebat limam. Rasa autem lingua, sanguis multus ferebatur. Hæc autem lætabatur, rata ex ferro aliquid auferre, donec penitus totam linguam absumpsit.

Affabulatio.

Fabula in eos qui in contentionibus seipsos offendunt.

82. Agri-

82. *Agricola.*

Agricola quidam fodiens aurum reperit: quotidie igitur terram, ut ab ea beneficio affectus coronabat. Hic autem fortuna adstans, inquit, Heus tu, cur terræ mea munera attribuis, quæ ego tibi dedi ditatura te? nam si tempus immutetur, & in alias manus hoc tuum aurum veniat, scio te tunc me Fortunam accusaturum.

Affabulatio.

Fabula significat, oportere benefactorem cognoscere, atque huic gratiam referre.

83. *Viatores.*

Duo quidam unà iter faciebant, & quum alter securim reperisset, alter qui non invenit, admonebat ipsum, ne diceret, inveni, sed invenimus: Sed paulò pòst, quum aggredierentur ipsos qui securim perdiderant, habens ipsam persequentibus illis, ad eum qui una iter faciebat, dicebat Periiimus. Hic autem ait, Perii dic, non periiimus. Etenim & tunc quum securim invenisti, inveni dixisti, non invenimus.

Affabulatio.

Fabula significat, qui non fuerunt participes felicitatum, neque in calamitatibus firmos esse amicos.

84. *Rana.*

84. *Rana.*

DUæ ranæ vicinæ sibi erant. Pascebantur autem, altera in profundo, & procul à via, stagno; altera in via parum aquæ habens. Verùm quumquæ in stagno alterum admoneret, ut ad se migraret, ut tutiore cibo frueretur, illa non paruit, dicens, Firmissima teneri hujusce loci consuetudine, quousque obtigit curram, prætereuntem ipsam confringere.

Affabulatio.

Fabula significat, homines quoque prava aggredientes, citius mori quam mutantur in melius.

85. *Apiarius.*

IN mellarium ingressus quidam domino absente, favum abstulit. Hic autem reversus, ut alveolos vidit inanes, stans quod in his erat perscrutabatur. Apes autem è pastu redeuntes, utprehenderunt ipsum, aculeis percutiebant, pessimèque tractabant. Hic autem ad eas, ô pessimæ animantes furatum vestros favos illæsum dimisit, me vero satagentem vestri percutitis?

Affabulatio.

Fabula significat, sic hominum quosdam per imprudentiam inimicos non cavere, amicos autem ut insidiatores repellere.

86. *Alcedo.*

86. *Alcedo.*

Alcedo avis est solitaria, semper in mari vitam degens. Hanc aiunt, hominum venationes caventem, in scopulis maritimis nidum ædificare. Cæterùm aliquando paritura, nidum fecit. Egressa autem ea ad pabulum, evenit mare à vehementi concitatum vento elevari supra nidum, atque hoc submerso, pullos perdere. Hæc reversa, re cognita, ait, Me miseram, quæ terram ut insidiatricem cavens, ad hoc confugi, quod mihi longè est infidius.

Affabulatio.

Fabula significat, homines etiam quosdam ab inimicis cavendo, ignaros in multo graviores inimicis amicos incidere.

87. *Piscator.*

Piscator in fluvio quodam piscabatur : extensis autem retibus & fluxu comprehenso, utrimque funi alligato lapide, aquam verberabat, ut pisces fugientes incautè in retia inciderent, Cùm quidam verò ex iis qui circa locum habitabant, id facere videret, increpabat quòd fluvium turbaret, & claram aquam non sineret bibere. Et is respondit, Sed nisi sic fluvius perturbetur, me oportebit esurientem mori.

Affa-

Affabulatio.

Fabula significat, civitatum etiam rectores tunc maxime quæstum facere, quum patrias in seditionem induxerint.

88. Simius & Delphis.

MOris quum esset navigantibus Melitenfes catulos & Simios adducere in solamen navigationis, navigans quidam habebat secum & Simium. Quum autem pervenisset ad Sunium Atticæ promontorium, tempestatem vehementem fieri contigit. Navi autem everfa, & omnibus onatantibus, natabat & Simius. Delphis autem aliquis ipsum conspicatus, & hominem esse ratus, subiens sustinebat ad terram perferens. Ut verò in Piræo fuit Atheniensium navali, rogavit Simium, an genere esset Atheniensis? Quum autem hic diceret, & claris ibi esse parentibus, rogavit, an & Piræum nosset? Ratus autem Simius de homine eum dicere, ait, & valde amicum esse ei, & familiarem, & Delphis tanto mendacio indignatus, submergens ipsum occidit.

Affabulatio.

Fabula in viros qui veritatem ignorantes, decipiendum esse existimant.

89. *Musca.*

IN cella quadam melle effuso, Muscæ advolantes comedebant. Implicitis autem earum pedibus evolare non poterant. Quum vero suffocarentur, dicebant, Misere nos quia ob modicum cibum perimus.

Affabulatio.

Fabula significat, multis gulam multorum malorum esse causam.

90. *Mercurius & Statuarius.*

Mercurius scire volens quanti apud homines esset, ivit in Statuarii domum, transformatus in hominem, & visa statua Jovis, rogabat, quanti quis ipsam emere posset. Hic autem quum dixisset, drachma, risit; & quanti Junonis, ait, quum dixisset, pluris: visa & sua ipsius statua, ac opinatus quum nuntius sit Deorum & lucrosus, maximam de se apud homines haberi rationem, rogavit de se. Statuarius verò ait, Si hasce emeris, & hanc tibi additamentum do.

Affabulatio.

Fabula in virum gloriosum, qui nullius apud alios est pretii.

91. *Mer-*

91. *Mercurius & Tiresias.*

Mercurius volens Tiresiæ vaticinium an verum esset cognoscere, furatus ipsius boves ex rure venit ad ipsum in urbem similis factus homini, & ad ipsum divertit. Boum autem amissione renunciata Tiresiæ, ille assumpto Mercurio exivit, augurium aliquod de fure consideraturus, & huic jubet dicere sibi, quamnam avem viderit. Mercurius autem primùm vidisse Aquilam à sinistris ad dextram volantem, dixit. Hic non ad se eam attinere quum dixisset: secundò Cornicem super arbore quadam sedentem vidit, & modò superius aspicientem, modò ad terram declinatam, & vati refert. Et is, re cognita, inquit, Sed hæc Cornix jurat & Cælum & Terram, si tu velis, meas me recepturum boves.

Affabulatio.

Hoc sermone uti quispiam poterit adversus virum furacem.

92. *Canes.*

Habens quidam duos Canes, alterum venari docuit alterum domum servare. Cæterum si quando venaticus caperet aliquid, & domus custos particeps unà cum eo dapis erat: ægrè ferente autem venatico, & illi objiciente, quòd ipse quotidie laboraret, ille nihil laborans suis nutriretur laboribus, respondens ipse ait, Non me, sed herum reprehende, qui non laborare me docuit, sed labores alienos comesse.

Affa-

Affabulatio.

Fabula significat, adolescentes qui nihil sciunt, haud esse reprehendendos, quum eos parentes sic educaverint.

93. Maritus & Uxor.

HAbens quidam uxorem, quæ domesticis omnibus inimica erat, voluit scire an etiam erga paternos domesticos ita afficeretur: quapropter cum rationabili prætextu ad suum ipsam misit patrem. Paucis verò post diebus ea reversa, rogavit quomodo erga illos habuisset. Hæc verò quum dixisset: bubulci & pastores me suspectabant, ad eam ait, Sed ô uxor, si eos odisti, qui manè greges agunt, serò autem revertuntur, quid sperare oportet in iis quibuscum toto conversaris die?

Affabulatio.

Fabula significat, sic sæpe ex parvis magna, & ex minutis incerta cognosci.

94. Hædus & Lupus.

HOædus derelictus à grege persequente Lupo, conversus ad eum dixit, ô Lupe, quoniam credo me tuum cibum futurum, ne injucundè moriar, cane tibia primùm ut saltem. Lupo autem canente tibia, atque Hædo saltante, canes quum audivissent, Lupum persequuti sunt: hic conversus Hædo, inquit, Merito hæc mihi fiunt: oportebat enim me, coquus quum sim sibi cinem non agere.

F

Affa.

Affabulatio.

Fabula significat, qui ea, quibus natura apti sunt, negligunt, quæ verò aliorum sunt exercere conantur, in infortunia incidere.

95. Cancer & Vulpes.

Cancer è mari quum ascendisset in loco quodam pascebatur. Vulpes verò esuriens, ut conspexit, accessit, ac eum rapuit. Ille devorandus ait, sed ego iusta patior, qui marinus quum sim, terrestris esse volui.

Affabulatio.

Fabula significat, homines etiam, qui propriis derelictis exercitiis, ea quæ nihil conveniunt aggrediuntur, meritò infortunatos esse.

96. Citharædus.

Citharædus rudis in domo calce incrustata, ut solebat canens, & contrà resonante in se voce, peribat valde canorus esse, itaq; ob id elatus cogitavit etiam theatro sese committere oportere. Profectus verò ad se ostendendum, quum male admodum caneret, lapidibus ipsum explosum abegerunt.

Affabulatio.

Fabula significat, sic ex rhetoribus quosdam, qui in scho

lis videntur esse aliqui, quum ad res publicas se conferunt, nullius pretii esse.

97. Fures.

Fures in domum quandam ingressi, nihil invenerunt, nisi gallum, arque hoc capto abierunt. Hic ab eis occidendus rogabat, ut se dimitterent, dicens, utilem esse hominibus, ut qui noctu eos ad opera excitet. Hi verò dixerunt, Sed propter hoc te tanto magis occidimus: illos enim excitando, furari nos non finis.

Affabulatio.

Fabula significat, ea maximè pravis esse adversa, quæ bonis sunt beneficia.

98. Cornix & Corvus.

Cornix corvo invidens, quod is per auguria hominibus vaticinaretur, ob idque crederetur uti futura prædicens, conspicata viatores quosdam prætereuntes ivit super arborem quandam stansque valde crocitavit. Illis verò ad vocem conversis, & stupefactis, re cognita quidam inquit, Abeamus heus vos, Cornix enim est quæ crocitavit, & augurium non habet.

Affabulatio.

Fabula significat, eodem modo & homines cum præstantioribus certantes, præterquam quod non ad æqua perveniunt, risu quoque dignos esse.

99. *Cornix & Canis.*

Cornix Minervæ sacrificans, canem invitavit ad epulas. ille verò ad eam dixit, Quid frustra sacrificia absumis? Dea enim adeò te odit, ut ex peculiariibus quoque tibi auguriis fidem sustulerit. Cui Cornix, Ob id magis ei sacrifico, ut reconcilietur mihi.

Affabulatio.

Fabula significat, plerosque ob lucrum non vereri inimicos beneficiis prosequi.

100. *Corvus & Serpens.*

Corvus cibi indigens, ut Serpentem in aprico quodam loco dormientem vidit, hunc devolando rapuit. Hic quum se vertisset, atque momordisset ipsum, Corvus moriturus dixit, Me miserum, qui tale reperi lucrum ex quo etiam pereò.

Affabulatio.

Fabula in virum qui ob thesaurorum inventionem de salute periclitatus sit.

101. *Monedula & Columba.*

Monedula in Columbario quodam Columbas videns bene nutritas, dealbavit sese, ivitque ut & ipsa, eodem cibo impertiretur. Hæ verò, donec tacebat,

bat, ratæ eam esse Columbam admiserunt. Sed quum aliquando oblita vocem emisisset, tunc ejus cognita natura, expulerunt percutiendo, eaque privata eo cibo rediit ad Monedulas rursus. Et illæ ob colorem quum ipsam non nossent, à suo cibo abegerunt, ut duorum appetens, neutro potiretur.

Affabulatio.

Fabula significat, oportere & nos nostris contentos esse, considerantes habendi cupiditatem præterquam quòd nihil juvat, auferre sæpe & quæ adsunt bona.

102. Monedula.

Monedulam quum quis cepisset, & pedem alligasset filo, suo tradidit filio. Hæc non ferendo vitium inter homines, ubi parumper libertatem nacta est, fugit, in suumque nidum se contulit. Circumvoluto verò ramis vinculo, evolare haud valens, quum moritura esset, secum loquebatur, Me miseram, quæ apud homines non ferens servitutem, incautè me vita privavi.

Affabulatio.

Fabula significat, nonnunquam quosdam, dum se à mediocribus student periculis liberare, in majora incidere.

103. Mercurius.

Jupiter Mercurio jussit, ut artificibus omnibus mendacii medicamentum misceret. Hic eo trito, & ad mensuram facto, æquabiliter singulis miscuit. Quum

verò solo relicto futore multum superesset medicamenti, totum acceptum mortarium ei miscuit. Atque hinc contigit artifices omneis mentiri, maximè verò omnium futores.

Affabulatio.

Fabula in mendaces artifices.

104. Jupiter.

Jupiter formatis hominibus, omneis illis affectus indidit, solum indere pudorem oblitus est. Quapropter non habens undenam ipsum introduceret, per anum ingredi eum iussit. Hic verò primum contradicebat, quòd indigna ferret. Vehementiùs verò eo instante ait, Sed ego sanè his ingredior pactis, si amor non ingrediatur: si ingrediatur, ipse exibo quamprimum. Ex hoc profecto evenit omnia scorta invereconda esse.

Affabulatio.

Fabula significat, captos amore inverecondos esse.

105. Jupiter.

Jupiter nuptias celebrans, omnia animalia convivio excipiebat. Sola verò testudine tardè profecta, admiratus causam tarditatis, rogavit eam, quamobrem ipsa ad convivium non accesserit. Quum hæc dixisset, Domus chara, domus optima, iratus ipsi, damnavit ut domum bajulans circumferret.

Affa-

Affabulatio.

Fabula significat, plerosque homines eligere, parcè potius apud se vivere, quàm apud alios lautè.

106. *Lupus & Ovis.*

L Upus à canibus morsus, & malè affectus, abjectus jacebat. Cibi verò indigens, visa Ove, rogabat ut potum ex præterfluente flumine sibi afferret. Si enim tu mihi, inquit, dederis potum, ego cibum mihi ipsi inveniam. Illa re cognita, ait. Sed si ego potum do tibi, tu & cibo me uteris.

Affabulatio.

Fabula in virum maleficum per simulationem insidiantem.

107. *Lepores.*

L Epores olim belligerantes cum Aquilis invocarunt in auxilium Vulpes: hæ autem dixerunt, Vobis auxiliaremur nisi sciremus, qui vos estis, & cum quibus bellamini.

Affabulatio.

Fabula significat, eos qui cum præstantioribus certant, suam salutem contemnere.

108. *Formica.*

Quæ nunc Formica, homo olim fuit. Hic agriculturæ assidue incumbens, non erat propriis laboribus contentus, sed & vicinorum fructus surripiebat. Jupiter autem indignatus huius habendi cupiditate, transmutavit eum in hoc animal, quæ Formica appellatur. Verum quum mutasset formam, non & affectum mutavit. Nam hucusque arva circumeundo aliorum labores colligit, & sibi recondit.

Affabulatio.

Fabula significat, natura pravos, etsi maxime speciem transmutaverint, mores non mutare.

109. *Vespertilio & Mustela.*

Vespertilio in terram cum cecidisset, à Mustela capta est, & quum occidenda foret, pro salute rogabat. Hac verò dicente, non posse ipsam dimittere, quòd natura volucribus omnibus inimica foret, ait, Non avem, sed murem esse: & sic dimissa est. Postremò autem quum iterum cecidisset, & ab alia capta Mustela, ne voraretur orabat. Hac autem dicente, cunctis inimicam esse muribus, se non Murem, sed Vespertilionem esse dicebat, & rursus dimissa est. Atque ita evenit, bis mutato nomine, salutem consequutam fuisse.

Affabulatio.

Fabula significat, neque nos in eisdem semper esse oportere, considerantes eos qui ad tempus mutantur, plerumque pericula effugere.

III. *Viatores.*

Viatores juxta littus quoddam iter facientes, venerunt in speculam quandam, & illic conspicati sarmenta procul natantia, navim esse magnam existimaverunt: quamobrem expectarunt tanquam appulsura ea esset. Quum verò à vento lata sarmenta propius forent, non navim amplius, sed scapham videre videbantur. Advectis autem illis, quum sarmenta esse vidissent, inter se dixerunt, Ut nos igitur frustra quod nihil est expectabamus!

Affabulatio.

Fabula significat, nonnullos homines qui ex improvviso terribiles esse videntur, quum periculum feceris, nullius esse pretii inveniri.

III. *Asinus Sylvestris.*

Asinus sylvestris Asino viso domestico in loco quodam aprico, profectus ad ipsum, beatum dicebat, & corporis bona habitudine, & cibi perceptione. Deinde verò quum vidisset eum ferentem onera, & agasonem retro sequentem, & baculis ipsum percutientem ait, Ast ego non amplius beatum te existimo. Video enim non sine magnis malis habere te foelicitatem.

Affabulatio.

Fabula significat, non esse æmulanda lucra, in quibus sunt pericula & miseria.

III. *Asini.*

112. *Asini.*

A Sini olim propterea quòd affiduè onera ferrent & fatigarentur, legatos miserunt ad Jovem, solutionem laborum petentes. Hic autem ostendere ipsis volens, id non posse fieri, ait, tunc eos liberatum iri laboribus quum mingendo fluvium fecerint. At illi eum verum dicere existimantes ex illo & nunc usque, ubi aliorum urinam viderint Asinorum, illic & ipsi circumstanto mingunt.

Affabulatio.

Fabula significat, unicuique quod fatale est incurabile esse.

113. *Asinus & Vulpes.*

A Sinus indutus pelle Leonis, vagabatur reliqua bruta perterrens. Cæterum visa Vulpe, tentavit & hanc perterrefacere. Hæc autem (casu enim ipse vocem audiverat) ad ipsum ait, Sed bene nosti, quòd ego te timuisssem, nisi rudentem audivisssem.

Affabulatio.

Fabula significat, nonnullos indoctos, qui externis aliquo esse videntur, ex sua loquacitate redargui.

114. *Asinus & Rana.*

A Sinus ligna ferens pertranfibat paludem quandam. Lapsus autem, ut decidit, nec surgere posset, lamentabatur, ac suspirabat. Ranae autem, quae erant in palude, auditis ejus suspiriis, Heustu, dixerunt, & quid faceres, si tanto hic tempore, quanto nos fuisses, quum quia ad breve tempus cecidisti, sic lamentaris?

Affabulatio.

Hoc sermone uti quispiam poterit in virum segnem, qui ob minimos quosque labores tristatur, quum ipse majoribus faciliè resistat.

115. *Asinus & Corvus.*

A Sinus ulcerato dorso in prato quodam pascebatur. Corvo autem insidente ei, & ulcus percutiente, Asinus rudebat ac saltabat. Sed Agasone procul stante ac ridente. Lupus præteriens ipsum vidit, & dixit, Miseri nos, quos si tantum viderint, persequuntur, huic autem & arrident.

Affabulatio.

Fabula significat, maleficos homines, si tantum appareant, dignosci.

116. *Asinus & Vulpes.*

Asinus & Vulpes, inita inter se societate exiverunt ad venationem, Leo verò quum occurrisset ipsis, Vulpes imminens periculum videns, profecta ad Leonem tradituram ei Asinum pollicita est, si sibi impunitatem promiserit. Qui quum dimissurum eam dixisset, illa adducto Asino in calles quosdam ut incideret, fecit, Sed Leo videns illum fugere minimè posse, primam Vulpem comprehendit, deinde sic ad Asinum versus est.

Affabulatio.

Fabula significat, eos qui sociis insidiantur, sepe & se ipsos nescios perdere.

117. *Gallina & Hirundo.*

Gallina Serpentis ovis inventis, diligenter calefacta exclusit. Hirundo autem quum eam vidisset, ait, O demens, quid hæc nutris, quæ cum excreverint, à te prima injuriam auspicabuntur?

Affabulatio.

Fabula significat, implacabilem esse pravitatem, licet afficiatur maximis beneficiis.

118. *Camelus.*

QUum primùm visa est Camelus, homines perterriti, & magnitudinem admirati fugiebant: ubi verò procedente tempore cognoverunt ipsius mansuetudinem, confisi sunt eo usque ut ad eam accederent. At intellecto paulò pòst belluæ non inesse bilem, eo contemptûs ière, ut & fræna ei imponerent, & pueris agendam traderent.

Affabulatio.

Fabula significat, terribiles res consuetudine contemptibiles fieri.

119. *Serpens.*

Serpens à multis hominibus pessundatus, Jovem postulavit. Jupiter autem ad eum dixit: sed si qui prior conculcavit pupugisses, nequaquam id facere secundus aggressus fuisset.

Affabulatio.

Fabula significat, eos qui prius invadentibus resistunt, aliis formidolosos fieri.

120. *Columba.*

Columba sici correpta, ut vidit quodam in loco poculum aquæ depictum, verum rata, atque multo
G elata

elata impetu, imprudens in tabulam offendit, ut & pennis ipsius perfractis in terram decideret, atque à quodam occurrentium caperetur.

Affabulatio.

Fabula significat, nonnullas homines ob vehementes affectus, inconsulto rati aggredientes, ingere se in perniciem.

121. Columba & Cornix.

Columba in columbario quodam nutrita, fecunditate superbiebat. Cornix verò ea audita, ait, Sed heus tu, desine hac re gloriari: nam quo plures parvulo plus mœroris accumulas.

Affabulatio.

Fabula significat, ex famulis quoque non esse infelicitiosos qui in servitute multos liberos præcipiunt.

122. Dives.

Dives duas habens filias, altera mortua, præficus conduxit: quum verò altera filia dixisset, Ut nos miseræ, ipsæ ad quas pertinet luctus, lamentari nescimus, hæ verò non necessariæ, sic vehementer plangunt: mater ait, Ne mirare filia, si hæ ita lamentantur, nam nummorum græla id agunt.

Affabulatio.

Fabula significat, nonnullos homines pecuniæ amore non vereri ex alienis calamitatibus quæstum facere.

123. Pastor.

PASTOR actis in quercetum quoddam ovibus, strata sub quereu veste, ascendit, & fructum decutiebat. Oves verò inter edandum glandes nesciæ & vestes una devorant. At quum Pastor descendisset, & quod erat factum vidit. O pessima, ait, animalia, vos cæteris vellera ad vestes præbetis, a me vero, qui vos nutrio, etiam vestem surripistis.

Affabulatio.

Fabula significat, plerosque homines ob dementiam, eos qui nihil ad se attinet beneficiis officientes, domesticos male tractare.

124. Piscator & Cerrus.

PISCATOR demisso reti in mare, retulit Cerrum: qui parvus quum esset, suppliciter rogabat ipsum, ne tunc se caperet, sed dimitteret, quod parvus esset: at quum creveret, & magnus, inquit, evalesco, me capere poteris, quoniam & majori tibi ero utilitati. Tum Piscator ait, Sed ego demens fuerim, si quod in manibus est misso lucro, licet sit parvum, expectando etiam magnum sperem.

Affabulatio.

Fabula significat, inconsideratum esse, qui spe majoris rei, quæ in manibus sunt amittat, quod parva sint.

125. Equus & Asinus.

Homo quidam habebat equum & asinum. Quum autem iter facerent in via ait Asinus Equo, Tolle à me oneris partem, si vis me esse saluum. Illo non persuaso, Asinus cecidit, atque è labore mortuus est. Ab hero autem omnibus impositis ei, & ipsa Asini pelle; conquerens Equus clamabat, Hei mihi miserrimo, quid mihi obtigit afflicto? quia enim parum oneris nolui accipere, ecce omnia gesto, & pellem.

Fabula significat, si magni cum parvis jungantur, utrosque servari in vita.

Affabulatio.

126. Homo & Satyrus.

Homo quidam cum Satyro inrita societate, unà cum eo comedebat. Hyems verò & frigus quum accessisset, homo manus suas admotas ori afflabat. Rogante autem Satyro, quam ob causam hoc faceret, ait, Manus meas calefacio propter frigus. Sed paulò post, edulio calido allato, homo admotum ori insufflabat ipsum. Rogante rursus, quare id faceret, ait, Ferculum frige facio. Suscepto sermone Satyrus, Sed ego ait, post-hac

hac renuncio tuam amicitiam: quia ex eodem ore & calidum emittis, & frigidum.

Affabulatio.

Fabula significat, fugere nos amicitias oportere, quarum anceps est affectio.

127. *Vulpes & Lignator.*

Vulpes venatores fugiens, & in deserto multa decursa via, virum Lignatorem in eo invenit, cui supplicabat ut se absconderet. A quo ei ostenso suo tugurio, ingressa delituit in angulis. Ac venatoribus profectis, & virum rogantibus, hic voce quidem negabat scire quidquam, sed manu locum ejus demonstrabat. Hi vero quum non advertissent, confestim abiere. Ut igitur vidit eos Vulpes præterisse, exivit nihil alloquuta. Illo autem ipsam accusante, quod servata à se gratias sibi non ageret, Vulpes conversa inquit, Heus tu, ego verò egissem tibi gratias, si verbis similes & manuum gestus & mores habuisses.

Affabulatio.

Fabula in eos qui verbis quidem utilia promittunt, sed contra rebus faciunt.

128. *Homo perfractor statuae.*

Homo quidam ligneum habens deum, supplicabat ut sibi beneficeret. Quum igitur hac faceret, & nihilominus in paupertate degeret, iratus elevatum ipsum

eruribus, projecit in pavementum. Illiso igitur capite, ac statim diffracto, auri quam plurimum effluxit: quod ille jam quum colligeret, exclamabat, Perversus es ut puto, & ingratus: colenti enim mihi nequaquam profuisti, verberanti autem te multa donasti bona.

Affabulatio.

Fabula significat, non profuturum te tibi, honorando primum hominem, sed verberando ipsum profuturum magis.

119. Homo & Canis.

Homo quidam parabat cœnam, accepturus amicum quendam suum & familiarem. Canis item ipsius alium invitans. Canem dicebat, O amice veni, cœna tua mecum. Is quum accessisset, lætus adstabat, magnam spectans cœnam secum loquens, Papæ, quanta mihi læticia nuper de repente oblata est: nam & nutriar, suad satietatem cœnabo, item ut nullo modo cras esuriam. Hæc secum quum diceret Canis, simulque moveret caudam, ut qui jam amico fideret, coquus ut vidit ipsum huc & illuc caudam circumagentem, arreptis ipsius cruribus, ejecit statim de fenestris. At is quum decidisset, abibat vehementer exclamans. Sed Canum quidam quum illa in via occurrisset, percontabatur, ut bellè cœnatus es, amice? Qui respondens ei dixit, Multo potu inebriatus supra satietatem, ne ipsam quidem viam qua egressus sum, novi.

Affabulatio.

Fabula significat, non oportere considerare iis qui ex alienis benefacere pollicentur.

130. *Piscator.*

Piscator piscandi rudis, acceptis tibiis ac retibus, perrexit ad mare, & stans super petram quandam, primum quidem sonabat tibiis, existimans ad vocis suavitatem pisces assilire. Ut verò multum contendens nihil proficeret, depositis tibiis, assumit rete, ac jacto in aquam, multum piscium cepit. Quibus evacuato reti, ut salientes vidit, ait, O pessimæ animantes, quum sonabam tibia, non saltabatis: quum verò cessavi, id agitis.

Affabulatio.

Fabula in eos qui præter rationem, & inopportunè aliquid agunt.

131. *Bubulcus.*

Bubulcus armentum taurorum pascens amisit vitulum, lustrandoque omnem solitudinem, indagando moram traxit, ubi autem invenire nihil potuit, precatus est Jovem, si furem qui vitulum cepit ostenderit, hædum in sacrificium oblaturum. Cæterum proficiscens in quercetum quoddam, invenit à Leone devorari vitulum. Trepidus igitur, & perterrefactus elevatis manibus suis in cælum, ait, ô domine Jupiter, promiseram tibi hædum me daturum esse, si furem invenirem: nunc taurum tibi polliceor sacrificaturum, si hujus manus effugero.

Affa-

Affabulatio.

Fabula in homines infortunatos, qui dum carent, ut inveniunt, precantur: quum invenerint, querunt effugere.

132. Corvus.

CORVUS egrotans, ait Matri, Mater, precare Deum, nec lamentare. Ea verò respondens, ait, Quis Deus, ô fili, miserebitur tui? cujus enim tu carnes non es furatus?

Affabulatio.

Fabula significat, qui in vita multos inimicos habent, eos amicum in necessitate inventuros nominem.

133. Aquila.

SUPER petram Aquila sedebat, Leporem capturâ, hanc autem quidam percussit sagitta, quæ inter ipsam ingressa est. Sed crena cum pennis ante oculos stabat: quam quum vidisset, Et hæc, inquit, mihi altera mectitia, quod propriis pennis inteream.

Affabulatio.

Fabula significat, durum esse, quum quis à suis periculum paritur.

134. *Cicada & Formica.*

HYemis tempore quum triticum maderet, Formicæ ventilabant. Cicada autem esuriens petebat ab eis cibum. Formicæ verò dixerunt ei, Cur æstate non colligebas alimentum? hæc ait, Non eram otiosa, sed canebam musicè: tum hæc ridentes dixerunt, Si æstate modulararis, hyeme salta.

Affabulatio.

Fabula significat, non oportere quenquam aliqua in re esse negligentem, ne mereat, ac periclisetur.

135. *Vermis & Vulpes.*

Qui sub coeno celabatur Vermis, super terram egressus, dicebat omnibus animalibus, Medicus sum medicaminum doctus, qualis est Pæon deorum medicus. Et quomodo, ait Vulpes, alios curans, teipsum claudum non curas?

Affabulatio.

Fabula significat, nisi præstò experientia fuerit, omne verbum inane esse.

136. *Gallina auripara.*

GAllinam quis habens, ova aurea parientem, ratus intra ipsam auri massam inesse, occisam aliis
Gallinis

Gallinis similem reperit. Hic multum sperans se inventurum divitiarum, etiam exiguis illis privatus est.

Affabulatio.

Fabula significat, oportere contentum esse presentibus & fugere insatiabilitatem.

137. Leo & Vulpes.

Leo senio confectus, quum suppeditare sibi cibum non posset, decrevit astu id facere. Itaque profectus in antrum quoddam, & devolutus simulabat egrotum. Advenientes igitur animantes visitationis gratia, comprehensas devorabat. Multis igitur ablumptis animantibus, Vulpes ea arte cognita, accessit ad ipsum, & stans extra speluncam rogabat, quomodo se haberet. Quum autem is dixisset, male, causamque rogaret, quam ob rem non ingrederetur. Vulpes ait, quia me vistigia terrent, omnia introrsum spectantia, nulla retrorsum.

Affabulatio.

Fabula significat, prudentes homines conjecturis prævisa pericula evitare.

138. Lupus & Vetula.

Lupus esuriens circuibat quærens cibum. Profectus autem ad locum quendam, audivit lugentem puerulum, eique dicentem anum, Desine plorare: sin minus hac hora tradam te Lupo. Ratus igitur Lupus serio loqui aniculam, expectabat ad multam horam. Sed

quum

quum advenisset vespera, audit rursus anum blandientem puerulo, ac dicentem. Si venerit Lupus huc, interficiemus eum, fili. His auditis Lupus abiens dicebat, In hoc tugurio aliud dicunt, aliud faciunt.

Affabulatio.

Fabula in homines, quorum facta verbis non respondent.

139. Hædus & Lupus.

Hædus super tecto quodam quum staret, viso lupo prætereunte, conviciabatur, & mordebat ipsum. sed Lupus ait, Heus tu, non tu mihi, sed locus conviciatur.

Affabulatio.

Fabula significat, plerumque & locum & tempus præbere audaciam adversus præstantiores.

140. Mulus.

Mulus hordeo pinguefactus, lasciviebat clamans ac dicens, Pater meus est equus cursor, & ego ei totus sum similis: atque aliquando quum negesse foret ei currere, ut à cursu cessavit, patris Asini statim recordatus est.

Affabulatio.

Fabula significat, etsi tempus ad gloriam promoveat aliquem, non sua tamen ipsius fortunæ obliviscat: instabilis enim est vita hac.

141. *Serpens & Agricola.*

Serpens in Agricolæ vestibulis delitescens, sustulit ejus infantem puerulum. Luctus autem parentibus fuit magnus: at pater præ mœrore accepta securi, egressum Serpentem occisurus erat. Ut verò prospexit parumper, festinans agricola ut ipsum percuteret, erravit, tantum percusso foraminis orificio. Digressio autem Serpente, agricola ratus Serpentem non ampliùs injuriæ meminisse, accepit panem & salem, apposuitque in foramine. Sed Serpens tenui sibilo ait, non erit nobis posthac fides amicitiae, quamdiu ego lapidem video, tu filii tumulum.

Affabulatio.

Fabula significat, nullum odii aut vindictæ oblivisci quamdiu videt monumentum, quo tristatus est.

142. *Tubicen.*

Tubicen exercitum congregans, ac superatus ab hostibus clamabat, Ne me temerè & frustra viri, occidite: Non enim vestrum quemquam occidi: nam præter æs hoc possideo aliud nihil, & hi ad ipsum dixere, Ob id magis morieris, qui quum nequeas ipse pugnare, omneis ad pugnam excitas.

Affabulatio.

Fabula significat, plus peccare, qui malos ac graveis principes concitant ad malè agendum.

143. *Arun.*

143. *Arundo & Oliva.*

DE tolerantia, & viribus, & quiete, Arundo & Oliva contendebant. Quum autem arundini oliva convicium faceret, utpote imbecillæ, ac facile cedenti ventis omnibus, arundo tacendo nihil loquuta est; Ac parumper præstolata, ubi acer afflavit ventus, arundo succussa, & declinata ventis, facile evasit, oliva autem quum ventis restitisset, vi diffracta est.

Affabulatio.

Fabula significat, eos qui temperi ac præstantioribus non resistunt, meliores esse iis qui cum potentioribus contendunt.

144. *Lupus & Grus.*

LUpus gutturi osse infixio, mercedem Grui se præbiturum dixit, si capite injecto os ex gutture sibi extraxerit: hæc autem eo extracto, quippe quæ procero esset collo, mercedem efflagitabat. Qui subridendo, dentesque exactendo, Sufficiat tibi, ait, illa sola merces, quòd ex ore Lupi & dentibus salvum caput & illæsum exemeris.

Affabulatio.

Fabula in viros, qui à periculo servati, bene de se meritis eam gratiam referunt.

145. Galli.

DUobus Gallis pugnantibus de Gallinis feminis alter alterum in sinu vertit, ac victus in locum obscurum profectus delitescit. Sed qui victus, in altum elevatus, statim super altera pariete, magna voce clamavit: & statim adolans Aquila, eam rapuit. At qui in tenebris delitescbat, ex illo intrepide gallinas conscendit.

Affabulatio.

Fabula significat, Durum superbis resistere, dolo autem humilibus gratulari.

146. Senex & Moer.

Senex olim incisa à se, ligni quum ferret, multam istam viam, ac ob multum laborem deposito in loco quodam opere, moerem invocabat. Sed moeris quum adesset, causamque peteret, propterea quam se vocaret, perterritus senex ait, ut meum onus attollas.

Affabulatio.

Fabula significat, omnem hominem esse vitæ studiosum, licet infortunatus sit, & mendicus.

147. *Rana.*

DUe Ranae siccata palude ubi habitabant circum-
bant, querendo ubi manerent: ne profecto in
profundum puteum, & acclivitate deorsum, visa quæ
altera consuebat, ut saltarent continuo deorsum: alte-
ra verò ait, Si & hic aruerit, quomodo poterimus as-
cendere?

Affabulatio.

Fabula significat, ne quid inconsulto fiat.

148. *Lupus & Agnus.*

Agnus in alto quum staret loco, Lupum inferius
prætereuntem viam, maledictis insectabatur, &
feram malam & crudivaram appellabat. Sed Lupus
conversus, ait ad ipsum, Non tu contumeliaris mihi,
sed, ubi stas, tute.

Affabulatio.

*Fabula ait ut qui ferant injurias ab indignis hominibus
non subleventur.*

149. *Culex & Leo.*

Culex ad Leonem accedens, ait, Neque timeo te, ne-
que fortior me es. Sin minus, quod tibi est robur?
quod laceras unguibus, & mordes dentibus, hoc & fe-

mina cum viro pugnans facit. Ego verò longe furu te fortior. Si vero vis, veniamus ad pugnam. Et quum tuba cecinisset, Culex inhæsit mordens circa nares ipsius læves genas. Leo autem propriis unguibus dilaniavit seipsum, donec indignatus est. Culex autem victo Leone quum sonuisset tuba, & epiniciu cecinisset, avolvit. Araneæ verò vinculo implicitus, quum devoraretur, lamentabatur, quòd cum maximis pugnans, à vili animali Aranea occideretur.

Affabulatio.

Fabula in eos qui prosterunt magnos, & à parvis prosteruntur.

Errata sic corrigenda.

FAB: 11. l. 10. θανάτη. l. 20. ἀλλὰ. F. 2. l. 15. ἀναδύς. l. 17. διὰ
 ῥήγιν. l. 18. μαθόν. l. 25. εἰς καιρόν. F. 8. l. 3. ἐκίνη. F. 13.
 l. 5. ἀθυμίῃ. F. 16. l. 6. εἰ -- ἅπαντες εἶποι. F. 17. l. 3. εὐθύς. F. 18.
 l. 4. ἐπαδὴ. F. 19. l. 2. ἐπικύπτει. F. 20. l. 2. ἀράμιον. ὁδόν. F. 24.
 l. 1. ἐχάστω. F. 25. l. εὐργυρί -- F. 29. l. 3. ὄψ. F. 36. l. 5. ἀκίστα-
 να. l. 9. ἀνὰ. F. 40. l. 2. ἀναπ -- F. 43. l. 2. ἐπιπληξά -- 3. προ-
 ὀν. 4. κλέπται. -- φάρα. 5. ἵπομ -- 7. παιδός. 10. μελέρα. F. 47.
 l. 4. ἐφαγε. F. 58. l. 5. ἐλαύνει. F. 59. l. 7. θρηνην. 8. ἴστον. 9. ἀ-
 θύρα. F. 62. l. 3. -- ράκλας. F. 63. l. 3. λοιπόν. F. 65. l. 3. ὁδόν.
 F. 66. l. 6. μικρί. l. 9. εἰς. F. 68. l. 8. ἄλλω. F. 78. l. 4. ἐπορεύ-
 σον. F. 82. l. 4. ἐτίρας. F. 86. l. 2. ἀν -- F. 87. l. 1. διακρίνας. F. 91.
 l. 3. ὄψ. 4. ἀπα -- 8. ἀρις -- F. 99. l. 3. συνίρε -- F. 123. κατὰθε-
 123. l. 5. ζωα. 6. λοιπός. F. 124. l. 4. ἀνυθώ. F. 127. l. 2. ἀνδρα.
 l. 11. ἔδον. 14. τίς. F. 128. ἔτιν ἐκ πινύς διήγι. F. 133. l. 5. ἰδι-
 ας. F. 140. l. 4. ἐπαδὴ.

School-

*School-Books Sold by Tho. Newbo-
rough at the Golden-Ball in
St. Paul's Church-yard.*

PHraseologia Generalis ; or, a Full,
Large and General Phrase-Book,
comprehending whatsoever is Necessa-
ry and usefull in all other Phraseologi-
call Books (hitherto here published)
and methodically digested for the more
speedy and prosperous progress of Stu-
dents in their Humanity Studies. By
William Robertſon A. M. Octavo.

Phœdri Fabulæ. Interpretatione & no-
tis illustravit Petrus Danet in usum ſere-
niſſimi Delphini. *Octavo.*

Novum Jeſu Chriſti Teſtamentum à
Sebaſtiano Caſtalione Latine reditum in
uſum Scholarum. Editio Noviſſima prio-
ribus longe immaculatio. *Octavo.*

Decerpta ex Ovidio, Tibullo, Proper-
tio & Pedone ad Scholarum Grammati-
carum uſus. Editio ſecunda. *Octavo.*

Idio-

Idiomatologia Anglo-Latina, sive Di-
ctionarium Idiomatum Anglo-Lati-
num: in quo Phrases tam Latinæ quam
Anglicanæ Linguae sibi mutuo respon-
dentes, sub certis quibusdam Capitibus
secundum Alphabeti ordinem e regione
collocantur. In usum tam Peregrino-
rum, qui Sermonem nostrum Anglica-
num, quam Nostratum, qui Latinum
Idioma exillere student. Sexta Editio.
Cui necesse istiusmodi Phrasum & I-
diomatum additio in Utraque Lingua ad
minus trium Millium. Opera, Studio,
& Industria *Gustelmi Walter, S. T. B.*
Officij

Some Improvements to the Art of
Teaching, especially in the first ground-
ing of a young Scholar in Grammar
Learning, being a short, sure and easie
way to bring a Scholar to variety and
excellency in writing Latin. Written
for the help and ease of all Ushers of
Schools; and for the use and profit of
all young Scholars. By *William Wal-
ter, B. D.* English

English Examples of the Latin Syntax; or, the Rules of the Latin Syntax Exemplify'd in English Sentences, fitted and framed to the Construction of those Rules, &c. By *William Walker*, B. D.

L. Annaei Senecae Philosophi Sententiae Morales praeipuae: Ex omnibus ejus, quae extant, operibus diligenter excerptae: in certa capita, seu locos communes summâ curâ digestae: in modum brevium orationum variis argumentis ac rationibus amplificatae; exemplis preclaris, summam prudentiam, summamque utilitatem largè in lectorem fundentibus, ex ipso Authore totidem verbis illustratae: omni Christiano homine, tam senè quàm juvene dignissimæ. Nunc primum in usum Scholarum accommodatae. Studio & Operâ *Georgii Sylvani* Pannonii Medici. Editio Secunda.